मैथिली गीतगोविन्द

कृष्ण कुमार कश्यप • शशिबाला

मैथिली गीतगोविन्द

(जयदेव-कृत 'गीतगोविन्द'क भावानुवाद)

रचनाकार:

कृष्ण कुमार कश्यप

आ

शशिबाला

भारती विकास मंच

बरहेता, लहेरिया सराय,

दरभंगा, मिथिला-846001

कॉपी राइट :
कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला

प्रकाशक :
भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय, मिथिला-846001

प्रकाशन-वर्ष : जनवरी, 2010

छायांकन : Alain Volut, Naples, Italy
कश्यप, विमल आदित्य

साजजा : यशवंत सिंह रावत

मुद्रक : सिस्टम विज़न, नई दिल्ली
systemsvision@gmail.com

मूल्य : सजिल्द : रुपैया [redacted]
अजिल्द : रुपैया [redacted]

सम्पर्क-सूत्र : 99316 65939
kashyapkk2000@yah oo.co.in
mithilauniversity@gmail.com

मुद्रण : एक हजार प्रति

MAITHILI GEETAGOVINDA (Maithili)
By Krishna Kumar Kashyap & Shashibala

आमुख

कोनो कृति जीवनक सुन्दर अभिव्यक्ति होइत अछि। एकरा लेल कतेको वर्षक गहन अनुभवक समेटि क' रचनाकार अपन मन कें तृप्ति प्रदान करैत छथि आ तेहने कृति लोकक लेल प्रेरणाक स्रोत बनैत अछि।

जेना काव्यक आत्मा रस होइछ तहिना चित्रक शरीर प्रकाश आ छायाक कतेको विधिसँ गठित होइछ। शरीर आत्माक अधिष्ठान अछि, आ तें शब्द सँ रचल काव्य-शरीर मे जे आत्मा रस बनि क' उपस्थित रहैछ, वैह आत्मा प्रकाश आ छायाक पृथक पृथक विधिसँ चित्र स्वरूप व्यक्त होइत अछि। रवीन्द्र नाथ ठाकुर बाणभट्ट-विरचित 'कादम्बरी' क 'चित्रात्मकता' रहस्य उजागर कैलनि। हर्षवर्द्धनक युग मे बाण सन महाकविक सम्बन्ध मे ई तथ्य प्रचलित छल जे हुनकर औरिजे चित्रकारक औरिजे छल। हमरा बुझनें एहने बात जयदेवक सम्बन्ध मे कहे जानक चाही। श्री कृष्ण आ राधिकाक जयदेवक मोन मे रहि गेल, घटल-टटल अनुभूति कें "मैथिली गीतगोविन्द" मे उजागर कैलनि अछि, तें ई रचना मैथिली-जगत मे मात्र महत्वपूर्ण नहि अपितु ऐतिहासिक कार्य कहल जायत, एकटा क्रान्तिकारी रचना!

राधा-कृष्णक "दिन-दिन नूतन" होइत रूप कें मन मे एकाग्र भान सँ स्थिर करैत जयदेव आदि रूप-रस-गंधक अक्षय नवीन अपन कालक माध्यम सँ करौलनि ताहि साधनाक प्रसाद सँ मैथिली गीतगोविन्द" प्रोद्भासित अछि। जयदेवक रचना मे चित्रात्मकता सहज रूप सँ रसक सङ्ग उपलब्धित अछि। औहि चित्रात्मकता कें आर बेसी फरीछ करबा लें' कृष्णप्र आ शशिबाला मिथिला-चित्रक प्रस्तुति कैलनि अछि। आह रे जयदेव, जे विद्यापति "अभिनव जयदेव" कहयला, आ आह रे "मिथिला गीतगोविन्द", जे जयदेव आ विद्यापति फेर स' मुसकियैला।

— डॉ. उमेश कुमार 'इन्दश'
व्याख्याता, हिंदी-विभाग
लि.म. आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी
दरभंगा-847105

पोथी-पाथेय

राधा-कृष्णक रासामृत सँ विह्वल-शाश्वतिक वृन्दावन मे "गीतगोविन्द"क कल्पना स्थापित कैनहार जयदेवक श्रीकृष्णक कवि-अवतार कहल गेल अछि। वैष्णव-भक्तिक पार्श्वभूमि पर राधा-कृष्णक आदि प्रणयलीलाक चित्रण जयदेव 'गीतगोविन्द' मे कैलनि अछि तिकर मूल स्रोत यद्यपि कि भागवत आदि मुदा संयोग आ विप्रलम्भ शृङ्गारक लसी-भरली मे सङ्गीत, नृत्य आ अभिनय-कलाक जेहन रङ्ग जयदेव भरलनि ओ विश्व-वाङ्मय मे सर्वथा अपूर्व अछि।

जयदेवक जीवनक विवरण कतेको साहित्यिक, ऐतिहासिक वा परम्परागत दन्त-कथा पर आधारित अछि मुदा एहि सभ क्रम मे श्रीधरदासक 'सदुक्तिकर्णामृत' जेकाँ महत्वपूर्ण मानल जाइछ। श्रीधरदास ल.सं. 36 (अनुमानतः सन 1254 ई.) मे एहि ऐतिहासिक रचना कैलनि जकर ओ स्वयंक प्रजाजनी बन्धु अलक्ष्मण सेनक कवि-पण्डित लोकनिक चर्चा-विशिष्टक वर्णन करैत तीस गोट पद्यक रचना कैलनि। जयदेव जे अंकित एकटा पद्य एना अछि —

"वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः सन्दर्भशुद्धिं गिरां
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुते।
शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन-
स्पर्धी कोऽपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविक्ष्मापतिः॥" 1

(उमापतिधर नामक कवि मात्र अपन वाणीक विस्तार करैत छथि। एकटा जयदेवे एहन कवि छथि जे वाणीक सन्दर्भ-शुद्धिकें जनैत छथि। शरण नामक कवि मात्र दुरूह कविता करब जनैत छथि। शृङ्गार-प्रधान निर्दोषी काव्य-रचनाक विषय मे आचार्य गोवर्धनक केओ प्रतिस्पर्धी नहि छथि आ कविराज धोयी त' मात्र एकटा श्रुतिधर छथि।)

मिथिलाक इतिहासकार उपेन्द्र ठाकुरक अनुसारें श्रीधरदास, कामता, मिथिला मे कर्णाटक-राजवंशक संस्थापक नान्यदेव (1096–1148 ई.) आ तिनक पुत्र गङ्गदेव (1148–1226 ई.)क प्रधानमंत्री छलह।[2] म.म. परमेश्वर झा अनुसारें, श्रीधरदास नरकवाली मूलक कायस्थ छलह।[3] एहि ऐतिहासिक साक्ष्यक पुष्टि 'अन्धराठाढ़ी प्रस्तर-अभिलेख' सँ सेहो होइछ जे अंकारपुर अनुमण्डलक अन्धराठाढ़ी ग्राम सँ प्राप्त भेल अछि। 'सदुक्तिकर्णामृत' आ श्रीधरदास सँ सम्बन्धित अभिलेख सँ ई प्रमाणित होइछ, जे जयदेवक जन्म बारहम शताब्दी मे भेल छलनि।

जयदेवक जन्म-भूमिक सम्बंध मे सेहो साहित्यकार आ इतिहासकार लोकनिक मध्य बहुत लम्बा समय से विवाद रहल अछि। एहि विवाद मे बङ्गाल, उड़ीसा आ मिथिलाक विद्वान सभ 'गीतगोविन्द'क पद-संख्या ३-१० मे उल्लिखित "किन्दुबिल्व गुप्त गाम सिन्धु सन, ताहि सिन्धु सँ चन्द्र जनमला ...", 'किन्दुबिल्व' गाम कें अपना राज्यक बतबैत छथि। उड़ीसाक विद्वानक तर्क छनि जे 'किन्दुबिल्व' पुरी जिलाक एक टा गाम अछि त' बङ्गालक विद्वान वीरभूम जिला मे एहि गाम कें सिद्ध करैत छथि। एहिना मिथिलाक विद्वानक तर्क छनि जे मधुबनी जिलान्तर्गत झंझारपुरक निकट स्थित 'केन्दुली' गाम जयदेवक जन्म-स्थान अछि। आगरा, एहि विवादक समापन मुनीन्द्रकुमार घटकक ग्रन्थ (monograph) "Jayadeva Makers of Indian Literature, Sahitya Academy, 1973" मे होइछ आ उपरोक्त पाङ्गीत जे जयदेव बङ्गालक भूमि पर बाह्मण परिवारमे उत्पन्न भेल छलाह आ ओम्हरे एहि कालजयी रचना 'गीतगोविन्द'क सृजन कैलनि। ५

साहित्यिक विवरण आ गीतगोविन्दक अन्तिम पद १२-२६ मे स्पष्ट होइछ जे जयदेव कृष्ण भक्त छलाह। हुनक पिताक नाम भोजदेव आ माताक नाम रामा देवी छलनि। अध्ययन आ कृष्ण-भक्ति मे आकण्ठ मग्न जयदेव सांसारिक माया-मोह सँ दूर, अपनाहि धुनि मे मस्त, सतत भ्रमणशील रहैत छलाह आ भिक्षाटन पर अपन जीवन यापन करैत छलाह। आश्रयक नेम जे कीनो गाछ तर राति बिता लैत छलाह मुदा अधिक दिन फेर ओहि गाछ तर नहि जाइत छलाह जे कदाचित नेर-बेर पैला सँ ओहि भूमि सँ मोह ने भ' जाय। कथा अछि जे एक गोट ब्राह्मण-दम्पतिक सन्तान नहि होइत छलनि। एक दिन ओ दम्पति जगन्नाथजीक मन्दिर मे पूजा कैलाक बाद कबुला कैलनि जे जँ हुनका लोकनि कें सन्तानक प्राप्ति होयतनि त' समय अवसर पर ओहि सन्तान कें ओ जगन्नाथजी कें अर्पित क' दिअनि। कहबी छैक, निःसन्तान दम्पतिक मनोकामना पूर्ण होयबाक समय आबैत छैन। ओहि ब्राह्मणक नाम रहैन पद्मावती। लक्ष्मी सन सुन्दरि पद्मावती माता-पिताक संरक्षणमे सङ्गीत आ शास्त्रक अध्ययन करैत वयस्क भ' गेलीह। पद्मावती जखन सयानि भेलीह त' ब्राह्मण-दम्पति निश्चय कैलनि जे कन्या जगन्नाथजी कें समर्पित क' देल जाय। विद्वान अछि जे ओही राति दुनू बेगतीकें भगवान स्वप्न मे आदेश देलथिन जे जयदेव नामक ब्राह्मण सँ विवाह कराक' ई कन्या हुनके सुपुर्द क' देल जाय। ब्राह्मण-दम्पति आ पद्मावतीक समर्पणक आगाँ जयदेवक जिद नहि टिकलनि। जगन्नाथक आदेश कें ओहो शिरोधार्य कयलनि आ एक टा

नव वैष्णव-पद्धतिक स्थापना करबा ले' जयदेव-पद्मावती दाम्पत्य-सूत्र मे बान्हि गेलाह। पद्मावती सङ्ग परिणयक बाद जयदेवक जीवन-चर्या मे भारी परिवर्तन भेल; घुमक्कड़ सन्त सद्गृहस्थक परिधाटी मे अमला। ओ 'जयदेव'(कृष्ण) आ 'पद्मावती'(लक्ष्मी)कें अपन नायक-नायिका मानि गीति-नाट्य लिखैत छलाह, राग-बद्ध करैत छलाह आ पद्मा गीतक बोल पर नृत्य करैत छलीह। अभिनयक क्रम मे काव्य-रचना बढ़ैत-बढ़ैत दशम सर्ग मे जखन आबल त' एकटा भारी घटना भेल। कृष्ण अपन कमल प्रेयसी, राधा कें मना रहल छलाह। अनुनयक चरमोत्कर्ष पर हुनका कमलाक छलनि जे —

"हमर माथ पर राखू मानिनि
शीतल चरण कमल-पद,
मनक ताप-सन्ताप शमन हो
जीवन होय निरापद!" मुदा भक्त-कवि

अपन आराध्य कें एहि दशा मे कोना देखितथि! भगवानक माथ पर राधाक चरण रखाय, ई साहस नहि जुटा सकलाह। काज रोकि देलनि। दुविधा मे मोन भरिया छलनि त' चित्त अहंकारक उदेसँ स्नान कर' चल गेला। ओम्हर, भगवान गोविन्द स्वयं जयदेवक भेष मे नहा क' आबि गेलाह, धोती कें मुरैठा जे' हुगा क' चार पर टिकलनि, पद्मावती पीढ़ी-पानि लगाक' थारी आगाँ मे देलथिन, प्रेम-पूर्वक भोजन कैलनि, तृप्त भ' आचमन कैलाक बाद जयदेवक पाण्डुलिपि मे अधसय श्लोक कें लीखि क' पुरौलनि आ असली जयदेवक अपना सँ पूर्वहि अन्तर्धान भ' गेलाह। जयदेव जखन अजङ्ग घार[६] मे स्नान क' क' ओभरन अमलाह त' अपन दोसर धोती मूड़बाबत देखलनि। माथा ठनकलनि। जखन पत्नी सँ भोजन मङ्गलथिन त' ओ अकचकाइत कहलथिन, अहाँ एखने भोजन क' क' कविता लीखि मे लागल रही, तखन फेर भोजन किएक नहीं खी? जयदेव दौड़ला अपन पाण्डुलिपि देखबा ले' त देखलनि जे अधसय श्लोक पूर्ण छलनि —"स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं, देहि पदपल्लवमुदारम्। ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनारुणो, हरतु तदुपाहितविकारम्॥"(१०-८) आब दुनू बेगती कें कुकरा मे कनेको भाङ्ठ नहि रहलनि जे कवि कें धर्म-सङ्कट सँ बचैबा ले' भेष बदलि क अयलाह, भोजन कयलनि आ लीखि क' चल गेलाह। हे नारायण, अहाँ बहुत भक्त-वत्सल छी! दुनू बेगती भाव-विभोर भ' नाच' लगलाह।

महान वैष्णव-सन्त महाप्रभु चैतन्यक जीवनलीला पर

आधारित ग्रन्थ "चैतन्यचरितामृत" (ले.-कृष्णदास कविराज) मे उल्लेख अछि जे महाप्रभु सोलहम शताब्दी मे पुरी गेलाह आ 'गीत' जगन्नाथजीक मन्दिर मे "गीतगोविन्द" क नियमित गान सुनि क'तेक प्रभावित भेलाह जे ओतहि बसि गेलाह। महाप्रभु कें बङ्गाली कवि चण्डीदास आ मैथिल - कोकिल विद्यापतिक पदावली सेहो बहुत प्रिय छलनि।[6] "बालबोधिनी" टीका मे उल्लेख अछि जे जयदेवक 'गीतगोविन्द' प्रतिहँ चैतन्यदेवक अगाध प्रेमक कारणे 'गीतगोविन्द' सहजिया वैष्णव सम्प्रदायक पूजा-विधि मे सम्मिलित भ' गेल आ एहि सम्प्रदायक अनुयायी लोकनि जयदेवकें सहजिया सम्प्रदायक आदि-गुरु मान' लगलाह।[7]

जयदेवक जीवन-कालहि मे 'गीतगोविन्द' बङ्गाल, ओड़िसा आ मिथिला मे व्यापक प्रसार पौलक। बङ्गालक राजा लक्ष्मण सेनक दरबार मे जयदेव कवि-पण्डितक सम्मानित पद भेटलनि, एहि मे निश्चित रूपें गीतगोविन्दक प्रसाद-गुण प्रभावशाली रहल होयत। लक्ष्मण सेन अपने संस्कृतानुरागी छलाह आ 'परमवैष्णव' उपाधि सँ सम्बोधित होइत छलाह।[8] कनक शिला-लेख सभ विष्णु-मन्त्र 'ओम् ओम् नमो नारायणाय' सँ प्रारम्भ होइत छल।[9] तें ई सहज अनुमेय जे लक्ष्मण सेन बङ्गाल मे गीतगोविन्दक प्रचार-प्रसारक लेल साधिकार प्रथम कयने होथताह।

बारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे महान वेदान्त-दार्शनिक आ श्रीवैष्णव सम्प्रदायक सम्पोषक-प्रचारक पुरी गेलाह आ ओतुका राजा अनन्तवर्म्मन चोड़गङ्गदेव (१०७८-११४४ ई.) कें श्रीवैष्णव सम्प्रदायक मत सँ प्रभावित कैलनि। रामानुजक प्रभाव बङ्गाल आ ओड़िसा पर समान रूपें पड़ल। रामानुज सँ प्रभावित राजा अनन्तवर्म्मन पुरी मे जगन्नाथ मन्दिरक निर्माण-कार्य शुरू करौलनि जेकर समापन हुनक पौत्र अनङ्गभीमदेव द्वारा बारहम शताब्दीक अन्तहि मे भेल।[10] जगन्नाथ मन्दिरक अभिलेख बतबैत जे छोड़गङ्गदेवक समय सँ ओहि मन्दिर मे विष्णुक सर्वोच्च रूप, जगन्नाथक पूजन हेतु आबि रहल अछि, श्री अम्बा लक्ष्मी जिनकर आद्याशक्ति छथि।[11] विद्वान लोकनिक कहब छनि जे विष्णुक एही जगन्नाथ वा जगदीश रूपक स्तुति जयदेव गीतगोविन्द मे कैलनि अछि। जगन्नाथ मन्दिर मे गीतगोविन्दक गान सम्भवतः बारहमे शताब्दी मे प्रारम्भ भेल सुदा एहि ज्ञान कें राजाक द्वारा पन्द्रहम शताब्दी मे पूजाविधिक अन्तर्गत नियमित कयल गेल। राजा प्रतापरुद्रदेवक ई आदेश ओड़िया भाषा आ लिपि मे, मन्दिरक 'जयविजय' द्वार पर अंकित अछि —— (१४५५ ई.) ——

शिला-लेखक मूल अंश —

"ज्येष्ठ भगवान (बलराम) आ गीतगोविन्दक प्रभु जगन्नाथ कें नृत्य सहित भोग लगाओल जाय। भगवानक संध्या-कालीन भोग मे लगातार शयन काल धरि नृत्य चलैत रहय। ज्येष्ठ भगवानक नर्तक-समूह, भगवान कोणेश्वरक नर्तकी-समूह आ प्राचीन तेलङ्गाना नर्तक-समूह गीतगोविन्दक अतिरिक्त अन्य कोनो गीत मे सीखल मे गाओत। ओहम्। भगवानक समक्ष अन्य कोनो नृत्य नहि हो। नृत्य-समूहक अतिरिक्त चारि गोट गायक होथि जे मात्र गीतगोविन्दक गान करथि। जे केओ गीतगोविन्दक गान मे निपुण नहि होथि ओ समूह-गान मे भाग लेथि। हिनका लोकनिकें कोनो अन्य गीत नहि सीखक चाही। मन्दिरक कोनो अधिकारी वा कर्मचारी जनैत-बूझैत जें कोनो अन्य गीत वा नृत्यक अनुमति देथित' ओ अपराधी होयताह।"[12]

तेरहम शताब्दी बीतैत-बीतैत गीतगोविन्द पश्चिमी भारत मे पसरि गेल छल। अणहिल्लपत्तन (गुजरात) क महाराज सारङ्गदेव वाघेलाक एक गोट शिला-लेख (१२७५ ई.) गीतगोविन्दक दशावतार (१-१६) सँ प्रारम्भ होइछ। ओहि लेख द्वारा, पाटननगरक त्रिवेणी पर, कृष्णक मन्दिर पर होमयज्ञ खर्चक मद मे जमायली हेतु एकटा टैक्सक आदेश छल।[13] चौदहम शताब्दक रचना 'साहित्यदर्पण' क दशम परिच्छेद मे रचनाकार विश्वनाथ गीतगोविन्दक एकटा पद (३-२१) उदाहरण-स्वरूप रखलनि। नेपाल मे गीतगोविन्दक पसार सम्भवतः कर्णाट-शासक लोकनि द्वारा तेरहमे शताब्दी मे भेल आ प्रतिलिपि तैयार करबाक प्रचलन शुरू भेल, ताड़-पत्र पर नेवारी लिपि मे गीतगोविन्दक दू गोट प्रतिलिपि भिन्न-भिन्न कालक पाण्डुलि गेल अछि — नेपाली सं. ४६० (१३४०ई.) आ नेपाली सं. ६१६ (१४०६ ई.)।[14]

'गीतगोविन्द' पर विस्तृत साहित्यिक टीका 'रसिकप्रिया' क रचना मेवाड़क शासक कुम्भकर्ण (१४३३-'६० ई.) कैलनि। एहि पोथी सँ भावार्थक लेल हमहूँ सहायता लेलहुँ अछि।

'गीतगोविन्द' काव्य पर आधारित एकटा विलक्षण चित्रावली, जेकर प्रकाशन राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली पहिल बेर 'Kangra

Paintings of the Gita Govinda' नाम सँ कैलक। एहि संग्रहक चित्रकार, ओकर संग्रहक आ चित्रक रचना-काल के लै'क' भारी विवाद रहल अछि। एहि संग्रहक पहिल चित्रक पुष्पिका पर एक गोट श्लोक अंकित अछि —

"मुनिवसुगिरिसोमे सम्मिते विक्रमाब्दे
गुणिगणितगरिष्ठा मालिनी वृत्त जिता,
व्यरचयद् अजमल्ला माणकूचित्रकर्णी
लालिलालीपिचित्रम् गीतगोविन्दचित्रम्।"

एहि श्लोकक व्याख्या मे प्रख्यात कलाविद W.G. Archer समेत J.C. Wright आ प्रोफेसर A.L. Basham (School of Oriental and African Studies, London Univ.) लगला आ श्लोकक पहिल पंक्तिक अर्थ एना निकाललनि — मुनि (सप्तर्षि=७), वसु=८, गिरि=८, सोम (चन्द्रमा=१), सम्मिते विक्रमाब्दे = जोड़ि क' विक्रम सम्वत्, ताहि रूपें ८८६१ वि.स.; आब एहि संख्या कें उनटाउ, अर्थात १८८६ वि.स., ताहि मे स' घटाउ ४६ वर्ष, तखन भेल १८४० विक्रम सम्वत् आ सन् १७३० ईस्वी। रचनाक एहि काल-निर्णय पर तँ विद्वान लोकनि सहमत होइत छथि मुदा श्लोकक दोसर पाँति मे 'मालिनी' आ तेसर पाँति मे 'माणकूचित्रकर्णी' पर एखन धरि विवाद चलैत अछि। एहि विवादक मूल्य विषय ई अछि जे माणकू पुरुष छल वा स्त्री? मालिनी छन्दक नाम अछि आथवा चित्रक संग्रहकर्ता वा दिग्दर्शन-शैली? विवाद तखन आओर जनगर भ' जाइछ जखन 'गीतगोविन्द' पर आधारित चित्रक एकटा आओर संग्रह लाहौर म्यूजियम (पाकिस्तान) मे भेटइछ। एहि चित्रावलीकें एन. सी. मेहता 'गीतगोविन्द' क 'वसंतश्री सिरीज', रचना-काल १५३० ई. कहि क' १५३० ई. मे The Illustrated Weekly of India मे लिखललनि। विवाद जेहन हो, लोरिका शैली मे माणकू चित्रकारक रचनाक मूल 'गीतगोविन्द' अद्वितीय अछि।

आउ धरी 'गीतगोविन्द' क अनुवाद आ टीका-समीक्षा कोन-कोन भारतीय भाषा मे भेल तेकर अद्यतन सूचना एहि लेख मे सम्भव नहि अछि। भारत सँ बाहरक विश्व कें 'गीतगोविन्द' सँ परिचित करैत मे Sir William Jones क रचना बहुत प्रभावकारी रहल। William क रचना Journal of Asiatick Researches, Calcutta, 1792 मे प्रकाशित भेल आ ओहीं मे दबायल रहल मुदा एहि सँ अंग्रेजी-पाठक कें 'गीतगोविन्द' क पहिल परिचय भेटल। William क अनुवाद पढ़लाक बाद Friedrich Rückert,

जर्मन कवि, १८०५ ई. मे गीतगोविन्दक पद्यानुवाद प्रारम्भ कैलनि। जखन C. Lassen संस्कृत पाठ सहित लैटीन भाषा मे एकर अनुवाद Bonn मे १८३६ ई. मे प्रकाशित कैलनि तखन ओहि आधार पर Rückert अपन रचना कें फेर सँ सुधरैलनि। William Jones क रचनाक आधार पर F.H. von Dalberg सेहो जर्मन भाषा मे गीतगोविन्दक अनुवाद कैलनि। विश्व-साहित्यक एहि अनुपम कृतिक अनुवाद आओर यूरोपियन भाषा मे भेल अछि मुदा हमरा दू टा अनुवाद केवल नीक लागल — एक त सर १८६५ मे लन्दन मे प्रकाशित Edwin Arnold क The Indian Song of Songs आ दोसर, अमेरिकी कवियत्री Barbara Stoler Miller क The Gita Govinda of Jayadeva (मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन) अछि। अनुवाद, मैथिली मे गीतगोविन्दक कोनो अनुवादक विषय मे हमरा नहि बूझल अछि।

गीतगोविन्द, नेपाल सहित मिथिला मे, बङ्गाल आ उड़ीसाक संस्कृति विस्तार भेल आ अनेकों प्रकार सँ मिथिलाक जन-जीवन कें प्रभावित कैलक। एहि बातक कोनो ऐतिहासिक प्रमाण नहि भेटैछ जे जयदेव कोन निश्चित कालखंडि मे गीतगोविन्दक रचना कैलनि मुदा एहन तात्विक रचना पराधीन मानसिकता आ दरबारी ताम-झाम क बीच जीवयवला व्यक्ति नहि क' सकैत अछि। तैं, हम अनुमान करैत छी जे गीतगोविन्दक प्रकाशनक बाद लक्ष्मण सेन(११७८-१२०६) हुनका अपन दरबार मे कवि-पौहिनक आसन प्रदान करबाक हेतुन।

जाहि समय मे जयदेव लक्ष्मण सेनक दरबार मे छलाह, ताहि समय मे "सदुक्तिकर्णामृत" क रचनाकार श्रीधरदास मिथिलाक शासक नरसिंह देव (११४६-११८६ ई.) क प्रधानमन्त्री छलाह। मिथिला आ बङ्गाल, दुनूक शासक कर्णाटकक मुसलमान छलाह आ प्रायः कनि मे समयक आगि-पाछाँ उत्तर भारतक भू-भाग मे सत्ताधीश भेल छलाह, ताहि सभ कारणे दुनू राजपरिवारक मध्य अपनैतिक व्यवहार छल। यद्यपि कि मिथिलाक इतिहास मे दुनू शासकक मध्य विवाद आ युद्धक किछु घटनाक उल्लेख अवश्य भेल मुदा निकर कारण किछु आओर छल। दुनू शासक, प्रारम्भ मे मीलि क', सम्पूर्ण गौड़देश (बङ्गाल) पर आधिपत्य कर' चाहैत छलाह मुदाबाद मे ओहि योजना मे कतहु विशेष महत्वाकाङ्क्षा बुझिजा भेलाक कारणे घट-पट भेल छल।[15] सामान्यतः दुनू दरबारक मध्य राजनीतिक आ सांस्कृतिक मामला मे बढ़िया मेल-जोल छल। मिथिला मे लक्ष्मण संवतक चलन सेहो एही मेलजोलक परिणाम छल। तहिना श्रीधरदास जे 'सदुक्तिकर्णामृत' मे

लक्ष्मण सेनक प्रशस्तिक सङ्ग हुनक दरबारी कवि-पण्डित जैकनिक चातुर्यक वर्णन कैलनि तेकर अर्थ ई नहि अछि जे ओ लक्ष्मण सेनक सेवक छलाह। श्रीधरदास शङ्करदेव सँ पूर्व हुनक पितामह मन्त्री छलाह —

"श्रीमन्नान्यपतिर्जैत्र गुणरत्नमहार्णवः
यत्कीर्त्या जनितो विश्वे द्वितीय क्षीरसागरः ।
मन्त्रिणा तस्य नान्यस्य नवशङ्कजभानुना
तेनायं कारितो देव। श्रीधरः श्रीधरेण च ॥"

उपर्युक्त श्लोक भंसकारपुर अनुमण्डल (मधुबनी) क अन्धराठाढ़ी गाँव मे श्रीधरदास द्वारा बनबाओल एक गोट विष्णु-मन्दिरक पीठिका मे अंकित छल। एहि साक्ष्य कें इतिहासकार 'अन्धराठाढ़ी-शिलालेख' नाम सँ जनैत छथि।[16] उपलब्ध साक्ष्यक मीमांसक, नान्यदेव आ शङ्कदेव — दुनूक सत्ता-काल जँ १०५६ ई. सँ ११२८ ई. धरि, नब्बे वर्षक छल, आ श्रीधरदास दुनू राजाक मन्त्री छलाह त' कोना सम्भव छल जे ओ लक्ष्मण सेनक सेवा मे रहल होथिन्ह? एहि सँ सिद्ध होइछ जे श्रीधरदास लक्ष्मण सेनक सौजन्य मे हुनक दरबारी कवि-पण्डितक स्वयं राजाक प्रशस्तिगीत 'सदुक्तिकर्णामृत'क रचना मिथिला मे कैलनि। ग्रन्थ मे जयदेवक उपेक्षित प्रशंसा आ विष्णु-मन्दिरक निर्माण सँ स्पष्ट होइछ जे मिथिला मे प्रारम्भिके काल सँ गीतगोविन्द प्रसिद्ध भेल होयत। जहिना जयदेवक संरक्षक-प्रशंसक लक्ष्मण सेन 'परमवैष्णव'क उपाधि धारण करैत छलाह[17], तहिना नान्यदेव सेहो 'धर्माधारभूपति, राजनारायण, मोहनमुरारी' आदि उपाधि धारण करैत छलाह।[18] हुनक सभ पुत्र-पौत्रादि, अशिला सभ उत्तराधिकारी परम विद्वान, संस्कृतानुरागी आ कला-मर्मज्ञ छलाह। सँ, गीतगोविन्द सामाजिक-धार्मिक जीवन मे ओहिना घोरा गेल होयत जेना जल मे मिसरी घोरा जाइत अछि। जाहिक एकटा उदाहरण सँ हम बात बेसी परीक्षा भ' पाओत।

मिथिलाक पहिल हिन्दू राजा नान्यदेवक सङ्ग कर्णाटक सँ विशाल जन-समुदाय मिथिला आयल आ राज्य-स्थापनाक बाद स्थानीय समाज मे 'कर्ण-कायस्थ' नाम सँ सङ्गठित भेल। म.म. परमेश्वर झा लिखलनि जे नान्यदेव चौदह हजार सैन्यबलक सङ्ग मिथिलाक सभा पर (नेपाल समेत) आसीन भेलाह।[19] सुदूर दक्षिणक द्रविड़ सभ्यता सँ विस्थापित भेल कायस्थ-समुदाय मिथिलाक माटि-पानि कें अपन सौजन्य सँ नमन-अङ्गीकार कैलनि मुदा हुनका लेकनि कें सामाजिक-धार्मिक कृत्यक निर्वाह नवीन परिवेशमे स्वभावतः कठिन छलनि। एतबला, नान्यदेव सँ लै शङ्कदेव धरि कैक बेर

विवाहादि पूजा-पाठक नियम बनल आ सुधार होइत रहल। बहु-परम्परानुसारें, कर्ण-कायस्थ लोकनिक समस्त सामाजिक आ धार्मिक संस्कार रामसिंहदेव (१२२५-१२८५ ई.) संहिता-बहु कयलनि। इतिहासकार उपेन्द्र ठाकुर अनुसारें, रामसिंहदेवक सत्ता-काल राजनीतिक सँ बेशी बौद्धिक उत्कर्षक लेल जानल जाइत अछि जेकर प्रतिफलन अमर साहित्यिक सृजन आ दार्शनिक सिद्धि मे भेल। स्वयं एकटा धर्मनिष्ठ शासक आ विशिष्ट प्रतिभा-सम्पन्न लेखक, ओ धार्मिक साहित्यक कतेको शास्त्रक प्रणयन कयलनि। ओ तेहन गिनल-चुनल विद्वान-राजा छलाह जिनकार सत्तेँ धार्मिक साहित्यक परवर्ती अधिकारी-लेखक उदाहरण स्वरूप रहैत छथि। हुनकर सत्ता-काल शङ्कला रूपें प्रशासनिक, धार्मिक आ सामाजिक क्षेत्र मे कतेको मौलिक सुधारक साक्षी बनल। ओ हिन्दू लोकनिक सामाजिक आ धार्मिक रीतिक अनुपालन करबाबे 'दिशानिर्देशक नियमावलि' बनबौलनि। एहि नियमावलिक अनुपालन सँ सम्बंधित विभिन्न प्रकार शङ्का-समाधान हेतु ग्राम-ग्राम एकटा अधिकारीक नियुक्ति कयल गेल।[20]

रामसिंहदेव द्वारा निर्धारित विवाह-पद्धति, कर्ण-कायस्थ समाज मे अद्यावधि प्रायः अविच्छिन्न अछि। अधिकांश विधि-कर्मा आ तात्त्विक सिद्धान्त पर आधारित अछि। विवाह मे, कन्या-पक्ष मे, कोबर-घरक भीत पर कोबर, कमलदह, धरि, बाँस आदिपनक अतिरिक्त नवना बोथिनि आ गीतगोविन्दीय दशावतारक लिखिया करब अनिवार्य अछि। तहिना वर-पक्ष पाँच गोट कागज पर दु टा कोबर आ एक-एक टा कमलदह, बाँस तथा दशावतारक चित्र लिखबाबैत छथि। अरिपनबला चारु कागज मे विशेष विधिसँ सिन्दूरक पुड़िया बनाओल जाइत अछि जेकर उपयोग पृथक-पृथक विधि मे होइछ आ दशावतारक चित्र मे कनिआक लेल 'आभूषण-ल' भेल जाइत अछि। किछु दिन पूर्व धरि कोबर-घरक भीत मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण छल गीतगोविन्दक 'दशावतार'। एहि विवरण सँ स्पष्ट होइछ जे गीतगोविन्द मिथिलाक समाज मे अद्यावधि अनेक प्रभावकारी अछि।

मिथिला मे गीतगोविन्दक महत्त्व कें प्रदर्शित करबाबला एकटा आओर महत्वपूर्ण साक्ष्य अछि स्वयं विद्यापतिक 'अभिनव जयदेव' उपाधि। राजा शिवसिंह श्रावण शुक्ल सप्तमी, दिन बृहस्पति ल.सं.२६३, तदनुसारें सन १४१२ ई., विद्यापतिकें बिस्फी गामक दानपत्र देलनि। ओहि दानपत्र मे बिस्फी गामक समस्त जनता आ कृषक कें आदेश दैत जनाओल गेल अछि[21] महान पण्डित श्री विद्यापति ठक्कुर, जे अभिनव जयदेव सन यशस्वी छथि, तिनकी जरैल परगना अन्तर्गत बिस्फी गाम देल जाइत अछि।[22]

गीतगोविन्दक 'मधुरकोमलकान्तपदावली' (१-३) शब्द चयन-पद्धति विद्यापतिक रचना मे मैथिलीक पाक सँ आओर मीठ भेल मुदा कतेको पद मे विद्यापति जयदेवक भाव कें ठामक-ठाम दुहिरेने छथि-

" लोचन अंजन बुझल बड़ भेद
रजनि उजागर गरुअ निवेद। — विद्यापति

" 'रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिवेशम्।"
— गीतगोविन्द ८/२

" ततह लाह हरि करइ ने लाभ
रजनि गमओसह जनिके साध।" — विद्यापति

" हरि हरि याहि माधव / याहि केशव / मा वद कैतववादम्।
तामनुसर सरसीरुह लोचन / या तव हरति विषादम्॥"
— गी. गो., क्लेशहरि, ८/२

गीतगोविन्दक पद सेना ने झमकि कें 'मिथिला पर बरसल जे मैथिल मानसक माटि त' सराबोर भेले, विद्यापतिक सहु-सहु समस्त लौकिक गीतक शृङ्खला — हीरो, चैतावर, मारुस, झूमरा, बारहमासा, बटगमनी — राधा-कृष्णक प्रेम-रस सँ आप्लावित होइत रहल अछि। दुर्भाग्यवश आजुक पंडितक लेल जयदेव आ 'अभिनव जयदेव' दुनू अनदिना भ' गेल रहथि। संयोग नीक अछि जे मिथिलाक विरल-प्रसिद्ध चित्रकला जयदेव आ विद्यापति कें सदैव जोड़ने रहैछ।

यही रचनाकार द्वयक कार्मिक यात्रा मे गोविन्द झाक पाबैत अपन-अपन पिता सँ भेटल। कवयपक पिता इन्द्र नारायण लाल आ शशिकाक पिता श्री उग्र नारायण लाल। इन्द्र नारायण अपन मित्र लोकनिक सहयोग सँ ग्राम मे 'श्री महाकाली पुस्तकालय' क स्थापना सन १९४० ई. मे कैलनि। यही पुस्तकालयक कीक तरहक शैक्षिक काज छल। अपन ग्राम (करहेता) क एहि पुस्तकालय अपनी ग्रामक हित मे बौद्धिक-सांस्कृतिक संजीवनी बूटी जेकाँ कएलक। इन्द्र नारायण लिखैत छलाह। सन १९४९-५० ई. मे एकटा लघु-उपन्यास 'लाल भौजी' प्रकाशित कयलनि। अपन कीनो पुस्तक त' प्रकाशित नहि भ' पौलनि मुदा उग्र नारायण जीक सहयोग सँ एकटा हस्तलिखित पत्रिका 'कली-कलम' कें शुरू कैलनि मे १९६० क दशक धरि अबैत-जबैत खूब झमटगर भ' गेल छलनि। ई पत्रिका तत्कालीन युवा-वर्ग मे लिखबा-पढ़बाक खूब अधिक अभिरुचि जगौलक। कदाचित ई पत्रिका शुरू-शुरू मे मासे-मास निकलैत

छल जे कहियो काल जाक' "होलिकाङ्क" क रूप मे वार्षिक भ गेल। एकरा लिखि चुनि, उग्र नारायण जी स्वयं घोरक बहुत अङ्क कें जगाक' रखने छथि। ओहि 'होलिकाङ्क' मे विविध साहित्यिक विधाक लेख आ कविता त' रहिते छल, चारि-पाँच पृष्ठ मे इन्द्र नारायण जीक पद पर आधारित हलधर वासी राजेन्द्र जीक चित्र ओहि सभ अङ्कक विशेष आकर्षण सेहो छल। फगुआक समस्त दिन नव अङ्कक विमोचन आयोजन होइत छल आ तेकर बाद लोक उग्र नारायण जी सँ माँगि क' ओहि एसकरुआ अङ्कक रसास्वादन करैत छलाह। सन १९६२ ई. क होलिकाङ्क स्वयंहु ओहिक सेहन मे ओहिना भरलकि छल अछि। ओहि अङ्कक पाँच-छ पृष्ठ मे राजेन्द्र जीक चित्र बनल छल आ चित्रक नीचाँ मे विलक्षण अक्षर मे 'इन्द्र' क पद जे मोन मे कतहु बसि गेल, मात्र दिनक लेल —

' प्रीतम कें अछि नारि नवेलि जे केलि कलायुत रति गर्वीलक।
बोल अमोल सुना बिरमा पुनि भोर भगाय शना सिहियौलक॥
प्राप्त छी कवि 'इन्द्र' कहु मन-मोहिनि कें मन कें भरमौलक।
कें अछि सौतिनि बाजु कहाँ जे अहाँ कें शरीर अधीर बनौलक॥"

राजेन्द्र कृष्ण छलाह रङ्ग-अबीर सँ खेलल, आँखि लोर सँ भरल, मधु-लगल, घुरमुर धैने ठाढ़, एकटा पयर चौकठिक भीतर आ एकटा बाहर, राधा सँ मेघा लागल छथि, कृष्ण सँ प्रेम करैत, स्वयं छल ओहि चित्रकुशल। हमरो मोन मे भेल, स्वयं किछु बनिबहुँ, हस्तलिखित पुस्तक रचबाक चस्का हमरा 'होलिकाङ्क' हि सँ लागल। एत' म' चित्र बनिबाय लागल। चित्रक सहि बनिबाक मे गोविन्द बाबूसँ अरुचि नहि भेलाह।

हमरा समहुक एकटा बच्चा छलाह, भुवनेश्वर लाल। जो वैशाल छलाह। पौराणिक आ वेद आदिक अथाह भण्डार छलनि हुनका लग आ सहजहि अपन जीवनक भोगल सुख-दुखक फिहनीत' छलनिमे। दादिओ तेहने विदुषी आ चिंतनि छलीह। बाबा लग हम बेसी काल रही आ हुनका सँ बहुत किछु सिखलहुँ। एक दिन बाबा बतौलनि, जे जेकाँ दोसरक दुख बुझब से अछि वैशाल, आ जे दोसरक दुख दूर करी वेह गोविन्दक सखा आ हुनका परिवार अछि। बाबाक ई कथन मन्त्र जेकाँ जीवन-यात्रा मे अटूट पथेय बनल रहल मुदा गोविन्दक द्वारि धरि जामवला बाट देखौलनि उग्र नारायण जी। हुनका ग्रामक सभ छोट पेघ लोक 'लाल भाइ' कहैत छनि। लालभाइ पहिने पटना मे काज करैत छलाह। ताहि दिनुक लोकक हालतिबड़ खराब छल। समान सभ त्रस्त छल, लोक लग पाइबड़ कम। सरकारी नौकरीक अलावा काजक बेसी क्षेत्र नहि।

Photo: Alan Vidal, Naples, Italy

गामे-गाम उपास - निराहक हाल। जाहि औनिहारक दशा त' दयनीय छल मुदा ओ सभ कमी-पुरुख दुनू मीलि क' धम करबा लै' स्वतन्त्र छलाह, आ' कैनहुना गुजर क' लैत छलाह ; हुनका लोकनि कें पेटक दुख कम छलनि, तखन पेट भरक अनाज आओर सभ चीजक दुखे-दुख छलनि। मंत्र (?) कहुनाकला गरीब लोकक दशा बेसी खराब छल, कारण जे हुनका लोकनिक आधा जन-संख्या, स्त्री-वर्ग, अर्थोपार्जनक कोनो काज करबा लै' स्वतन्त्र नहि छलीह। कतेको परिवार मे सँभक - सँभ उपास होइत छल, करसी जेकाँ पेट-पाँजर बैसल, सूखाल, पपड़ी भेल ठोर, विषण्ण मुह-माथ। चिल्हका समेत चिल्हकउरे अहुरिआकाटि क' रहैत छलीह, तैं कोनो काज करबा लै' घर सँ बाहर हेग नहि उठा सकैत छलीह ; 'आ' काजे कोन करितथि ? ई दशा कोनो एक गामक नहि छल, गामे-गाम सैह बढ़ी। लालभाइ एकटा निदान तकलनि।

ओ जखन पटना सँ गाम आबथि त किछु टकाक माछ घास बजए सँ कीनि लाबथि आ लोक कें कहथिन जे बेसल - बेसल जीर, नोंटू, कहियो बीड़ीक सुखरा आ पता कीनि लाबथि आ किछु महिला कें कहथिन बीड़ी बनेबा लै'। लोक कहनि, ई बन्ना कें की करब ? भूख लागत त' की, और खायब ? आ कि बीड़ी पी क' भूख मेटायब ? ई समान कत' बिकायत ? के कीनत आ के बेचत ? एक बेर कैनहुना बेचब कें पूंजी खा लेब, फेर समान कत' स' आओत ? कतेको प्रयत्न आ एसकर लालभाइ। कैक बेर ओहो अपन मनेजा गमा क' बीस लैलनि। मुदा हुनकर कयलहा बेकार नहि गेलनि। सन १९८२-'८३ मे वैह विचार "भारती विकास मंच" नाम सँ संस्थागत रूप लेलक। कश्यप आ हुनक पत्नी शिला, पुत्र नारायण जी आ हुनकर बेटी शशिबाला — चारि गोटे सँ प्रारम्भ भेल ई संस्था बहुत जल्दी गाम-गमा सँ लै देश भरि आ विदेश धरि, गोविन्दक कृपा सँ अग्रसर पसरिते आ रहल अछि।

भारती विकास मंच एकटा विद्यालयक रूप मे शुरू भेल, निरक्षर, वंचित, अवैतनिक लोकक विद्यालय, सभ जातिक आ धर्मक स्त्रीक लेल सुरक्षित कला - विद्यालय। चित्र सँ आखर, आखर सँ पोथी आ पोथीहि सँ कमाइ, पढ़ाइ आ कमाइ दुनू सधै।

Photo: Alan Vidal, Naples, Italy

लुरिगह छी जा अलुरि पाइ किछु ने किछु अवश्य होयत। सभ स्त्रियग, बारि-कुमारि घर सँ निकलू, बस डेग चलिक' संस्था आउ। जिनका जरूर अछि, समूह पहीरि क' आउ जिनकर बुता फालल अछि हिंदी आउ, एत' मुल्कक साड़ी गहबल अछि, देश भरि स' माइ बहीरि क' ओरा नहि ने लोक हँसत हँसि क' कैसा की करत? ने हँसत से देत? सोचू सोचनाहर की पेट चला देत? होयतो भाइक बच्चा के कैसे दू कौड़ भात देत? तमसन कहीं लो' जेकरहु स' हेराइत छी? बहुकालत केओ पहाड़ पैन नहि देत पाकोर की करते? युग युग स कहल गेल लोकोक्ति लोक लोरि क' बाहर लोक लाबी गोविन्दक कृपा भारत भरि मे पहिल बेर लोकचित्र मे उपयोगितावाद [illegible] हाथक पंखा, टेबुल लैम्प, सोफा हाथी बनल टेबुल मेट, कुर्सी कलर टेबिल, डिजाइनदार जैकेट, फोटो फ्रेमो चिन्दामा हुनो आ तमा मिरोगिरल पर अरिपनचलता साड़ी मधुबनी लमक केओन-घरी मे घुड़ेआय लागल रूपेका समरिक' शहर स' गामक रस केलक।

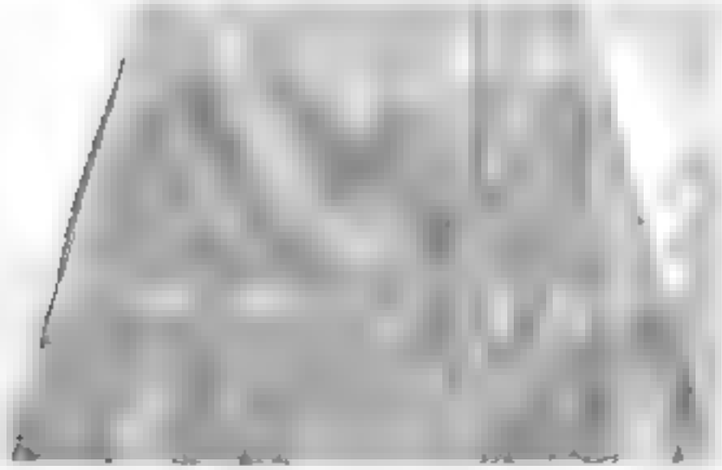

[illegible] पाइ नहि कमायल छलहि, [illegible] दम [illegible] लगलहि [illegible] पाहुने [illegible] मार [illegible] [illegible] छल। तैं, ग्राम मे जे अपना केओ कहैतिक बुमैत छलाह से सभ तिलमिला उठलाह। फफड़दलाल सभहक पोंजे पाग लसि लगलाह। भारी उड़विण्डो मचि गेल। जे कापन छलाह से तेरो भ' गेलाह। जे सही छलाह से दुदिमिया भ' गेलाह। केओ कहय [illegible] सभ के बारि दिअ' त' केओ कहय, उजाड़ि दिअ'। जीविन्द, [illegible] सभ काज मे लागल छी, जमाना खुद बदलि गेलह [illegible] सभ [illegible] [illegible] [illegible]

सन्दर्भ : पोथी-पाथेय

1. Barbara Stoler Miller, The Gitagovinda of Jayadeva ;
2. Upendra Thakur, History of Mithila,
3. परमेश्वर झा, मिथिला तत्त्व- विमर्श,
4. S.K. Chatterji, Makers of Indian Literature,
5. M.S. Randhawa, The Kangra paintings of the Gita Govinda
6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13 Barbara Stoler Miller — भाग,
15 से 21 धरि — Upendra Thakur, हीतहि ।

Mithila Art Institute, Darbhanga (Bihar)

भारती विकास मंच, बरहेताक "कला- आधारित पढ़ाइ-क्रमाइ" वला शिक्षा-पद्धतिक अवधारणाक मूल स्रोत मिथिला-कला अछि। एहि कला क पोर-पोर मे राधा- कृष्णक वास अछि। उदाहरणतः, देवोत्थान एकादशीक "हरि-दामोदर" (राधा-कृष्ण)क समायोजन राजा रामसिंहदेवक काल मे भेल जेकर स्रोत जयदेवक 'गीतगोविन्द' काल।

प्रथम सर्ग

सामोददामोदर

"मेघहि मेघ भरल नभ सगरो
झटाटोप घन कारी,
तह पर तनल तुरङ्ग तमालक
तम पसरल जाहि भारी।"
"भास्कर काल निविड़ स्कौपिया
गुज-गुज राति अन्हरिया,
हे राधे हरकुक हुँ बालक
कोमल कृष्ण मँगलिया।"
"स्वा-संग मिलले बा बरि हिनका
ते सङ्गानि पुरगाह,
हिनक हिकाक भय भल एकाकी
से बूझि राहु पुरगाह।"
नन्दक पाबि निदेश दुनू जन
बढ़ला कुञ्जक पथ पर,
लता कीर्ण बचि-बचि खुनि-खुनि तन
हमगल कामक रथ पर।
कालिन्दिक तट भाग भरोसा
मनक मेजौट समरल,
राधा-माधव प्रथम संग्राम
केलि-कलायुत पाओल।

मेघैर्मेदुरम्बरम वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः। (१/१)

वाग्देवतानी सदय कृपा कै
वास्थ कलिक मानस मे,
पुष्पित हो भावक नव-कलिका
मञ्जरि नव पल्लव मे।
कवि जयदेवक हृदय-निलय मे
वागीशक नित वासा,
हँ रचलनि जो सरस-कलामय
श्री-हरि-चरित-विलासा
पद्मावती चरण चारण जे
अनुरागी - अनुसेवी,
जिनका हित मंगल-शुभकारक
गीतगोविन्द कथा हे।

वाग्देवता चरितचित्रितचित्तसद्मा
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती।
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतम्
करोति जयदेव कवि प्रबन्धम्॥ (१/२)

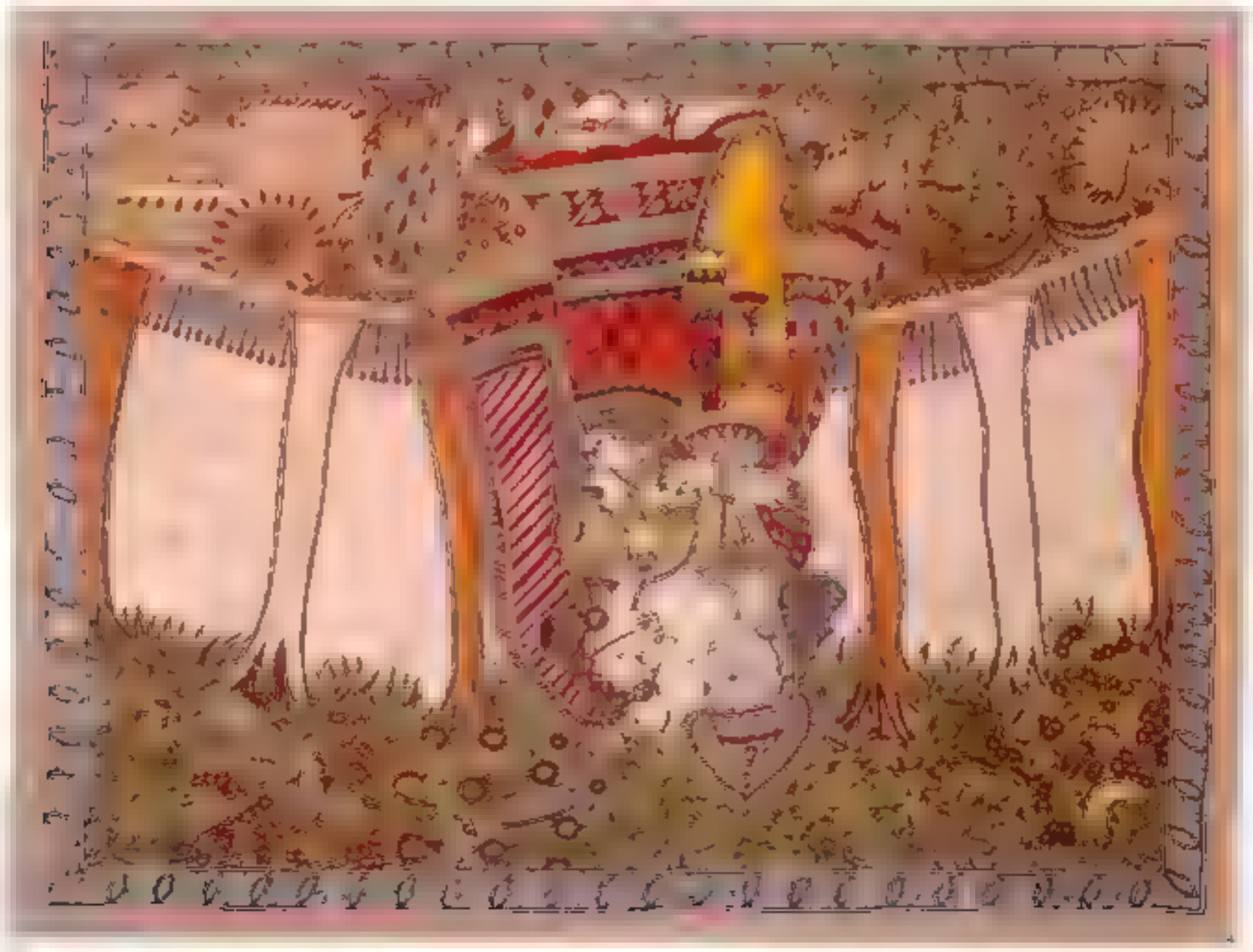

जिनका हरि-चर्चा मन-भावन
रुचय हरिक लीलावलि,
मधुर कोमल कान्त पदावलि
तिनका हित पुलकावलि ।

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम् ।
मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् ।
(१/३)

प्रबन्ध १ : दशावतारकीर्तिधवल

प्रलयकाल में जगत विश्व सकल
डूबल अगम जलनिधि में,
वेद चोरा हयग्रीव लुकायल
लीला ताहि अगाधे में ।
केशव, धौलहुँ मीन शरीर
जय जगदीश हरे ।

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम
विहितवहित्रचरित्रमखेदम ।
केशव धृतमीनशरीर
जय जगदीश हरे । (१/४)

कत कत बोझ पीठ पर अपने
धारण कैल धरणि के
लेकरहि धरणि-चिन्ह अमिट अनि
अलंकार अद्भुत से
केशव धौलहुँ कच्छप रूप
जय जगदीश हरे

क्षितिरति विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।
केशव धृतकच्छपरूप
जय जगदीश हरे (१/५)

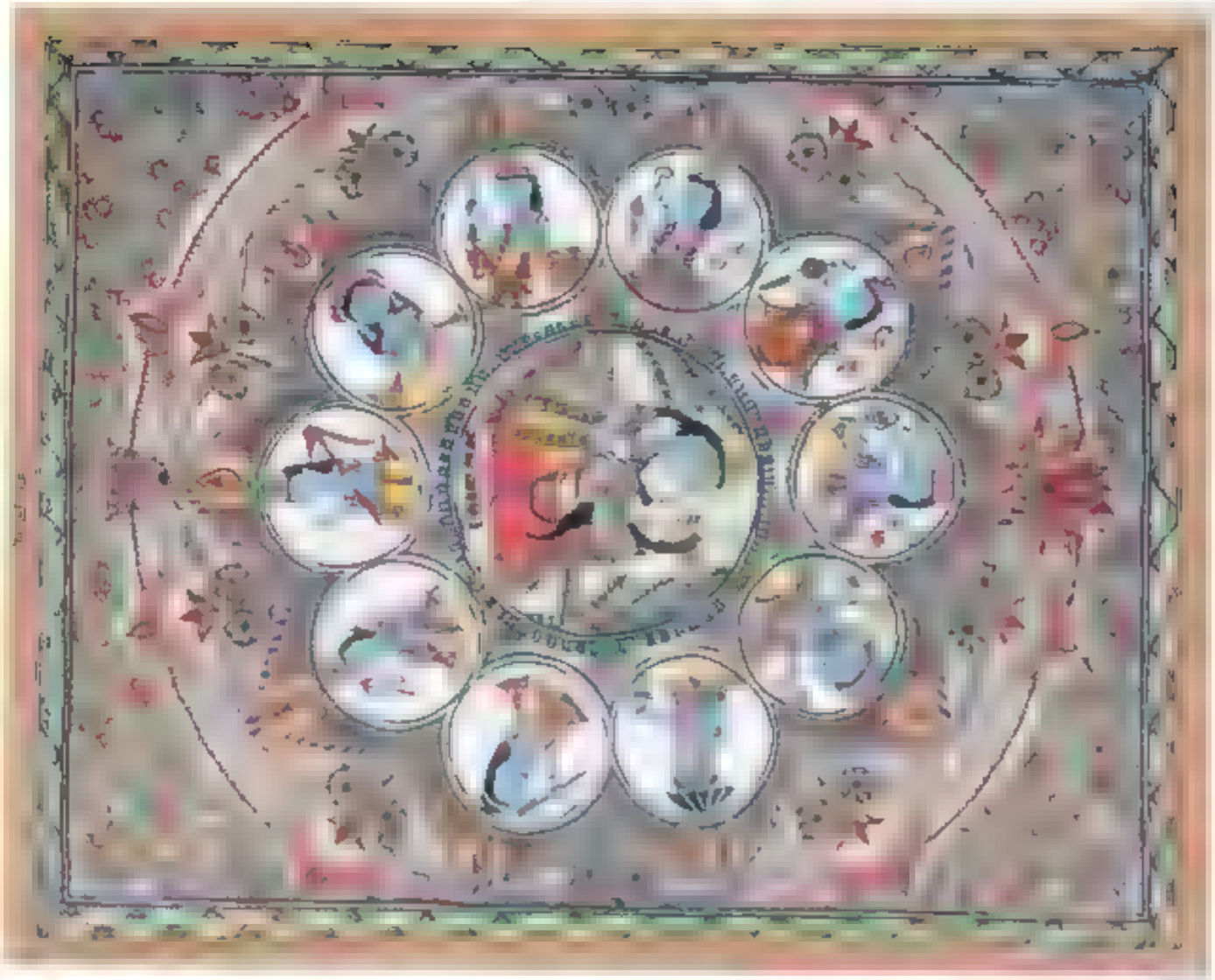

प्रलय अनन्तर, सृष्टि से पहिले
बीजरूप छलि धरणी,
हरण कैल हिरण्याक्ष नृका की
बैसे पतालक कोन्हीं
जामल हरि फामल पयोधि मे
अमृतो के मथल
सुरेश मरी मग कैल समागम
सृष्टिक चक्र मुधारल
दशन शिखर पर बैसल तमुहा
सुन्दर हलाशे भोहेना
शशि मे निहित कलंक मनोहर
तनि पालह जाहा नाहना।
केशव, धैलहुँ शूकर रूप
जय जगदीश हरे

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलंककलेव निमग्ना
केशव धृतशूकररूप
जय जगदीश हरे ! (१/६)

हरे कर कमलक नख मुक्ता सन
हिरण्यकशिपुक कोढ़ विदारल,
प्रभु-शरणागत प्रह्लादक के
स्थापित कै मान बढ़ौल।
केशव, धैलहुँ नारसिंह रूप
जय जगदीश हरे

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्।
केशव धृतनरहरिरूप
जय जगदीश हरे। (१/७)

हरिक चरण नख निर्गत जल सँ
भेल पवित्र त्रिलोक पुरातन,
तीन डेग मे नापि त्रिपुर हरि
ठकलनि बलि के मैथिल ठक सन।
केशव, धैलहुँ वामन रूप
जय जगदीश हरे।
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन
पदनखनीरजनितजनपावन
केशव धृतवामनरूप
जय जगदीश हरे ! (१/८)

क्षत्रिय रुधिरके धार बहा कै,
भक्तनके भव-भय ताप हरइ को,
राजनीति मे आयुध बल पर
तप बल-शमक नेमा धरइ को।
केशव, धरहु भृगुपति रूप
जय जगदीश हरे

क्षत्रियरुधिरमयै जगदपगतपापम्
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्।
केशव धृतभृगुपतिरूप
जय जगदीश हरे! (१/९)

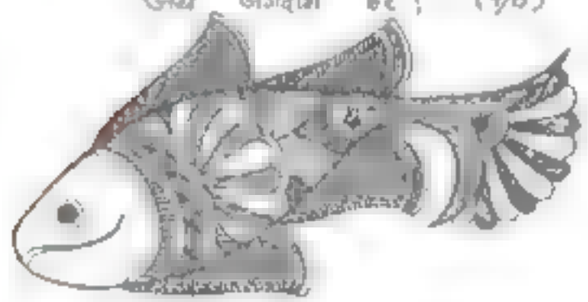

दशमुख रावण कोइ बाँधे सुत,
दशदेवन्ह पालक सैन सँवारे,
समर भूमि मे इसो दिखा के,
रावण मारक आये चढ़ीनाने
केशव धरहु रामक रूप
जय जगदीश हरे

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्।
केशव धृतरामशरीर
जय जगदीश हरे (१/१०)

शुभ हेम सन वर्ण तापि पर
नील वसन शोभित सन,
यमुना तीरी डेराय हरे मैं
कोहि देता यदुनन्दन
केशव, धरेलहुँ हलधर रूप
जय जगदीश हरे !

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम
केशव धृतहलधररूप
जय जगदीश हरे 4/११

वेद उद्धरित पशु जननभन में
दया हृदय में ऐलानि
हे जन्तुवेत शिक, धर्मह्रासिकर
वैदक निन्दा कैलानि।
केशव, धरेलहुँ बुद्ध शरीर
जय जगदीश हरे !

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्
सदयहृदय दर्शित पशुघातम्
केशव धृतबुद्धशरीर
जय जगदीश हरे (१/१२)

जयति [illegible] वेदमपि [illegible]
[illegible] कलि कुतुकम्
धूमकेतु मिव किमपि करालं
केशव धरेलहुँ कल्कि शरीर
जय जगदीश हरे

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव धृतकल्किशरीर
जय जगदीश हरे ! (१/१३)

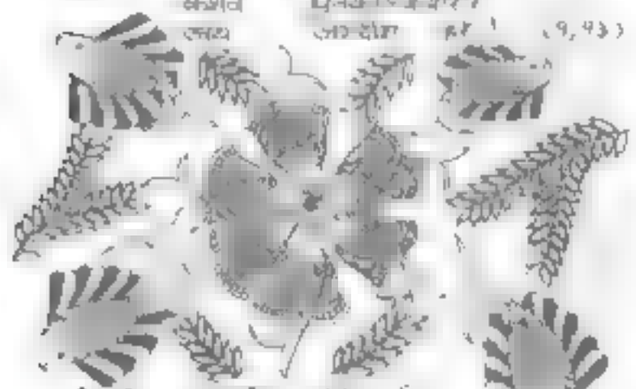

हे हरि श्रीजयदेव कवेरिव हे
सुखद शुभद सन्तु रचना
भवसागर में पार करावय
राखिऊ जनके हे शरना
केशव धरेलहुँ दशविधरूप
जय जगदीश हरे

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम
शृणु सुखद शुभदं भवसारम
केशव धृतदशविधरूप
जय जगदीश हरे (१/१४)

वेदोद्धरण जगदिश वाहन
भूगोलन उद्धरण,
श्रीहरि हरिणाकारेषु विहरण
बाले दशन कल भल कारण ।

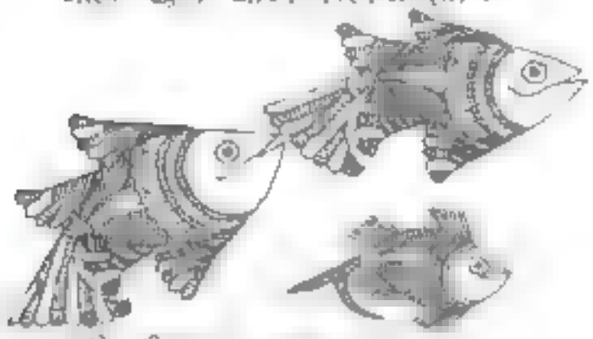

क्षत्रे विनाशकर शस्त्र धारक
हलधर कमल धारक
म्लेच्छ विनाशक शस्त्र धारी हरि
जय गोविन्द कृपाकर ।

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥
(१/१५)

प्रबन्ध २ : हरिविजय

श्री कुच मण्डल आश्रित
कुण्डल शोभित ह
कलित ललित वनमाल
जय जय देव हरे ।
दिनमणि मण्डल मण्डन
भवखण्डन ह ।
मुनिजन मानस- हंस
जय जय देव हरे ।

स्तनकमलाकुचमण्डल
धृतकुण्डल ह ।
कलितललितवनमाल
जय जय देव हरे । (१/१६)

दिनमणिमण्डलमण्डन
भवखण्डन ह ।
मुनिजनमानसहंस
जय जय देव हरे ॥ (१/१६)

कालियविषधरगञ्जन
जनरञ्जन हे।
यदुकुलनलिनदिनेश
जय जयदेव हरे। (१/१८)

मधुमुरनरकविनाशन
गरुडासन हे
सुकुलकेलिनिदान
जय जयदेव हरे। (१/१९)

अमलकमलदललोचन
भवमोचन हे
त्रिभुवनभवननिधान
जय जयदेव हरे (१/२०)

जनकसुताकृतभूषण
जितदूषण हे
समरशमितदशकण्ठ
जय जयदेव हरे ॥ (१/२१)

अभिनवजलधरसुन्दर
धृतमन्दर हे।
श्रीमुखचन्द्रचकोर
जय जयदेव हरे ॥ (१/२२)

तव चरणे प्रणता
वयमिति भावय हे।
कुरु कुशलं प्रणतेषु
जय जयदेव हरे ॥ (१/२३)

श्रीजयदेवकवेरिदं
कुरुते मुदं हे।
मङ्गलमुज्ज्वलगीतं
जय जयदेव हरे ॥ (१/२४)

पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती
गोवर्धनाश्रितवसतिवसन्
परमदयालुतया मया किमपि
कथितमिदमुदारम्
श्रीजयदेवकवेरिह
विशदपदं वदतु शुद्धकवयः
शृणुत सुखयत च धीराः
प्रतिपदमिदमतिमधुरम्
दिशतु कलाकुशलं
कलयतु कलितैः सुललितैः
पदैरुदारम्
श्रीजयदेवकवेरिह
विशदपदं वदतु शुद्धकवयः
शृणुत सुखयत च धीराः
प्रतिपदमिदमतिमधुरम्
दिशतु कलाकुशलं
कलयतु कलितैः सुललितैः
पदैरुदारम्

पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती
गोवर्धनाश्रितवसतिवसन्
परमदयालुतया मया किमपि
कथितमिदम

सिसकि शीर्ण में शिशिर बेला भेल
पाला भसारे पलाल पड़ायल
कहुआयल प्रहरक फुनगी पर
मधुमासक नट आबि लुलायल ।
लता गुल्म मे फुटल कनोजारे
लाल-लाल बुस्सा बड़रायल
पुष्पकी दीपक फगुह दाग सँ
आरोपटेर ओहलो कुकुआयल
जागू हे, अनुराग तरंगिने
सुवति नवोढा अलसाने भामिनि
कत' सुतल तो कहल नीन आबे ?
भुरसुर ठाढ़ सखी मधु यामिनी ।"
मुखरायल वासन्तिक काया
हाकी भेल अलस मोरायल,
मिहकल मन्द बयार सुगन्धिक
सिहरि अनल लोचन भरुआयल
वैकल भेलो वृषभानु लली
मनसा नवाकय नव नव बाधा,
प्रथम समागम स्मृति रोमाय
कोमल उरज सँ लजाओल राधा

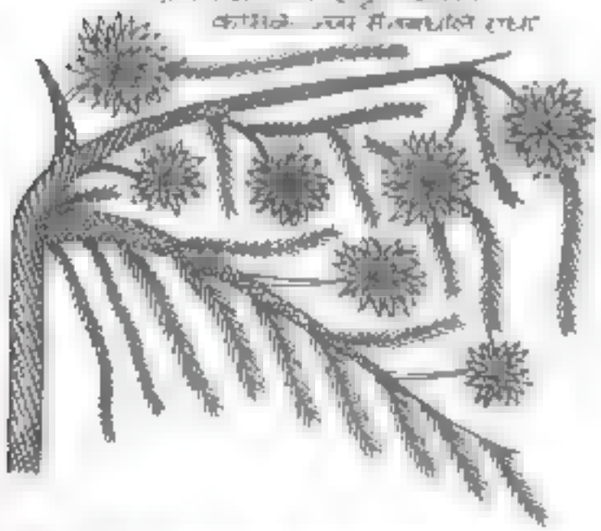

वन-वन फिरथि कतहु नहि पाबथि
ठौर-ठौर पर बैसि गमैली,
भरले आतंकहि हुंकारल बुलाये
भसमारे देह "कहरा नहीं"
नैन नीर नहि झल घोर नोरे
[illegible] मनोरथ,
मन मारे नाहे तन हारे नहि
असोथकित भै सामरी
दौड़लि सखी कतहु कानन सौं
विविध भाँति परबोधल
बोल-भरोस दास मेटाबय
प्राण कनहु सँ ओहल ।

वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवै
र्भ्रमन्तीं कान्तारे बहु विहितकृष्णानुसरणाम्
अमन्दं कन्दर्पज्वर जनितचिन्ताकुलतया
चलद्बाहुं राधां सासमिदमूचे सहचरी । (९/२६)

प्रबन्ध 3 : माधवोत्सवकमलाकर

ललित लवंग लता के घुनि घुनि
दुगुन बाम मलयानिल,
मह-मह सुरभि बढ़ी दिस मसरल
उनटल गंधक पातिल।

हँजक हँज मधुप रस-मातल
गावय औ बौरायल,
लाल ढोकि कोइली कुकुआवय
कुहु-भवन गीछायल।
सखि है, हरि विहरइ आजि ओह हौं।

मास वसन्त समय राते रहुक
स्वाधीनोल सहज निरामय,
तोहिना लगोके हृदय व्यवहालक
सूतो है रोग मेमाकय।
युवतिजन समागे नचाइ हमारि जइ हौं।
सखि है, हरि विहरइ आजि ओह हौं।

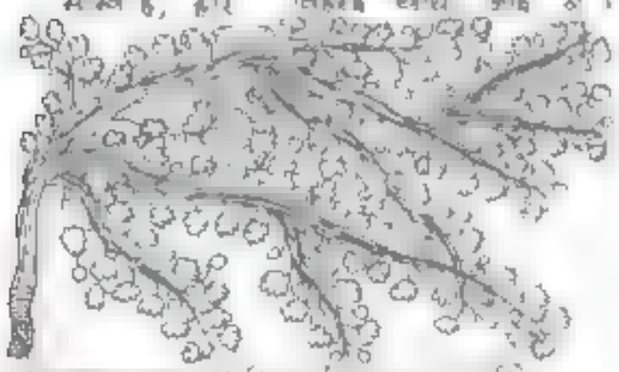

लोलतलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकुलकलकुहुतकुटीरे।
विहरति हरिरिह सरसवसन्ते
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरन्ते (१/२४)

जिनकर पति परदेस बिराजय
से बनिता किहो दुख पाबय
दिवाकि दिसाइ सन दोह धाइ कै
जिनाये जुहुरिया काटय
उन्मद मदन मनोरथ जगै,
कोकिल पर अलिकुल भैरव जइ हौं
सखि है, हरि विहरइ आजि ओह हौं

मन्मथमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे।
अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिपीतमधुरमधुकरयूथे
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते (१/२८)

नव किसलय दल नखन बनालक
ललित माल मन लोभय
मृगमद सौरभ कस्तूरी सन
गन्ध बेकल भमरोभय
पुरुष बान पलासक फूल
केसर बनसी लगक
गंधक मातल युवजन-वृन्दक
हृदय विदारय आनक
मलयोच मदल मलय हवाके जइ हौं
सखि है, हरि विहरइ आजि ओह हौं।

मृगमदसौरभरभसवशादिह नवदलमलयालये
युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते। (१/२६)

स्वर्ण-छत्र सन पौडर चम्पा
आग जग बहुरि फुलायल,
कनक दण्ड ली मदन महीपति
लाओय आबि तुलायल
दौदक दौद गुलाब फुलायल
तह पर भौंरा सोहरल
कामदेव रति रण करबा लेँ
तीर-तूणीर सम्हारल ।

मगन मन रस भीजह आछे जइ हौं
साखे हे हरि विहरह छाँहे आइ हौं ।

माधवसमीपिकमकरन्दकाचेकेशरकुसुमोत्केकारे
विगलितपिञ्जरीमुखपाटलपटकुलसम्भरतूणशबलाभे
विहरते हरिरिह सरस वसन्ते । (९,४८)

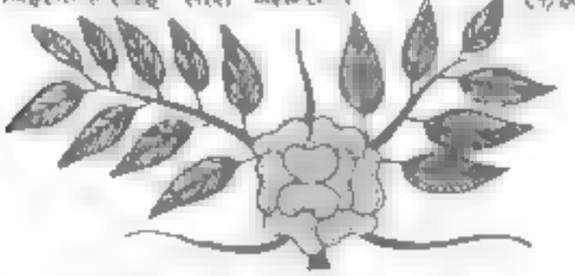

विगलित चित्त विरहे नव नागरि
तजि लज्जा निज हुकाय
नेखो फूल फुलायल मदमद
दशा देखि टिटकाय ।
केतकी फूलक लोक टाकु सन
हृदय बेधइ अछि जइ हौं,
साखे हे, हरि विहरह छाँहे आइ हौं

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे
विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकिदन्तुरिताशे ॥ (९/४१)

नव नव बेलिक लतिका डमरल
गिरह गिरह पर कनसुर ओगरल
सीतल कुसुम बसन्तक पेखिअन
मनसमाहत रा उधकल पराग ।

सिहरल लतिक गन्ध सगमी
जूनतक रेह जनु सेंकुचायल,
भौंरो मे अलगल रस कोनी
नहुले-नहुले मन्दो जागल

मधुरिम-मधु मुदरी नव कलिका
सुआनि बसातक, मुँह अलसीलक
चनकल दलक ओदार भिहरि कै
प्रेमाभमाल रस, गन्ध बसीलक।

मुखरे नाम पर मन्द गन्धवह
बाकुल मे बाए हलने बहायल
[illegible] विकुलके
बनलि उधार [illegible] विलहलो ।

छमाके [illegible] सहसा बन सुन्दरी
हनहू कनक [illegible] आमोदेकी
परिमल मे [illegible]
[illegible] .

बली केतकी कान पाथने
तहान बान्हि कोनाठ [illegible],
[illegible] कोरे [illegible] उमकि कै
[illegible] [illegible]

उदमत [illegible] [illegible]
[illegible] रस गन्धक [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

माधविका परिमल सँ पेशित
नवमालिका सँ सङ्गेत,
मावक भेल वसन्त घनेरो
सुनि मन सहित सुमोहित

युवजन नेमीतै लगै भितरू
उमगल यौवन कण कण जहु ठाँ।
माधव हे हरि विहरइ छाथे ओहु ठाँ।

माधविकापरिमलजनितेन नवमालिकातिसङ्गेन
मुनिमनकामपि मोहनकारी तरुणकारणवन्धी।
विहरते हरिरिह सरस वसन्ते॥ (१/३२)

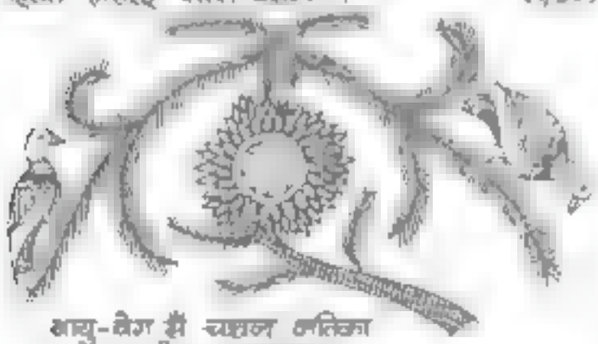

वायु-वेग सँ चञ्चल लतिका
माधवीक उमताइल,
उलिङ्गन मे आनिह आमके
घूमल, मधु फुलाइल।

यमुना तट पर वृन्दावन मे,
युवति अनेको रभसे जहु ठाँ!
माधव हे हरि विहरइ छथि ओहु ठाँ॥

स्फुटति मुकुलतल्पे पीवरभागमुक्तकिसलयचूते।
वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते॥
विहरते हरिरिह सरस वसन्ते॥ (१/३३)

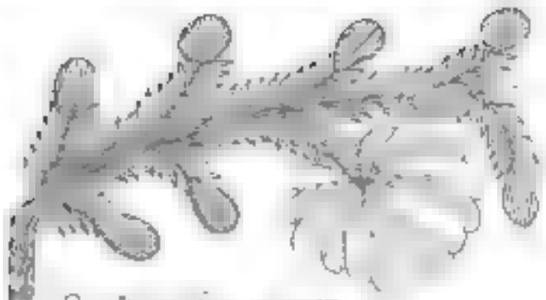

श्रीजयदेव प्रणीत सुमङ्गल
मधुरिम प्रथिक चर्चा,
रसमय कोमल कलावन नवीन
श्री-पद पूजा-अर्चा।

[illegible] मन मधुमय [illegible]
[illegible] मन्य [illegible] जहु ठाँ
माधव हे हरि विहरइ छाथे ओहु ठाँ।

श्रीजयदेवप्रणीतमधुरिपुविलासमङ्गलाय
[illegible]
विहरते हरिरिह सरस वसन्ते (१/३४)

सुलबेली बेली क हवेली
मुहब केतकी छल छबीली
पहिरि बसन बासन्ती पिअरपील
सुरभि सुगन्ध लुटाबय चललो

पवन उताहुल अनल समदेला
मूरल चूतमुकुरे दे के जगौलक
मधुआयल भौंरा भनसोबा
आगी उगली बाट देखौलक।

जगला चतुरोंके मनसिज जगल
पहिरि कौंपट रसवन्तो आयल
बिरह वेदना हिरदे पैठल
दोबा तानि कै लाज भगायल।

कामक रथ पर बैसल मधुरोंके
छोड़ि कुसुम शर दमदिक बेधल
[illegible]
समरा चिरल बनाहुल बोल

उहल उजड़ि युवा-मन-सर से
इच्छा-मीन उछलि उमाकल,
चलल वसन्त सिखर कह ले
शिरीजन तापें मुरछायल।

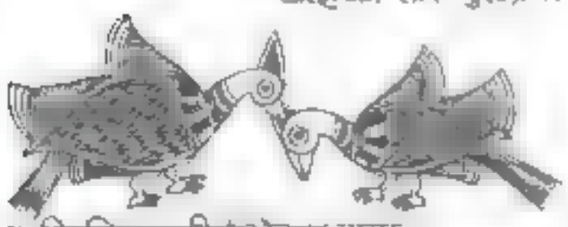

दरविदलितमल्लीवल्लीचञ्चत्परागः
प्रकटितपटवासैर्वासयन्कानन्नानि।
इह हि दहति चेतः केतकीगन्धबन्धुः
प्रसभसमरबाणप्राणवद्गन्धवहः॥
(९/५५)

सखि हे, समय कठिन विरही के
वन-वन सुमन अनेम फुलायल,
चम्पक कुन्द कली के॥ सखि हे ...
बहय समीर सुगन्धि सनायल,
मह-मह बास मही के।
तुइ तुह मह मकरन्द समायल,
आरेपन प्रेम उगना के सखि हे
नेबी नीम चढ़ल महका सै
[illegible] दही के
[illegible]
सुमरो भालसरी के माथे हे
[illegible] चढ़ल मञ्जरी सँ,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मुमनक [illegible]
[illegible]
पञ्चम सुर मे [illegible]
[illegible]
सरस वसन्त [illegible]
फौस चढ़ल [illegible]
[illegible]
टेसय [illegible]
सखि हे, समय कठिन विरही के।

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुप[illegible]
[illegible]
नीयन्ते पथिकैः कथञ्चिदपि ध्यानावधानक्षणः
प्राप्तप्राणसमाप्तिसागमरसोल्लासैरमी वासराः॥(९/५६)

सखि हे, जुनि बनु विरह- बताहि !
युवति जनेक बेरल माधव के
भुज बन्धन मे जानि।
सखि हे, जुनि बनु विरह बताहि
क्यों मुख चूमें मुँह चूमे
क्यों सिर गात हँसोयय,
बहुतोधि प्रेम प्रकाशय गोपिनि
क्यों हरि कें अँकवायय।
चलू, ओतहु देखब सभ लीला
हिरय नहि आह आहि
सखि हे जुनि बनु विरह बताहि ।

अनेकनारीपरिरम्भसम्भ्रमस्फुरन्मनोज्ञोरसिलालसत्तनुम् ।
मुहुर्मुहादृष्टिमन्तयन्ती सखी ममाह पुनराह राधिकाम् ।
(१/३६)

चन्दन चर्चित नीलकलेवर
पीत वसन मधुसूदन,
मोरमुकुट वनमाल गेला मे
मणिकुण्डल हुति दोलन
मुरुज मगज मुखा वजेला सभ
हो मग रभण करइ घोटो,
माधव मन्द मन्द मुसुकइ थाथि।।

प्रबन्ध ४ : सामोददामोदरभ्रमरपद

चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली ।
केलिचलन्मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगस्मितशाली ।।
ईरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनी विलसति केलिपरे । (१/३८)

हास्य मिहाए रसक समतुल्यहि
मध्य लाल पल्लव मे,
हरि गालोथे रसकोले अनुभासथि
सुर-नर मुनि संयम ने ।
पीन पयोधर भार समर्पिण
गोपिनि चौंज करइ बाहे,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ थाथि।।

पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम
गोपवधूरनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम् हरिरिह
(१/३५)

कात हाँसु कयो सुमधा रमिला
अ जें किछुनै रमन आछि,
अन्यथा मे मन्मथ-मन्थन मे
निज शिख पिछाने मूल कहि
एक लाल मे लाजय मुँह पर
हो लोचन अरुढ़ बाये,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ थाथि।।

काचि विलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजम् हरिरिह
(१/४०)

'लाख लगा क्यों कनफूसकी के
अधर श्रवण दिस बढ़ाय,
लपलप कांपत ठोर कपोलक
मधुरामृत रस पीवय ।
चुम्बन में मातल नितम्बिनी
मधु में चुमुकि रहल छाये,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छाये ॥

क्वापि कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले ।
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूलैः ॥
(१/४१)

कोनो फुसीया छोरेक छोरवा
धै बन में दोलवा बांधे
यमुनाजल तट रम्य घाट पर
श्याम रभस तीरह काँधे
रोतरा काजल प्रणय-रसी मन
रसकोरो भांसे रहल छाये
माधव मन्द मन्द मुसुकइ छाये

केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले ।
मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूलं ॥ (१/४२)

रासक वृत्त रचल सखि-मण्डल
बुरिपिन जेना कमलदह
निनदित वाद्य मुरलीकलान पर
करतल-कङ्कन सुनसह ।
बाँसुरी-स्वर पर झपड़ी नालक
मन सराहि रहल छाये,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छाये ॥

कलतालतालतरलवलयावलिकलितकलस्वनवती
रासरसे सह-नृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे ॥
(१/४३)

कम केकरो आलेखन कन्हाये
तकाँहे चुम्बन केकरो,
केकरो सम रमण से मधुर
पाबु धाइ छाये केकरो ।
कमल कोनो रूपधर्विना
केकरो पुनि मनमधु बाँधि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छाये ॥

शिक्षयति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामाम् ।
पश्यति सस्मितचारुतरामपरामनुगच्छति वामाम् ॥ (१/४४)

श्रीजयदेव केवल उद्घाटन
केशव केलि रहस्यक,
वृन्दावन मे ललित विलासक
वर्णन रास वसन्तक।
हो कल्याण सुखद शुभकारक
जे कयो हे गावइ दाय,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ थाकि।

श्रीजयदेवभणितमिदमुरुकेशवकेलिरहस्यम्।
वृन्दावनविपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम्॥ (१/३५)

फागुन मास वसन्त समय भला
मलयानिल बेस
सकल प्रकृति देह धरोहे जे
ऊकसला हो देशे।
नीलकमल सम सुन्दर कोमल
लोल-समूह बीकुंठाक
कुजमलना चुम्बन के पाओल
दिव्य कृपा हो राधाक।
सखि हे फाग उचित नाहि देशे,
माधव लगओथि शिपिनक केरी॥

निश्वेषामनुरञ्जनेन जनयन्नानन्दमिन्दीवर
श्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्सवम्,
स्वच्छन्द व्रजसुन्दरीभिरभितः प्रत्यङ्गमालिङ्गित
शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति। (१/४६)

मलयाचल मे चन्दन-तरु पर
मदन भुजङ्ग रहइ नहि,
मलयानल के झोंके हिमगिरि के
नित्य विवाह करइ आबे।
विष तापे तमधाल मलयानिल
चेलक बाट हिमालय
देखि अधम पर मन्मथ कुपित
कोइली कू कू बाजय।
सखि हे, कामक मनु हए भेरी
माधव लगओथि शिपिनक केरी।

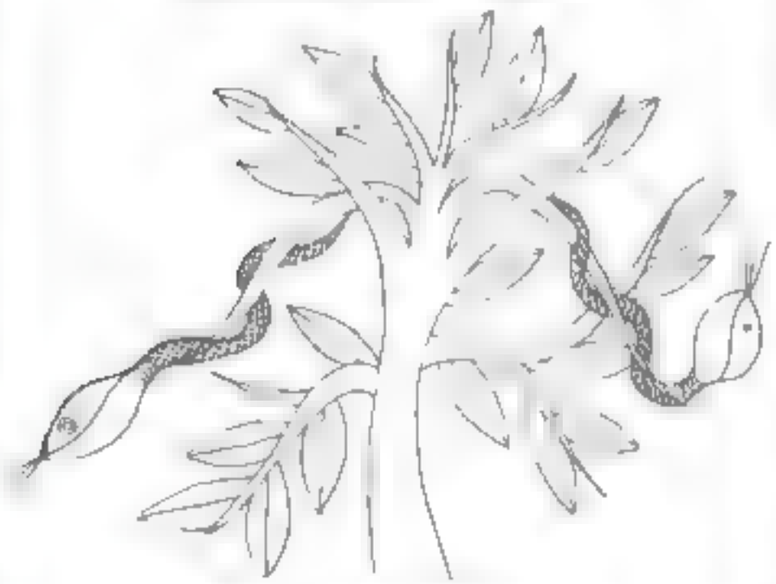

नित्योत्फुल्लसमस्तपङ्कजकुलक्लेशप्रदिव्याचलं
प्रत्येकस्तवनेच्छयानुसरते मोदाम्बुलोलानिलं
किं च द्विरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य कर्णोदया
दुन्मीलन्ति कुहू कुहूरिति केलोलालाः पिकानां गिरः॥
(१/४८)

सखिक वचन के सहि नहि सकली
विहँसि कहित राधा,
हेरु बढ़ा पहुँचलि माधव लग
ठेलि सकल हित-बाधा
"जीत भेली बड़ मोहक गोलहुँ'
बजली वचन समोये,
हेरि रोइ थकिगेलीहमे मन में
घूमल प्रेम महोये।
भुज बन्धन मे प्रेम निचोड़लनि
राधा सुख पाबइ लागे,
माधव मन्द मन्द मुसुकइ लागि ॥

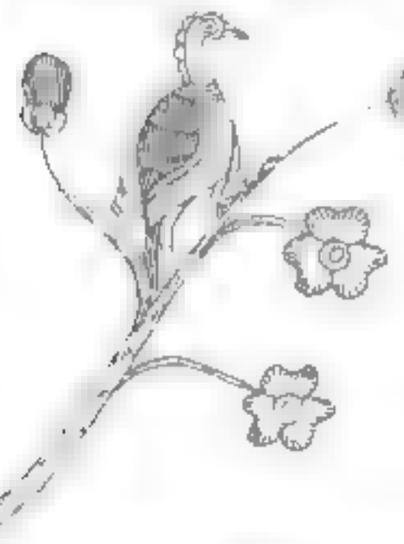

रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा
मभ्यर्थ्य परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया।
माधुर्यद्रवदं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति
व्याजादुद्भटचाटिताः स्मितमनोहरैर्हारः पातु वः ॥ (१/४८)

दोसर सर्ग

अक्लेशकेशव

केशव छथि अकलेश
विराजथि सभक मन मे,
नाहे हुनका मे द्वेष
विलासथि सभक कन मे।
जैना सूर्य नाहे मेलाथि
कदाचित तम जकता सँ
तहिना हरि निर्दोष
कामना द्वेष मोह सँ,
कर्म नियम परिणाम
न कोनेटा हुनका छुबनि,
पुरुषोत्तम भगवान
जगत हुनके मे बुझनि।
जो सभक छथि परम
प्रकृति-गुण स्पर्शलेश नहि,
भगवान पुरुष विशेष
हुनका कथो विशेष नहि।
छलनी विरह मे विकल
राधिके, भाव परबोधल,
खेलाने मन मे हाँस
रोइ कें मन सँ मोचल।
मदनोन्मत के बाढ़ि
बुझाते इन्द्रचाप रमइ बुलि,
प्रेमान्धर मे राधि
दिनाधिपो चूमइ छलि।
राधा मन मे भेद
हुनकाँ सभ सँ सुन्दरि,
हुनकी प्राणक स्वाद
हुनकर नित्यक सहचरि।
समदर्शी भगवान
ध्यान निजेश ने देलनि,
राधा ठेलि रिसिआय
छोड़ि ऊमव चलि देलनि।

मदनोत्सव मे गोपवधू सब
मुक्त मगन किलकइ छलि,
एक सँ एक परम सिरमौरक
गुण आगारे बिलसइ खलि ॥
क्यो केकरो स द्वेष करै नहि
नहि केकरो 'दैठ' झाबय,
एकहि धरातल सब क्यो नाचय
सब के सब हरसावय ॥
सब चाले मोहित सब आनन्दोदेत
सकल समान सुहाओने,
नहि क्यो ऊच नीच नहि क्यो आने
माधव गेय सब मानाने।
राधा मन मे होय ईर्ष्या
हरि विलासनके बुझलाने,
हमरे बुझला निपट गुमानिनि
पथ मे चुप्पी फेरलाने ।
भनक भाने आनि बूझे राधा
साधक भेग बुझैली,
सब म' नाचो क्या भोगो मे
उपजल कान्हा नुकैली
कोनहु कामनाक वैर वृथा छल
कोहने पवन मोह भान,
बाढि बाढि पर पहुँ कुरस्य
सामन्तीक सुमाओन ।
कुंठाँ मे आकुल रूपस धनि
भागो हत' राम कायली,
हरि मे कलना कुमह दुख मोचेली
गोपन भेद बतैली ।

विहाय तत्र राधा साधारणप्रणयो हरौ
विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्याकषेन मनोन्यतः ।
क्वचिदपि लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डली -
मुखरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहःसखीम ॥ (२/९)

प्रबन्ध ५ : मधुरिपुरत्नकण्ठिका

'सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छलि !
अधरसुधा-रस पीबय मुरली
तै एतबा मोदक आछि,
जौं जौं ध्वनि पसरय मुरि-मण्डल
सुधि बुधि भरि रोधक आछि।
पहिने हरि मुरली-वादन के
सुर सरछाएर छिटइ छलि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छलि !
सुर सामन संग दृग-परिचालन
भौंहि-कपोल सुचालन,
मोहन अंगकाएर अभिचारय
रहने रमाओन आकुल
बँसुरी धुन! सँ ! मधुसूदन
टोना कोनो करइ छलि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छलि !

[illegible]
राधे [illegible]
[illegible] मन मम कुन्तीहामम ॥ (२/८)

मोरपाँखि- चन्द्रक मे सजाइर
छोरिया केसक कुन्तल,
कुरस नर्तित भे इन्द्रधनुष जो
[illegible] आवेरल।
सेहा- मनोहर वेश मनोरम
मन मे नाचे बिलसइ छलि,
सखि हे रास मे हरि बिलसइ छलि !

चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डमण्डलवलयितकेशम ।
प्रचुरपुरन्दरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदिर सुजाम [illegible] (२/.

मधुकीहा सभ ललित नितम्बिक
पुनि-पुनि अधर चुमइ छथि,
दुहदुह लाल अधर दुपहरिया
फूलक भास हरइ छथि ।
अधराधर पल्लव पर स्मिति
मदिर मधाइ रचइ छथि,
साँझे है, रास मे हरि बिलसइ छथि !

गोपकदम्बनितम्बवतीमुखचुम्बनलम्भितलोभम ।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसदेतास्मितशोभम राधे
(२/४)

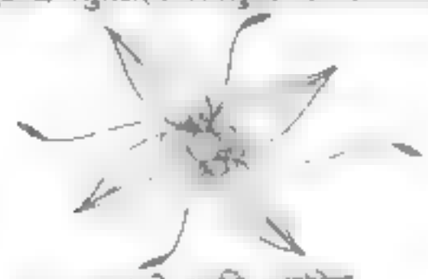

भुज पल्लव रेमसलि पुलकेत
सहस नारि परिरम्भन
माणिमय भूषण कौंहि पल कर
हरय [illegible] प्रोज्जाग ।
कोलि-तल भुजा-सञ्चालन
जगमग ज्योति भरइ छथि,
साँझे है, रास मे हरि बिलसइ छथि !

विपुलपुलकभुजपल्लवकलयितवल्लवयुवतिसहस्रम ।
करचरणोद्भट माणिगणभूषणकिरणावभिन्नतमस्रम राधे
(२/५)

उन्नत भाल तिलक अनुरंजित
शुभ ज्योत्सना भाषित,
अलक परल अधमौपल चानक
ज्योति जरइ जाहे छाषित ।
कपिल कपोल प्रदेश बनि माधव
पीन पयोध मथइ छथि,
साँझे है, रास मे हरि बिलसइ छथि

अलकपटलचलदिन्दुविनिन्दकचन्दनतिलकललाटम ,
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयहृदयकपाटम राधे
(२/६)

मकराकृति मणिमय दुइ कुण्डल
शोभा चारु अलोलके,
पीत वसन धारल पीताम्बर
बरबस मन डोलक ।
एहि सुख रस लोलुप जे जन
सेहि प्रोत्साह भजइ छथि,
साँझे है, रास मे हरि बिलसइ छथि !

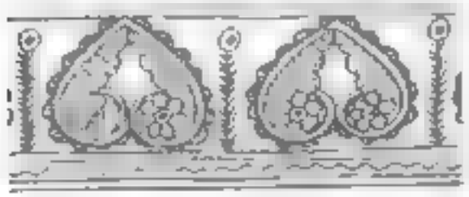

मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डसुदारम ।
पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारम राधे
(२/७)

विशद कदम्बक डाँहि जैसि कै
सुनिजन दरस करह सखि,
श्रीभगवानक संग निरापद
कलि कलुषक भगइह सखि।
सुनिजन साधु कराये हरि कन्दन
हरि हमरा लागइ छथि
साखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि

विशदकदम्बकतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयन्तम्
मामपि किमपि तरलतरदृङ्गेन मनसा रमयन्तम् । राधे
(३/८

श्रीजयदेव मधुर मति भाखोल
हरि गुण गाबि सुनाओल,
मधुरिपु रूप सकल भय-नाशक
कवि पुण्यक पद पाओल
रास समय चञ्चल पद-पङ्कज
लीला अजब करइ बाबे,
साखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि

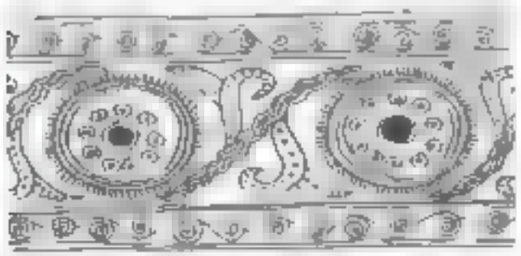

श्रीजयदेवभणितमभिसुन्दरं मोहनमधुरिपुरूपम् ।
हरिचरणस्मरणं प्रति सम्प्रति पुण्यकलामनुरूपम् । राधे
(३/५)

सखि हे, मनहि हमर बैरी आजि !
हमरा बिनु आनहि हरि भावय
लोकक मुँहे सुनइ छी,
बिसरि आइ किछु ध्यानने आबी
हमहूँ यत्न करइ छी।
जैतबहि बाँसी मोन मे पाबी
तेतबहि मन बिसमइ आजि,
साखि हे, मनहि हमर बैरी आजि !
मन चाहय तामस के बखरी
हुनक स्वभाव जनइ छी,
पसरी-अपसरि प्रकृति बनि
मन मे लेख आइ छी।
एक मन होय वृथा आजि सोचय
पुनि हुनकाहे ध्यानमे आबी,
साखि हे, मनहि हमर बैरी आजि

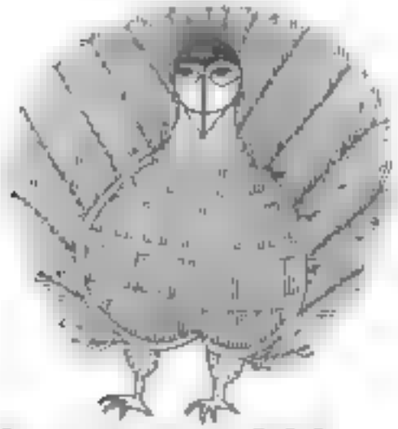

गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते
वहति च परितोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः ।
युवतिषु कलालापी कामी विहाय हरिं विना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किम् ॥ (२/१०)

प्रबन्ध ६ : अक्लेशकुंजरतिलकम्

एक राति, हे सखी, निकुञ्ज
निर्विघ्न मिलन-स्थल पर,
चर्चित वसन्त नियत अभिसारक
मन उद्वेगक रथ पर
पहिनहि सँ हरि आबि लुकैला
पुलकित हृदिक ओट मे,
हम चकुआय तकैत हुनका
हसकर गाछक ओट मे।
राति अन्धार भयावह तह पर
कामक तेज कुसाही,
हम उद्विग्न कलनमूह सोची
कोनहुँ से आपदमे
तकलाहे होरे भरि पाँज पसारे जे
हँसला बड़ तीहारो,
मन भेल धीर हराबे अरुणाचल
जोरहुँ ओर आसे
पुनि हम इसारे रोम रोम मे
उठलैक तरंग कामतूर,
मदन मनोरथ माथ चढ़ल अहि
सन्तापे मन मातु।
केशी दैत्यक वध कैलनि जे
परम उदार सनातन,
श्रीहरि रमण-करण, सखि हे
केशीमथनमुदारम्।

निभृतनिकुञ्जगृहे गतया निशि रहसि निलीय वसन्तम्
चकितविलोकितमकलदिशा रतिरभसभरेण हसन्तम्।
सखि हे केशिमथनमुदारम्
रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम्॥ (३/१९)

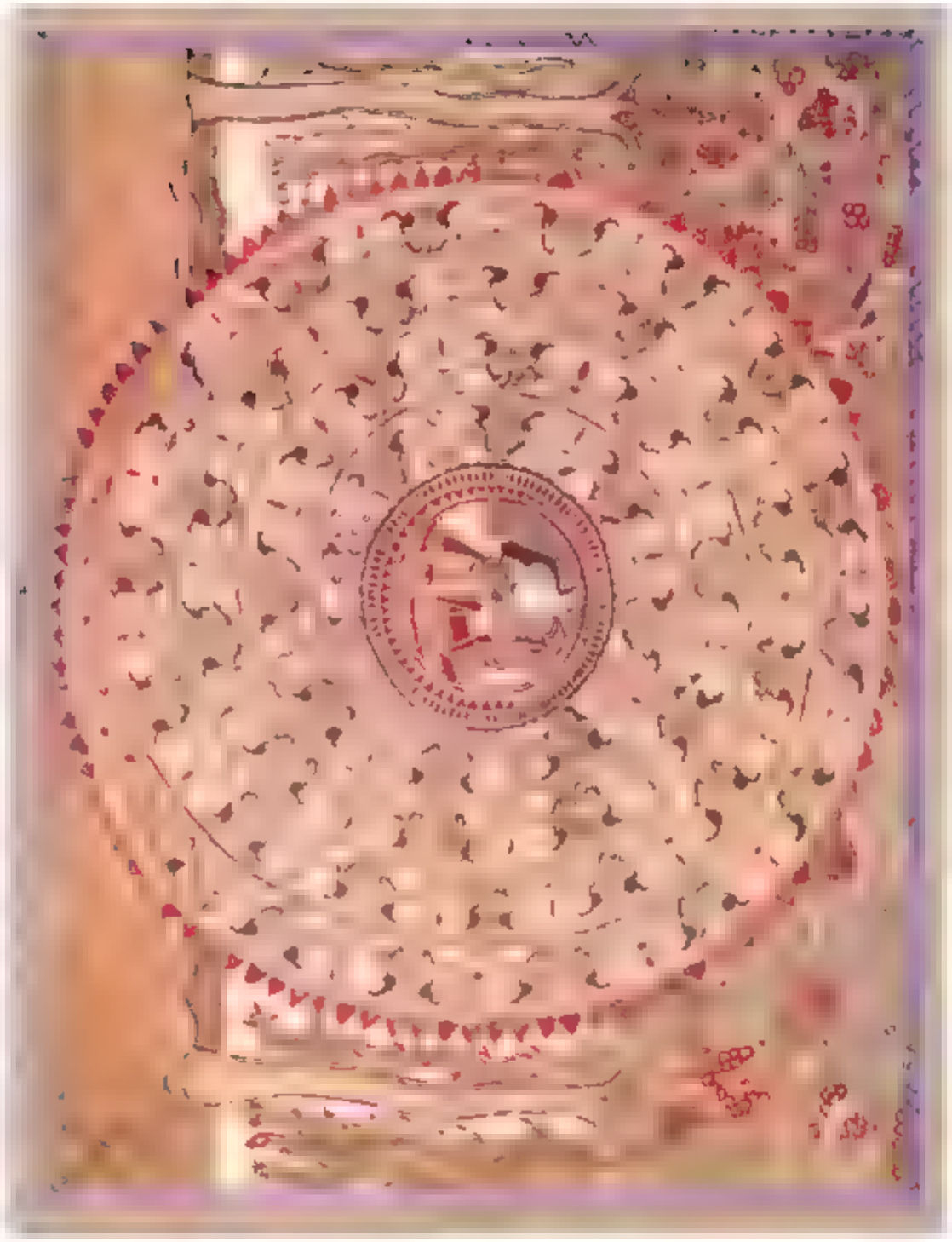

यद्यपि छल नहि प्रथम समागम
लाज तदपि पहिले सन,
हम सँकुचायल 'सिहरल' देहें
तहु सुखायल कोनादन ।
श्रीहरि त' छथिए बड़ छटहू
बोलक चतुर खेलाड़ी,
मुँहक बकार फूटै नहि हमरा
लागल जेना केवाड़ी ।
तेहन-तेहन ने कथा सुनौलनि
हँसलहुँ अवश भमा कै,
बुझि अपना अनुकूल तखन हरि
लागला जघन उघारै ।
बोदक बात कहू की बनिना
औ छल दिव्य समागम,
कतना रमण करा आन्दी
केशीमथनमुदारम्

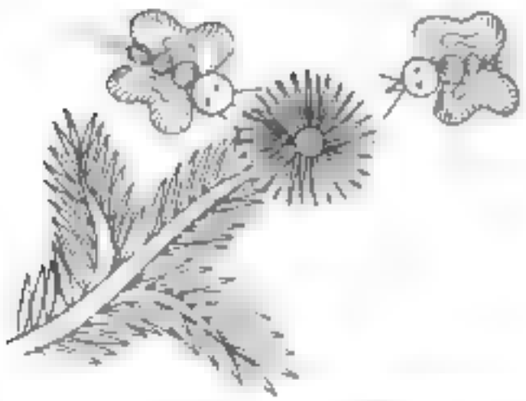

प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम्
मृदुमधुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम् ।
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (३/१२)

कोमल पातक अनल औषाऔन
तह पर सहज सुतौलनि,
सुसुम परम जागल रोमावलि
सुमुकै अधर सटौलनि ।
थिर नहि रहलहान, नहि बुझलहुँ
कखन वह सँ सटला,
तिलतण्डुल आलिङ्गन कैने
बड़ी काल धरि रहला ।
कोना, जानि नहि साँचे बहिना
हमहुँ बान्हि भुजा मे,
चुम्बन लै आरो बौरैलहुँ
चाबक हेरायल सुधा मे ।
तेखन औ भुजबन्ध छोड़ि कै
कराँथि साम मधुपानम्,
तदनन्तर दग अनइ छाँहे केशव
केशीमथनमुदारम् ।

किसलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम्
कृतपरिरम्भणचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् ।
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (४/१६)

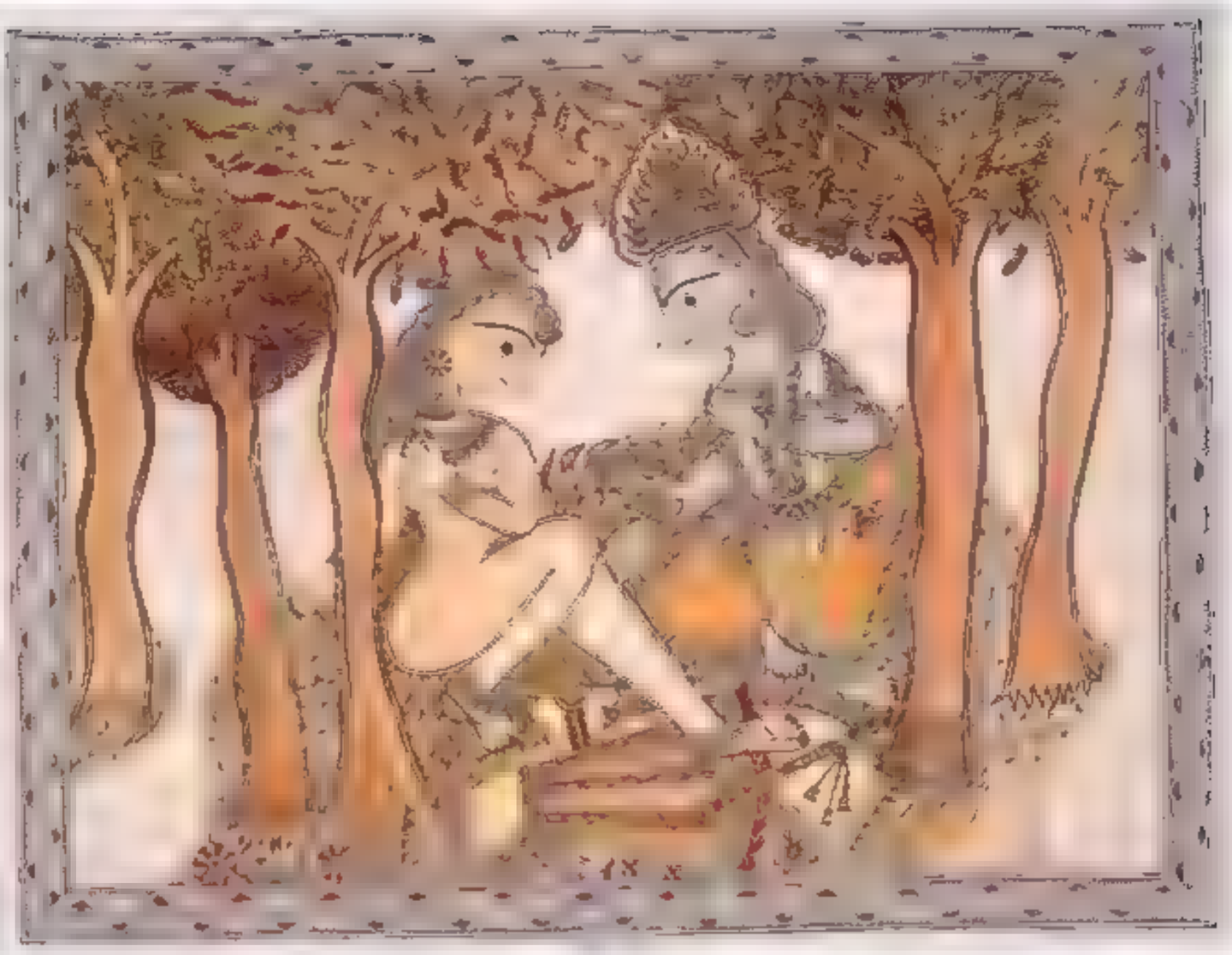

समय जानि नहि ससमल कलबा
सुरति क्रिया मे भासैत,
किछु पल भेला मन्द, सुभमल
अलस नयन मे पसरैत।
हमरो सगर देह लघपब छल
श्रम सीकर बुनिआयल,
आँखि झाँपि पल चुमल हरि के
पुनि फुरती ससमायल।
हरि आनन पर तखनुक आभा
अरुण गाल रस कोपर
सुराते फनिमे मन किछु भासल
जे काँचन से दोबर।
दोसर खेपक श्रम भारी छल
शीघ्रहि भेल सुखाश्रम,
शिथिल जघन माधव सुसुकैला
केशीमथनमुदारम्।

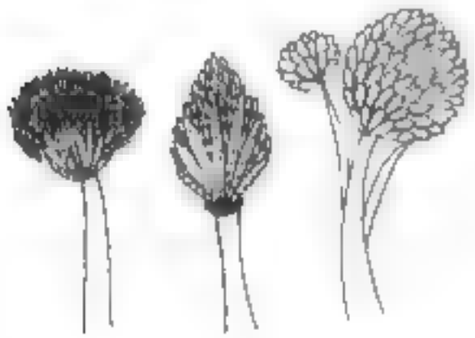

अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम्।
श्रमजलसकलकलेवरया वरमदनमदावलिलोलम्॥
भाजे है केशीमथनमुदारम्। (३/१४)

पुनि क्रिया मे सुँघाछि अखन हरि
सगरी देह हँसोथाछे,
खन रोमावलि मृदु सोहराबथि
कोखन वक्ष दबाबथि।
कोहलिक दाबल मन्द कूक सन
खन पीरकी सन छुटकब,
जाने कोना सिसकारी निकसय
श्री - हम - आहक फूटब
हसन वश लखि श्रीमधुसूदन
कामक नियम बिगड़ाछे
तोड़े - मचोड़े कुसुम कच कुन्तल
वक्ष नखक्षत पाड़ाछे।
ई रसूरी श्रम रोम रहल अछि
प्रकट प्रेम प्रतिकूलम,
तो दुनी आनँ रमण कराबः
केशीमथनमुदारम्।

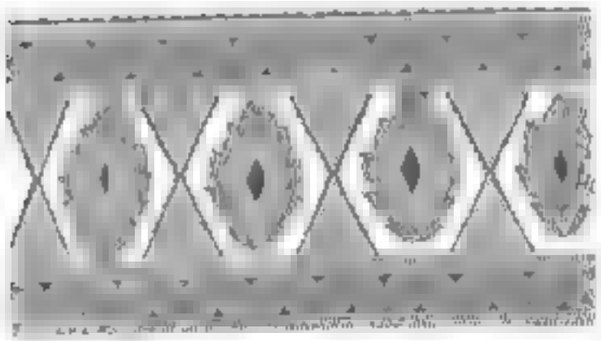

केकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतन्त्रविचारम्।
श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम्।
भाजे है केशीमथनमुदारम्॥ (३/१४)

जघन रसिक विस्तार कारि हरि
माणि- नूपुर झंकारय,
हँसकल ता धरि घन घन बाजय
जा' दुटि मौन ने धारय ।
तेहन समय हरि केश पकड़ने
करथि अधर रस चुम्बन,
ताहे रसिक केशव हे मिलब
केशीमथनमुदारम्

चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।
मुखर विपुलनितम्बतया सकलग्रह चुम्बनदानम् ।
सखि हे केशीमथनमुदारम् । (२/१६)

हे सखि जीवन धाम बिन्दु पर
मेघहि रेत-कण हो,
मृदु रेह बसतीन सेज पर
औंसि सुनायल हमर हो
तेहन समय किंशुक ने जगत
हुनको सजाने जगत छाने,
सेहो हमर निश्चेष्ट देह लखि
काम पुनः जागह छनि ।
फेर वीह उद्रेक प्रणय के
नई नई मधुर निनादम
कहि प्रियतमे हे मिलन कराब
केशीमथनमुदारम ।

रतिसुखसमयरसालसमति करमुकुलितनयनसरोजम् ।
नि महनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनीजम् ।।
सखि हे केशिमथनमुदारम् ।। (२/१८)

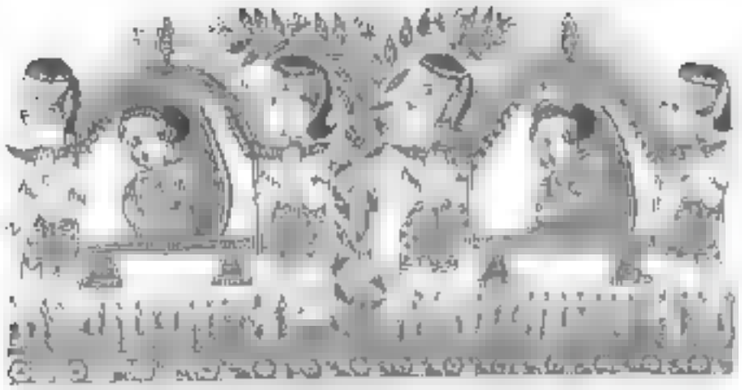

श्रीजयदेव कैसल रति-वर्णन
सीक बुझहु भल कविता,
सुदा कलिके धर्मेक्कथन हि
सद्यः राधा भणिता ।
भक्त-रसिक जे यदपि-सुनथि हि
गीतगोविन्दक काव्यम,
तिनकर हित-कल्याण पुरायहु
केशीमथनमुदारम्

श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम ।
सुखमुत्कलकलगोपवधूकथितं वितनोतु सलीलम्
साधे हे केशीमथनमुदारम । (३/१८)

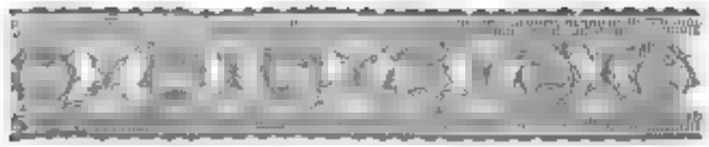

जखने रहइ छथि माधव, सखि हे
व्रजसलनाक भमा मे,
केकरहु बाहि लहरे सन ओलाल
लेपटायल हरि गर मे ।
नीक होइत देखितहुँ माधव कें
जखनहि होर सताबथि,
[illegible]
[illegible] अपन मस्तकहि ।
हमरा सम्मुख देखितहि हरि कें
[illegible]
[illegible]
[illegible]

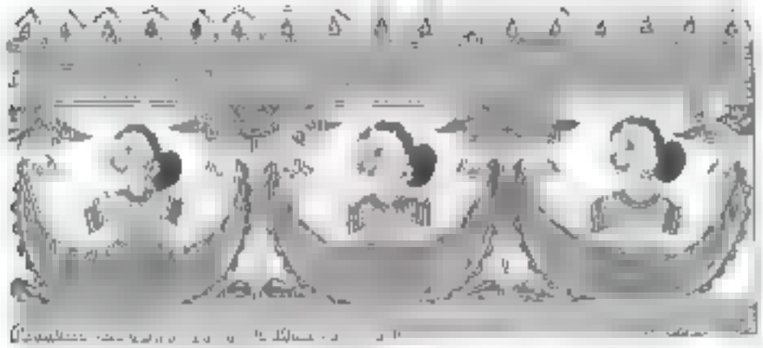

समय वसन्त कुसोकके तरुपर
नाचै नाचै टा मञ्जर,
पवन वसन्ती विलासय सैकरा
विरहिनि मन पर बज्जर,
भेमक भुण्डु रमाकान्त पर
सदिसन रस्य अगोरने,
जखने सिमरी देखक मधुरि
गुञ्जरा लागये गरसनि।
हे सभ सन न हे किछु चाहइ ओहि
बीसह मन अपकारक,
समय केहन कुहिह 'दुरगोला' भेल
पवन-सुख दुखकारक।

दुरगोलाकुसुमकलकनकाशोकलतिका
विकासः कामारोपवनपवनोऽपि व्यथयति,
अपि भ्राम्यद्भृङ्गीरणितरमणीया न सुखदा
प्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति। (३/२०)

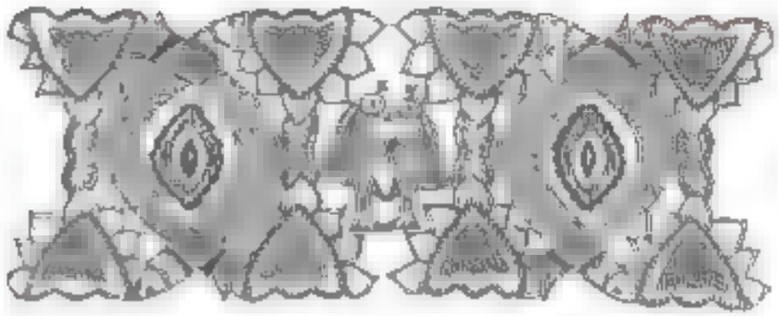

रसित रसिक रमराज मुखरि
देखत देखत सुदिवोला,
मूढ़ युवक के मन मोहइ अहि
भारे रत' कुहिलीला।
लोभे मुँह पर हास सकारण
केशा- गुच्छ शिरोरुहायत,
जानि बूझे कर वक्ष प्रदोन
वृथा रोम भुलकायल।
मदन मोहन कामुक अभिप्रायक
आयि तरुण हरि झूमला,
मन मसरि आलेखक पथ सँ
रसीत सुपथ पर जयला।

मधुकरमिथुनमाकुलमाकुलगलपुष्पमेलनमुखरमित
भुवल्लीकमलीकदलीभुजामूलोद्वेहमस्तनम्।
प्रेयांसा निभृतं निरोक्ष्य गमितस्वाङ्गाङ्गिरो चिन्तया
नन्तमुग्धमनोहरं हरतु क वस्तेषां मन केशवः॥ (३/३१)

तेसर सर्ग

मुग्धमधुसूदन

श्रीहरि छवि कंसारि, सुखादिक सार
जगत मे सुख विस्तारथि,
राधा भव-सुख बन्ध मधुररसकन्द
साहे मे रस सारथि।
किशुक दिशम हेरि मुग्ध रूप पर लुब्ध
[illegible]
राधा गेलथि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कंसारिरपि संसारवासनाबन्धशृङ्खलाम्,
राधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुन्दरीः ॥(३/१)

राधा लिख विदग्ध, काम सन्तप्त
खिन्न मन हीय अपहीचीथि,
कैलहु, ऐसन काज किशोर आज
निभृत भेँ गेलाँ छोड़लि।
फिरथि जेना विक्षिप्त, तृषा परिपीड़ित
हकासल यमुना तट पर
ताकथि वन-वन राहि, विथरला थोहे
कतहु वन-कण्टक पथ पर।

मुक्तमूर्ध्नस्तमनुसृत्य राधोत्कामनकुलाकुलितमानसम्।
कृतानुतापं स कालिन्दीतटान्तकुञ्जे विषसाद माधवः।
(३/२)

प्रबन्ध ७ : मुग्धमधुसूदनहंसक्रीडनम्

यमुना-तट पर भग्न-हृदय सोचथि हरि मन मे
[illegible] सुन्दरी मे हुबल, [illegible] जड़ बाण मे ॥
विहन समय जो अयली, [illegible] हमहीं [illegible]
हाय [illegible] जो बूरि, अनाकुल [illegible] बोलहुँ

मर्मभिद्यलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन।
[illegible]
[illegible] ॥ (३/३)

[illegible] दिवस [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible] जन [illegible]
हाय [illegible] जो बूरि, अनाकुल [illegible] बोलहुँ

किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण
किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण। हरि हरि॰
(३/४)

मौन पड़ि भाखि [illegible] मुह, [illegible] कमल सन।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
कैलहु हम अपराध, [illegible]
हाय [illegible] जो बूरि, अनाकुल [illegible] बोलहुँ

किं तदाभि तदाननं [illegible]
[illegible] ॥ हरि हरि॰
(३/५)

卐 卐 卐 卐

चरम वियोगक दशा, भेला मनलीन मुरारि ।
सोचाये, मन मे कसंधि, [illegible] दुलारि ।
हुनकोहे मे हमा रमण कोरे, सोचमन दुनकी
[illegible] छी किये, अत' हुनका नहि पाबी ?
[illegible] कहबनो [illegible], [illegible]
हाय, गेलो ओ दूरे, अनादृत, रोकि मे पीलहु ।

नामर्द हृदि मह तामनिशं भवो [illegible]
[illegible] [illegible] हरिहरि ।
(३/६)

हे [illegible] [illegible] कहा, की सोचि रहल छी ?
[illegible] [illegible] [illegible]
मन मे [illegible] भेट [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] हम, [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
हाय गेलो ओ दूरे, अनादृत, रोकि मे पीलहु ।

तन्वी खिन्नमसूयया हृदय [illegible]
तन्न [illegible] कुतो गतासि न तेन ते शुनयामि ॥ हरिहरि ।
(३/६)

हे प्रिय, हम छी चकित, अहाँ हमरे लग मे छी
ओहिना दहली-बुली, जेना की संगहि मे छी ।
कखनो हमहर, कखनो ओम्हर चारू कात बुलइ छी ।
[illegible] जानि किये नहि राधे, [illegible] [illegible] छी ।
हम छी [illegible] किये नहि मानिनि [illegible] [illegible]
हाय, गेलो ओ दूरे, अनादृत, रोकि मे पीलहु

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि
किं पुरैव ससम्भ्रमं परिरम्भणं न ददासि ?। हरिहरि ।
(३/८)

हे सुन्दरी ! हम माफ करू, माफ समर, अभिसार करू
हम छी कुकवनत, जे कहल करब, अपराध कैल, अभिशाप हरू ।
[illegible] पेरो, नहि [illegible] [illegible], [illegible] सुन्दरी नहि [illegible] [illegible]
नहि [illegible] [illegible] रहू, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] नहि, [illegible] [illegible] [illegible]
हाय, गेलो ओ दूरे अनादृत, रोकि मे पीलहु ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] सुन्दरी [illegible] [illegible] [illegible] हरिहरि ।
(३/९)

किन्दुबिल्व शुभ ग्राम सिन्धु सम
ताहि [illegible] मे चन्द्र जनमलाँ,
[illegible] भगवद्भक्तिप्रपरायण
[illegible] जयदेव कवीश्वरा ।

साहित्यक निस्सीम गगन मे
[illegible] [illegible] चमकल,
[illegible] गीतगोविन्दक पद [illegible]
राधा - माधव हँसला ।

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रबन्धेन ।
किन्दुबिल्व समुद्रसम्भवरोहिणीरमणेन ।, (३/१०)

हे अनङ्ग, नहिं करु तङ्ग
कहिअ किछु हमर सभ अङ्ग-उङ्ग,
छी स्वतः अनल अञ्चल अपङ्ग
पाहेनहिं स' छी हम भेल तङ्ग
की अहीं बुझल शङ्कर हमरा ?
छी रहोथि सदा निज प्रिय सङ्ग,
हम विरह विपाकेक मारल छी
काहि रहु आजवस विपलम्भ ।
एतन्नस मे कहिअ 'केकु पजरि रहल
से कोना शमन हो ? कोन दङ्ग ?
तें स्वाती पर राखल मृगनयन
तो की बुझल' ! सोकरय भुजङ्ग ?
तीं भ्रमित हुअ' लङ्के कपटेसि
छि भेल विधें नहिं नीक रङ्ग
कीलनकारक काहि नीक बुझ
से बेसहे किये छ' हमा दङ्ग ?
हमरा पा नाहे दीह' कोनेरे
तजल' दीभा चह तीर - धनुष,
हाथे ठ' त' भरा काहे दु हाँ मन्द
ओ' शिव पर झाड़' जापन खुनुस ।

हृदि विसलताहारो नायं भुजङ्गमनायकः
कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः ।
मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि
प्रहर न हरभ्रान्त्या'नङ्ग 'क्षुधा किमु धावसि ? (३/९१)

तो खेल खेल मे जग जितल'
हाहे सृष्टिक तों छ' पहिला,
सिद्ध मुनी योगी भूपति सभ
जीव तोहर छाथ बहिला
महाप्रभावी पराक्रमी तों
जाग मे बाण उकासय,
हमरा पा मे तोर चलेने
निन्दित छे पुरुषारथ ।
गाछ' शाक आम्र बाण तों
ताकस सुन्दर नीशा क'
हम त' पाहने हीं मुर्छित छी
प्रिया विरोग सोगा क'
हमरे मन मे जनमल छ' तों
तें मनसिज कहलहु छ',
मुनेक आग्र सिनेहक परिणति
हे चञ्चल पाहन तेहो छ' ।
जगतो पर क्यों कुछ भरोसा ?
कामी नाहे बुझल छ ?
[illegible]
[illegible] छ ?

प्राणी मा कुरु चूतसायकममुं मा चापमारोपय
क्रीडानिर्जितविश्व मूर्च्छित जनाघातेन किं पौरुषम् ।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिज प्रेङ्खत्कटाक्षशुभ्र -
श्रेणीजर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि सन्धुक्षते ।। (४/१२)

हरि हतवा, सोचथि मोनहि मन
बात कतेको तरङ्गक,
ध्यान गेलनि पुनि राहि एम पर
देखलनि किछु अकरङ्ग ।
कोना भेला मनमिज जग-जङ्गमे
जत'-तत' घूमइ छाँटि,
कत' धाकोल सभ अस्त्र शिलाण
जइ सँ जग जीतइ छाथे ।
मइन चाप त' राधे के छानि
भ्रूपल्लव धनु मारक,
कर्णपालि छानि दोरि धनुषके
नयन-कटाँक्ष बाणक ।
कामायुध के स्वामिनी राधा
कामातीजय-देता छाथे
पाँचि अनङ्ग कला युत आयुध
त्रिलोकेजय पावइ छाथ ।

भ्रूपल्लवं धनुरपाङ्गतरङ्गितानि
बाणा गुणः श्रवणपालिरिति स्मरेण ।
नस्यामनङ्गजयजङ्गमदेवलक्ष्मी-
मस्त्राणि निर्जितजगन्ति किमर्पितानि (३/९३)

भृकुटि चढ़ल धनु पर आरोपित
नयन कटाक्षक तीर,
जतबा मारब से हम धाबब
हे राधा बिनु पीड़ें ।
भल कच पाश लपेटि देह के
प्राण कण्ठगत सोचथ,
अधर बिम्बफल बाहुल प्रभा से
ज्ञानि - मति चित के मोहथ ।
भृकुटि केश का बाँकिम नयनक
कुटिल स्वभाव विदित अछि,
अधरक छानि प्रकृति रागमय
हँ जे वरय से सहजहि ।
मुख मारब हाँ बालक कोटी जे
बतुल इन्दुमण्डल,
मदहृतिक आगार बनल अछि
प्राणक लेल अमङ्गल ।

भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशिखो निर्गत्य मर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलः करोति कबरीभारोऽपि मारोद्यमम् ।
मोहं तावदयं च वन्हि तनुर्बिम्बाधरो रागवान्
सद्वृत्तः स्तनमण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ? (३/९४)

अचरज एक स्वयं भवना पर
लोगय, एना किये अछि,
हमरा करी हुनके मे नित हम
तइयो विरह किये अछि ?
हुनकहि मॉसक संस्पर्श बनि
मज्जरि सुरभि बइह अछि
हुनकहि देहक घुरन रोम से
नेहक कम्प बनल अछि।
चञ्चल नयनक भ्रमण हृदय कें
मादिखन अछि रखइ अछि,
हुनकहि कमलानन दर्शन नित
मूर्तिके मुखबोध दैत अछि।
हुनकहि वाणिक वाद्य श्रवण ने
अमोघ रस घोरइ अछि,
बिम्बाधर छाबे अरुण प्रकृतेक
सुषमा मास बनल अछि।
हुनकहि कुन्तिलक स्पन्दन
यौवन हमर बनल अछि
रूप, शब्द, रस गन्ध, छुअन अति
मति अनुभूति बनल अछि।
तइयो कहि नहि किये मनक हे
करुणेम दशा बनल अछि,
चैतन्य पटल प्रकाश मनस्थल
जीवन तेजस्वल बनल अछि।

तानि स्पर्शसुखानि ते च तरला दिव्या दृशोर्विभ्रमा
स्तद्वक्त्रामृत मन्मथो स च सुधाहस्तो गिरां वक्रिमा।
मा बिम्बाधरमाधुरीति विलयं यातु चेन्मानसी
तस्या लालसमाधि, हन्त विरहव्याधिः कथं वर्तते॥
(३/१५)

श्रीभगवान कटाक्ष मनोहर
कुर्मि जेकाँ तट पावै,
राधा-स्नेह पयोधि सुधामय
शशिमुखि के दुलरावै।
बाँसुरि वादन-लीन मुरारी
स्नेहाधिक्य प्रभावें,
ताकथि एकमूर राधा दिस
गोपानि बूझि ने पावे।
चारु माथ चञ्चल माथो मुकुटक
झूलैमय कुण्डल डोलय,
प्रेमक छेला देखेत राधा मुख
भक्तक हित अनुमोदय

निर्विक्लिष्टगोपीतोलमीलितलोलमस्य अंशोन्नत
हृष्टिस्थान कृतावधानललनालक्षैर्न संलक्षिता
सम्मुग्धो मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेन्दौ सुधा
सारे कन्दलितश्चिरं ददतु वः क्षेमं जरद्गोपिका
(३/१६५)

चारिम सर्ग

स्निग्धमधुसूदन

यमुना-तट पर खिन्नहृदय हरि
गुम-सुम निविड़ कुञ्जस्थलि,
बूती बानि राधा-सखि अयली
करुण बोल मे बाजलि ।

यमुनातीरवानीरनिकुञ्जे मन्दमाश्रितम् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिकासखी ॥ (४/१)

चानन मन नहि भावय हुनका
जो छिक विरहक भीतर,
चन्द्र किरण सेहो भरलक्ष्य छनि
मलयानिल विष बाभन ।
काम बाण मे जुगनेकित मे
जोड़ैक कारण ताकइ छथि,
ध्यान जाप नामक निशि बासर
लीन मे किछु बाजइ छथि
माधव भेल जगे आते दीना,
विरहिनि खेदक मारल हीना

प्रबन्ध ८. हरिवल्लभाशोक

निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु विन्दति खेदमधीरम्
व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलयसमीरम् ।
माधव मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना ।
सा विरहे तव दीना ॥ (४/२)

काम-बाण के जुगिरल वर्षी
रहा कवच बनौली,
कन्तस मेघइसन मधुसूदन
तिनका केना बचौली ?
पुरैनिक भाजल मातक जाल
बनौलनि छाती भीषक ढाल
साँपे छाँटे मणिक स्वप्न मे लीना
विरहिनि खेदक मारल हीना ।

कुवलयनिपतितमदनशरादिव भावयता विशदतरम् ।
हृदयमपि तवैव कोपे सजलनलिनीदलजालम् ।
सा विरहे तव दीना (४/३)

कुसुमक सेज न काइ बनाये राखे रुचि
जनिके कुसुम शर कामक,
मलय समीर अनेसरे से विरहक
छत भारे जनिरामक ।
कुसुमक सेज सुतलि रति करती
प्रिय के से मनमोही,
मनहे मनहि कल्पित सुख पावथि
छटपट होथि पराही
पागल तकिया पीन सलनम
सुरभि के नाजेम निरल मकाम
माधव परिरम्भन वर कहना
विरहिनि खेदक मारल हीना ॥

कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम् ।
व्रतमिव तव परिरम्भसुखाय करोति कुसुमशयनीयम् ॥
सा विरहे तव दीना (४/४)

फुल्ल कमल विकसित कमलानन
दीर्घ नयन नारायन,
निर्भीगो भदबारे बनल आहे
दुइदुइ लाल ओड़हुल ,
लगय राहु हबकल चन्दा के
झमझम झमरित झहराय,
हारल वियोगे दगधल मानस
जीवितेक पथ मो बरसय ।
चन्द्रमुख आरो भेल मनोहर
कमलनयन झमुनधार पड़ाय ।
लगइ आहे शाह हमे रस होना
विरहिने खेदक मारल दीना ।

वहति च चलितविलोचनजलभरसाननकमलमुद्गमम
विधुमिव विकटविधुन्तुदपरिवलितमवितथमृतधामम ,
सा विरहे तव दीना (४/५)

कमरी मरि घोरे एकाते
रचहि [illegible] हाथे माथ
कामदेव घोरक बाना बुझि
अलकुल मूल पाहुन ।
हाथ धराबहि आमक मञ्जर
कामक बाण कमूके ,
जाहन मकर बना बरसाबहि
पूजाहे फूल अतु ने ।
हरिक छवि देखहि हम मनक
भ्रमित भाते कहबि हाथे [illegible]
[illegible] हाथी नेना भलो सुधे होना
विरहेने खेदक मारल दीना ।

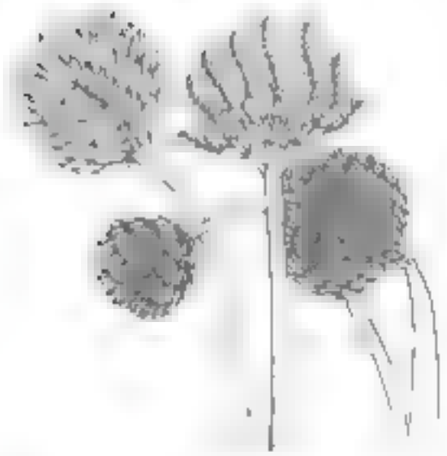

विलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम ,
प्रणमति मकरमधौ विनिवेश्य करे च शरं भवदूतम ,
सा विरहे तव दीना ! (४/८)

विरह दशा हानम सीढ़ी पर
आइल बैसहि हरि सम्मुख,
चित बेहि मुसुकयि नाथ्यानयि
लालेहुन लै उन्मुख ।
चित नमनु बोलय पैंजिनाथ ?
हाँ लाजु लाग्य जानय
पुनि सोचाहि सुनला नहि माधव
सम्मुख लाग्यहि लाजय
दिनोदिन बढ़ति जाय लालसन,
लाजय बाजय हैमन मनहि मन
कहे हम नहीं ध्यान मे रहना,
विरोहाने रमक माहन देना

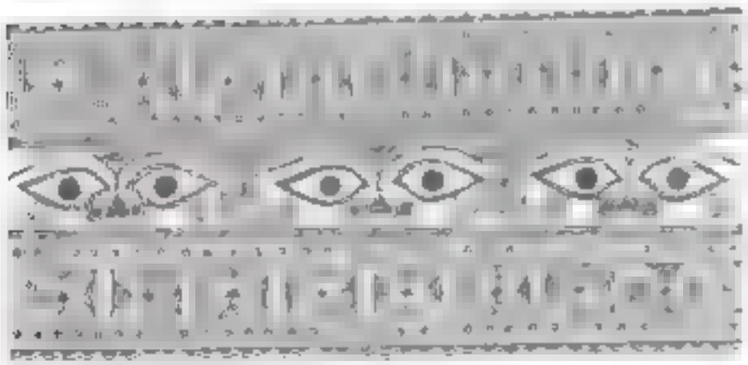

ध्यानस्थोन पुरा परिकल्प्य भक्तमसीव वृषम
विश्वपति हसति विषदति रोदति चर्चाते मुहुर्ते तायम
सा विरहे तव दीना ! (४/८)

चित छोड़े घूमहि नैं कहनो
हेरा हेरा पर नाचहि,
चिलग कहा सैं हेरहतहि माधव
लाज्यमोयो होकराखोय ।
हमकर नारि बिनाश प्रियतम सैं
हम क्यो आँखि टेढ़ाबहि,
मा मोके, लाजमेक भाना
चान मेरे दगाधाखोये
हरे हम चरण कहोक समय छी,
किसहुँ पुरुक ने बोलि सकू छी ।
चरण रज धारि नाट मोनहोना,
विरोहाने खेदक माहन देना ।

प्रतिपद मिदमति निगदति मधुरं नव चरणे परिणामम
त्वाय विमुख मपि मयोह मुखानि तनुते तनुकामम ।
सा विरहे तव दीना (४/९)

श्रीजयदेव कवेरिदं विरचितं
हरि मधे सुख भाणना,
नाटकाय विधि में रम योग्य
गीतगोविन्दक काव्यिना ।

श्री जयदेवभणितमिदं सुखिनं यदि मनसा नटनीयम
हरिचरणस्मरणजनितयुवतिसुखवंचनं पठनीयम ।
सा विरहे तव दीना ! (४/१०)

हे माधव [illegible] विरह में
सब किछु [illegible] गमायल,
मन-चित बिगड़ल देह गेह भेल
देह तिरपन समायल ।
मलिक सङ्ग [illegible] फनाह
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

केशव राधा जाहीं विरह में ।
दुबरि देह कासक कामलाङ्गी
[illegible] भार बनल खानि,
[illegible]
[illegible] बोझ लदल खानि ।
कानुकमधु हर [illegible] मति के
[illegible] दरा [illegible] मन में,
केशव, राधा जाहीं विरह में

[illegible]
[illegible] ।
राधिका तव विरहे केशव (४/११)

प्रबन्ध ६ : स्निग्धमधुसूदनरामावलयः

[illegible] राधा
[illegible]
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible]
केशव, राधा जाहीं विरह में ।

[illegible]
[illegible] ।
राधिका तव विरहे केशव (४/१२)

मदन दहन के विरह दण्ड बुझे
मह जोहैं सखि अलकावलि,
धीकनी भेल हृदय राधा
नेत्रस्वासक [illegible]
अपसेउनि छाड़ अयनहिं छाड़ै
चैन पड़ै नाहे तन मे
केशव राधा अहैं विरह मे

[illegible]
मलनदहनोमलवाते मदनम
राधिका तव विरहे केशव (४/१३)

मलकाकुलित कमल बिनु नालक
जिना लहरि पर नालका
तहिना सखि अकुलायल नयने
दिशा-दिशा मे तकया।
[illegible]
[illegible] मन मे
केशव, राधा अहैं विरह मे

दिशि दिशि विगलित मलकजालम
नयननलिनेनामेव विगलितनालम।
राधिका तव विरहे केशव (४/१५)

किंकर्तव्यविमूढ मनस्थिति
वहय अहानोक घेरने,
सौंकहि हाथ माल तर राखथि
सुमसुम बाह खसौने
[illegible]
[illegible] नाभ मे,
केशव, राधा अहैं विरह मे

[illegible]
[illegible]
राधिका तव विरहे केशव (४/१४)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
केशव राधा अहैं विरह मे।

नयनविशयमपि किसलयतल्पम
कलयति विहितहुताशविकल्पम।
राधिका तव विरहे केशव (४/१६)

अपने प्रणतजनेशमाशान छी
तै ई बात विचारू,
मरणसन्न कृपाश्रय हरे हरि
कावहु प्राण उबारू ।
हरेक नाम जै अन्त होय जँ
दशन आगिला जन्मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

हरिरिति हरिरेति जपति सकामम् ।
विरहविहतमरणेव निकामम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ॥ (१/४८)

श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते
वैष्णव-जन सुख पावाओ,
राधा माधव मिलन विरह गते
जै कयो आदर गावाओ ।

श्रीजयदेवभणितमिदं कुरुते
सुखयतु केशवपदमुपनीतम्
राधिका तव विरहे केशव (१/४९)

[illegible]
हमर सखी राधा के केलक
[illegible] महाज्वर कायक
कौनो चिकित्सक व्याधिने बूझय
की उपाय कोनेरा जक ?
शशिमुख के लक्षण अभरा
तेहने संकट भारे,
बीच सकल छनि जीवन औ पथ
देखयु विद [illegible] ।
कहलनहुँ साँझे रोमाञ्चित होइ छथि
[illegible] करइ छथि,
[illegible] होइत छथि
[illegible]
बिनु काजे क्रीड़ा [illegible] मे
[illegible]
[illegible] पथ पर
[illegible] ।
[illegible]
[illegible]
[illegible] समय
[illegible]
[illegible] अपनी [illegible] निकलनीरे।

[illegible]
[illegible] प्रमोदे [illegible] सूरदेव [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] प्रमोद से [illegible] [illegible] (४/६)

निपतन सुरगण-कल्याणक हित
आदिसिंह कीन्हिये जनमलहुँ,
कुन्दक राज केवल निष्कण्टक
तें उपेन्द्र कहुयलहुँ।
आवेनि हें बदि सुन्दर अपने
गुणक आगार [illegible]
[illegible]
[illegible] आने
[illegible]
[illegible] कनिन [illegible]
[illegible]
[illegible] आपनके [illegible]
[illegible] कहायब

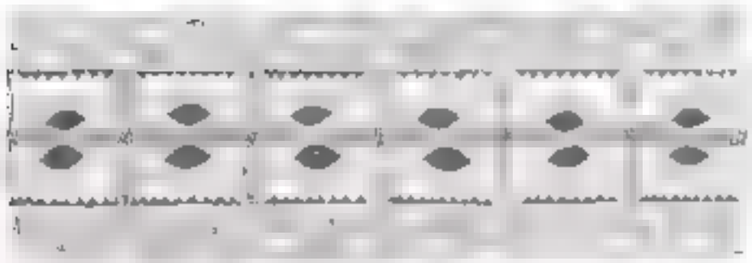

[illegible] दैवतवैहृद्य [illegible]
निवृत्तबाधां कुरुषे न राधामुपेन्द्र वज्रादपि दारुणो'सि॥
(8/20)

[illegible]
[illegible] नाँ,
[illegible] छनि
[illegible]
[illegible] नहाँसे।
[illegible] धनि
[illegible]
[illegible]

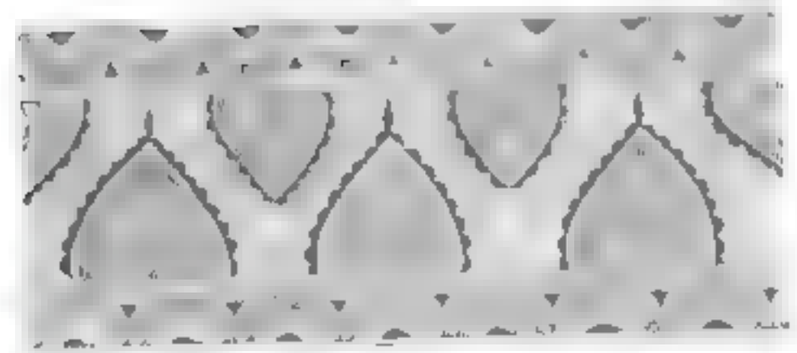

कन्दर्पेक्ष्वसङ्ग्रहानुकलनोरश्चीमयाश्चिरं
[illegible]
किन्तु [illegible] शीतलमनु [illegible]
[illegible] (८, २१)

माधव इहि मैं पूर्व हमर सखि
[illegible] भरे बिलगा न भेलाथि,
कैऊहा कहय विरह दुख से किछु
[illegible] बुझि [illegible] पेलाथि
सखि मैं पूछने हमर सखीके
पलको समान नाहे भावय
निमिख [illegible] परोक्ष होथिनाहु
[illegible] चाहय
[illegible] से [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

पाँचम मर्ग

आकांक्षपुण्डरीकाक्ष

सुनजनि सम सम्वाद मधी हैं
दशा जानि मन मे अकुलयलना,
"कम होइ हैं रहि बाट तकइ छी"
प्रणतपाल मधुसूदन बजला
जैसा अनुमाने तहिना समझा क'
लिखनी कै हुनका ल' आनू
अहलीने बमहू बहुत बिकल छेथ
हुनक प्रमान [illegible] हुँ भानु

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] पुनर्जेगाए [illegible]

(४/१)

प्रबन्ध १० : हरिममुदयागरुड:

सखि हे, माधव विरह-विकल छथि
मलयानिल छुबि कुसुमे फुलायल
विरहि जनक मन काम जगायल
समय अनन्तक तुर आगे मे
दिन दिन करि रहल घाये
सखि हे माधव विरह विकल छथि ॥

वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय।
स्फुरति कुसुमनिकरे [illegible] हृदयदलनाय
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति ॥

(४/२)

ध्यान ज्ञान कलि काम उद्योगल
कलिजी नहि मन्ताय परस्वल
कामदेव विह्वलाने पञ्चकशर,
मरणासन्न बनल छथि।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि॥

वहति शिशिरमयूखे मरणमनुकरोति
पतति मदनविशिखे विलपति विकलतरेऽति।
तव विरहे वनमाली सखि सीदति॥ (४/३)

भक्षक गुरु श्रवण तीरहु छनि
हमर र गेहे कोकिल कीरहु छाथे
विरह-विकल तन मन मुरुकायल
भव-भय रोग धरहु छाथे।
सखि हे माधव विरह-विकल छथि॥

ध्वनित मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति,
मनसि कलितविरहे निशि निशि रुजमुपयाति
तव विरहे वनमाली सखि सीदति॥ (४/४)

ललित धाम के त्यागि विपिन मे
पुर-कलरव के त्यागि विजन मे
कुसुमसेज आजि सीताछि भूमि पर
नाम पकड़ि कुहरहु छाथे
सखि हे माधव विरह-विकल छथे

वसति विपिनविताने त्यजति ललितधाम,
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति॥ (४/५)

कवि जयदेव कहथि पाठक के
हरिक कृपा भेटलो भरि छाँक
विरह-विलास हरिक सरसाबय
जे कयो श्रवण करहु छाथि।
सखि हे, माधव विरह विकल छथि॥

भणति कवि जयदेवे विरहविलसितेन
मनसि रभसाकूते हरिरुदयतु सुकृतिन।
तव विरहे वनमाली सखि सीदति॥ (४/६)

जाहि दिवस मे पहिल प्रेम हरि
कामक बाण सँ मिलबलाने,
आइ एक मह गेले रभस तन्त्र मे
कामकला रस पेलहु पीनाने।
ताहि महोत्सव निकुञ्ज मे
मन्मथ मनन कर्म करहु छाथे,
कुचकुम्भक आलेहु न इच्छहि
पाँह चूकि बालक मन्त्र अपड़ छाथे

पूर्णं रत्न मम त्वया रतिपतेरासादितः सिद्धये
स्वस्मिन्नेव निकुञ्जमन्मथमहातीर्थे भुजंगोऽधुना।
ध्यायन्त्वा मनसा अनन्यमनसा तत्रैवाहमप्यन्वहं
भूयस्त्वं कुचकुम्भनेमरपरीरम्भामृतं वाञ्छसि (४/७)

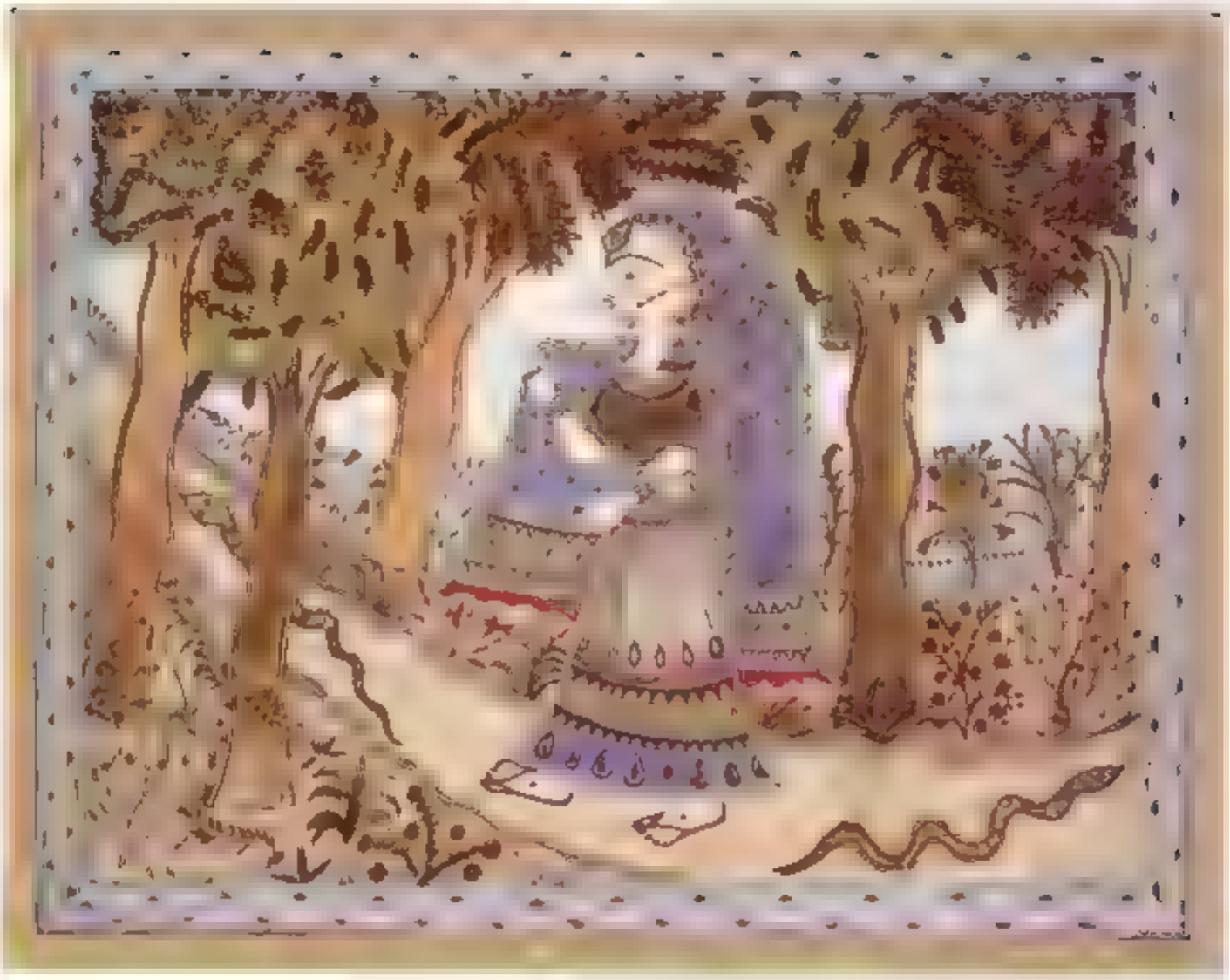

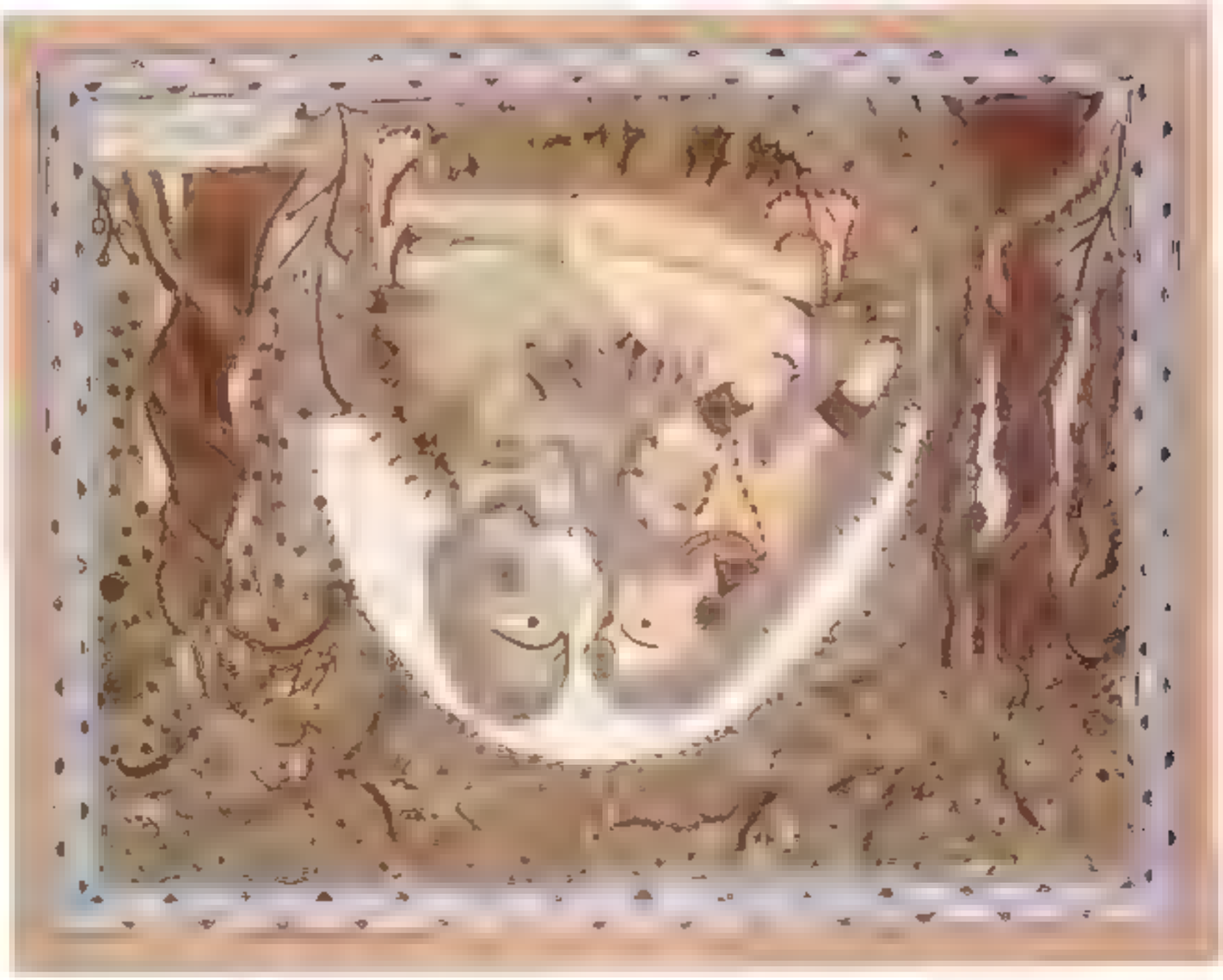

प्रबन्ध ११ : स्वच्छन्दप्रदोषोदयः

ललित नितम्बिनि हे सखि राधे
जौं विलम्ब हो तौं पछतायब,
जौं चाही रतिसुख अनमोलक
चौठहि काश बहुत किछु पायब
आइ हरिक रूपो अलबाले
लाहेना अद्भुत रङ्ग जमइ छनि,
आहिक अपन हृदयेशक दर्शन
सभ रहें अभिरम लगइ छाने।

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेशम
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम ॥
(४/८)

मन्द मन्द मह, गन्ध मधु तनु
कालिन्दीक तट महकी दिशाके,
चञ्चल कोर पयोधर मोहन
सुन रम्हर सन कोमल डोलाओ।
अोतहि फलक जामन ठेकान पर
मधुकरक किछु धूम हँसइ छाथे,
अहीं शरीरक हलुअल पवन कें
पारिमल बूँ के मृदु पानकरइ छाथि।

धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली
गोपीपीनपयोधरमर्दन चञ्चलकरयुगशाली ।
नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदुवेणम
बहु मनुते ननु ते तनुसङ्गतपवनचलितमपि रेणुम । (४/७)

पातक मृदुल ओघान-बिछाओन
आहिक लेल रचि-रचि जनबइ छथि,
शाघाक कोंनो पात हसैं जौं
चौंकि हठात मुही हुमबइ छथि।

पतति पतने विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम ॥
धीर समीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥(४/७०)

भरुखरि सकने भोंक पहल जहिये
भने अन्हर मगर परसल आछे,
सकने मे तौं नील दीपछटा
औंढ़ि छिटा ओ जे झलफल आछे।
पसरल नूपुर बहल बजइ छथ'
हे सखीगो सभ बात बिसारुत
एकरा पाहेने खोजि निकाल'
मुन्दर सुन्दर सुन्दर वदन पसारल।

मृदुतरमधीरं रचयत सखीरं रिपुमिव केलिसुखीनम
चल सखि कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलम।
धीर समीरे (४/७१)

अहा ! केहन होयत अनुपम सो
दृश्य अलभ्य नितान्त अलौकिक,
रति-विपरीत निपुण विधि-आगरि
चढ़ल कन्त पर रति-रण सौनिक
पीअर गौर कान्ति तन साँवे है
जलधर मेदुक चर्म समायत,
जेना मेघ पर बगुलाबहसल
मौतिक माल विद्युतीक बुझायत ।

तुरसि मुरहिरपतिहारे घन इव तरल बलाके ।
नहि दिव रीते ! रतिविपरीते राजसि सुकृत विपाके ॥ धीर
(५/१२)

नमितनयने हे सखि बन्धुरगीते
कामकोटर मन्दर हृदय हारे के,
देखितहि हँसक वस्त्र खसल भू
टूटल फान अकट कराधनि के ।
रत-रत गौर अनावृत जाँघक
सहस होम सिहरत-कुलसायत,
पल्लव सेज सम्हारि धरी तन
क्षण मे माधवमय भे जायत ।

विगलितवसनं परिहृतरसनं घटय जघनमपिधानम् ।
किसलयशयने पङ्कजनयने निधिमिव हर्षनिधानम् ॥
धीर समीरे जमुना तीरे ....
(५/१३)

हे हठ मानिनि मान तेयागू
हरिओ छथि मानी-पराधीनी,
तखन मना मे काज चलतकी?
विलखल व्यर्थहि दुनू परानी।
काहेयो दुनू एकाह होयत पुनि
उठल जेहन अछि मन मे बिहरी,
मनमथ शाख आ कलनबहुत पाँति
अनसोहात आ होयत अलाहि करी

हरिरभिमानी रजनिरियानी मियमपि याति विराममम
कुरु मम वचन सत्वरमधुना प्रथय मधुरपुकामम ।
धीर समीरे यमुना तीरे (५/१४)

श्रीजयदेव हरिक पद सेवल
रचिकविता रमापीक रति- रङ्गक,
प्रमुदित भेला सकल रस नागर
कृपा अनूप सरस श्री सङ्गक ।

श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम ।
प्रमुदितहृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृतकमनीयम ।
धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली ॥ (५/१५)

हे सखि राधे, प्रियम अहाँके
काम विदग्ध अकाह बेकल छथि,
दीघे निशासे बेकल भेला हरि
राति अन्हार दुरहु चलल छथि ।
गुञ्ज गुञ्ज स्फुट अन्हार निकुञ्जक
पथ पर आ[illegible] भाँति [illegible],
[illegible] कतहु नाहि दूर दूर [illegible]
हिआ हरण पलटइ छथि शयने ।

[illegible] मुहु, [illegible] पुनो महीजाते
[illegible] मुहु, [illegible] गुञ्जनमुहुर्मुहु [illegible]
[illegible] मुहु [illegible] मुहुर्मुहु
मदनकदनकानन्तो कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥ (५/१६)

[illegible] दिन शीतल
[illegible] मेल मे [illegible],
[illegible] हम [illegible]
[illegible] पाहो से [illegible] ।
हे सखि राधे, आन्हर चेतू
[illegible] छोड़ि जलो [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
मदन-कुमानक रोख ने राखू ।

[illegible] समयमधुना [illegible] गतो
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सान्द्रताम।
लोकानां [illegible] सदृशी [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ।
(५/१६)

अचरज भरल अकड़हर कौतुक
अहि अभिसारक कथा सुनइ छी,
चोखा में अथवा चोखा दै
आन आन सँ मिलै अनइ छी।
राति अन्हार सघन गाछी मे
खास समय निर्जन चैन्हास पर
पृथक-पृथक कामी ठेकनालय
भटकै पुरुष आनक ठेकान पर।
राधनुक जे अहि मिलन 'पेकुआमल
भानचिन्हार कु प्रेमी भटकल
[illegible]
[illegible]

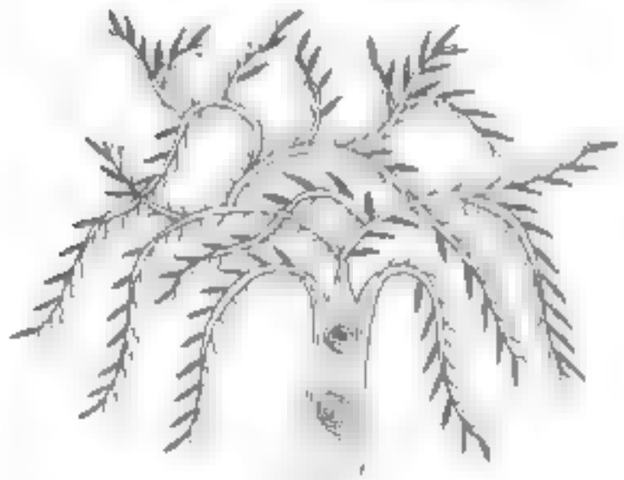

आश्लेषादनु चुम्बनादनु नखेल्लेखादनु स्वान्तज
प्रोद्बोधादनु सम्प्रयोगादनु रसाद्भावादनु प्रीतया।
अन्योन्यं गतयोर्भवान्मैलितयो सम्भाषणैर्जीवतो
दैवात्योरिह को न को न तमसि क्रीडाविनोदो रस
(४/१८)

हे सखि सुमुखि, जते किछु कहलहुँ,
राखब मन चित मानस दमाने,
इसकर राति अन्हरिया पथ पर
भय कैं टारित कर प्रयाणे।
गाछ-गाछ तर कते बिलमि कें
चाँद काल अकानि सहारि कें,
समयक बूझि कें देश बहारी
पहुँचक अहि सँ बात जानि कें।
जँ जँ लोग ठेकानक जायब
मन चमकत बिन तारु सुहायत,
दुरंहे सँ हो देखि लजकता
पल में भरल पहान जुड़ायत।

[illegible] त्वयि
[illegible]
[illegible] रह प्राप्तासङ्गे रुनद्धु तरङ्गे
सुमुखि ! सुभगः पाथःस्थस्त्वामुपैतु कृतार्थताम् ॥ (४/५६)

श्रीमद्-मुखकमल भृङ्ग मन
त्रैलोक्यक नाथ नीलाम्बुज मन,
[illegible]
[illegible]
[illegible] जे दानव
[illegible]
[illegible] धूमकेतु आने
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
कंसध्वंसनधूमकेतुरवतु त्वां देवकीनन्दन (४/३०)

छठम सर्ग

धन्यवैकुण्ठकुङ्कुम

सखि परदोषलि
राधा मानाल
ठाढ़ भेली तन कौंपय,
एर थर दम नहि
पैह सकै नहि
सांस चमे नहि हौंफय।
साहस केलनि
हेग अटोलाने
तलमलाय पुनि स्वसखी,
सखी सम्हारनि
आशा करनि
सला हाँहे मे रखली।
राहि हाँहे मे
दुनो पाश मे
धैरफराय सखि बढ़ली,
कामसमन्द हारे
भोलक भीम भरि
माधव हे सखि बजली।

अथ तां गन्तुमशक्तां चिरमनुरक्तां लताग्रहे दृष्ट्वा।
तच्चरितं गोविन्दे मनाहाजमन्दे सखी प्राह।
(६३/१)

प्रबन्ध १२ : धन्यवैकुण्ठकुङ्कुम

हे हरि, राधा असक बनल छथि

नयन पसारि तकइ छथि दिशो दस
जे हरि पीलनि अधरक मम रस,
आतशाय विकल पड़ल छथि,
हे हरि, राधा असक बनल छथि।

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम्।
तदधरमधुरसमधुनि पिबन्तम्॥
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६४/१)

सखि हमि क' औ किछ कोइ छथि
सखासाथ सखी भूमि खसइ छथि,
'मेघलन भेल पड़ल छथि,
हे हरि, राधा असक बनल छथि।

तरुकिसलयशयनेन चलन्ती।
पतति पदानि च विकिरन्ती॥
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे॥ (६४/२)

प्रचेत मीत अङ्कुर के बन्धन
मुरमेरिये पहिरि हरिक रस रङ्गन,
दुर्बल संज पङ्कल छाये,
ए हरि, राधा असक अनल छाये।

विलिखति रहसि कुचयोरपत्रं
त्वदभिधानमपि मकरीकृतवक्त्रं।
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/३)

हमहीं दुहुँ माधव-मधुसूदन
अभरन पहिरिये ठानहिं रोदन,
मोतेभ्रम फोंस पङ्कल छाये,
ए हरि, राधा असक अनल छाये।

मुहुरवलोकितमण्डनलीला
मधुरिपुरहमिति भावनशीला।
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/४)

एकहि बात पुनि-पुनि पूछइ छाये
हे साखि, माधव कत रभसल छाये?
मन मनोभव भरल छाये,
ए हरि, राधा असक अनल छाये।

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्
हरिरिति वदति सखीमनुवारम्।
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/५)

मेघ-अन्धार हरिक छवि बूझलि
दौड़लि चूमलि धरि पँजिआनलि,
मति भासल बादल छाये,
ए हरि, राधा असक अनल छाये।

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम्।
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम्।
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/६)

जो पहिले कुचन नखक्षत बूझलि
लाज लाजनि बड़ मन पछताओलि,
हरि सम सखी अनल छाये,
ए हरि, राधा असक अनल छाये।

[illegible]
[illegible]
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/७)

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम्
रसिकजनं तनुतामतिमुदितम्।
नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे। (६/८)

वह सैलाड़ भगवान आहीं छी
नारेक हाल ने किछु जॉनइ छी,
ऊँच पजारे चूल्हि सुनगाओल
आगी को ही, नाहे बुझइ छी?
ओ छाँहो विरुक चरन बिन्दु पर
अदहन जेना छलकि गेल हो,
शब्द करै हुड़ - गुड़ गुड़ घुड़ - घुड़
माटिक कोना चटाके गेल हो।
भुलकल देह ठाढ़ रोमाञ्चले
मोहन मा घटजोत रहइ छाथे,
जेना आँखि मे सगर समायल
अपनो देहक भोग करइ छाथे।

विपुलपुलकपालिः प्रीतिसीत्कारमन्त-
र्जनितजडिमकाकुव्याकुलं व्याहरन्ती।
सव विततय विधायाभ्यङ्गकन्दर्पवन्तौ
रसजलनिधिमग्ना ध्यानलग्ना भृशाभी॥ (६/१०)

दिन मे काज बहुत छनि हुनका
पहिरन ओढ़न सेज ओछायल,
अङ्ग - अङ्ग साजल हरि हरदिन
बेर - बेर सिरखार निहारल।
राते कतल वह मोमकिल होइ छनि
पैजन सरल मूलहु छाने मनमा,
हाथ हथौड़ा किछु नाहे पाबथे
पमरक तूर उड़य जनबासा।
सेजक काज बहुत बाढ़ल छनि
पात कलीन पुरैन अरायब
ऊँचा - ऊँट नीरा पला के
नहुले - नहुले रेखा पोहब।
तहँ पत्ता पर पत्ता [illegible]
पिपनिक मोआने गेंठ लगायब,
हो पुर सुमन [illegible]
बेर बेर सिरहाना [illegible]।
[illegible] घून सवार छाने
[illegible]
[illegible]
[illegible] देखइ छाथे।

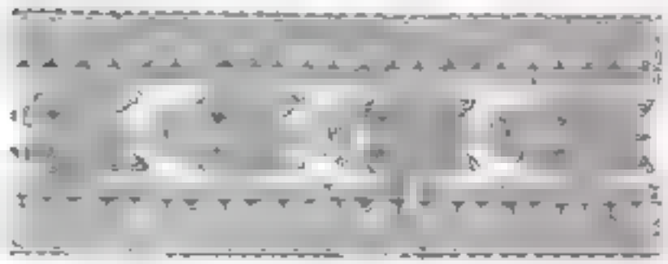

अङ्गेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेऽपि सञ्चारिणी
प्राप्तं स्त्रीपरिभुक्तमित्यतनुते शय्यां चिरं ध्यायति
इत्याकल्पविकल्पतल्पचनासङ्गत्यलीलायत
व्यासक्तापि विना त्वया वरतनुर्नैवा निशां नेष्यति॥ (६/११)

वनमाली, विपिन-विहारी
मौमक पाहुन, प्रणय सुखारी,
इत' गाछ तर की मूरल छो?
नन्दक गेह छोड़िक अगाड़ी,
जाउ आनहि सुख सौ निजि खेपब
मोलन धार सचायक उलन,
टोकरी देल पर चकमक कोपन
तह पर मेल सहज भेलैतिम ।
सघन भू नहु बीकारी अह हौ
मौम पोत हेमय कुफकारय,
पोथना मोर नगर मोरे पसारे
राधा- कृष्ण पाशय मोर जय जय ।

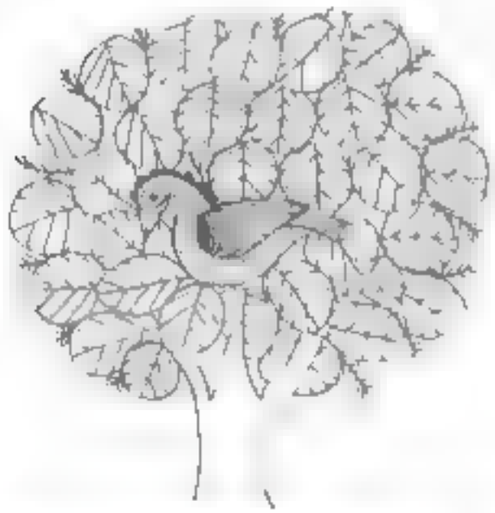

किं विद्यान्यसि कृष्णभोगिभवने भाण्डीरभूमीरुहि
भ्रान्तोऽसि न दृष्टिगोचरमित सानन्दनन्दास्पदम् ।
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गीयतो
गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथिप्राशस्त्यगर्भा गिरः ।
(६/१२)

सप्तम सर्ग

नागरनारायण

दहिक छाँछ सन चानक दगध
दुधिया रजत इजोरिया,
हैभ प्रकाश दहो दिस पसरल
कुलटा निज अहुरिया ।
जेकरा लेल अन्हरे सुखद अछि
तेकरा हित अपराधे,
केल चान है पाप कलङ्कक
मृगलाञ्छन भिसरारे ।
देशा सुन्दरी पहरे उगिटि कै
निकसलि मोद लुटाबय,
मन्द कपार तोप चानकक
[illegible]

क्वचान्तरे च कुलटावलीघात-
सङ्घातघातकतुषं सकलाक्षनयौ ।
वृन्दावनान्तसदोपरादेशु जातं
दिक्सुन्दरीवदनचन्दनबिन्दुरेन्दुः । ६/१

देखि चान थे, हुलकलि मारैत
हिति चक वातायन में,
छिपा हुएल मैं राधा अञ्जली
निरसल तबधल मन में ।

प्रसरति शशधरबिम्बे विहितविलम्बे च माधवे विधुरा ।
विरचितवाक्यावलिभं मा पपौ तामं चकोरीव ।
(६/२)

प्रबन्ध १३ : स्निग्धमधुसूदनरासावलयः

सखि हे, केकर शरण हम धाऊ।
नियत काल हरि वन नहि अयला
जीवन बुझि निरमाल भेरोला,
सखियो बुझल बेजाऊ,
सखि हे, केकर शरण हम धाऊ!

कथित समयेऽपि हरिरहह न ययौ वनं
मम विफलमिदममलरूपमपि जीवनम्
यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवञ्चिता।
(६/३)

शति विकल हलहुँ शरि वन मे
मनसिज चाहि धसाकोड़ल तन मे,
कोना मनक दुख टाऊ,
सखि हे, केकर शरण हम धाऊ

यदनुरागमनाय निशि शरनमपि प्रीतिं
तेन मम हृदयमिदमसमशरताडितं॥
यामि हे कमिह शरणं (६/४)

सहल अमर विरहानल सेमल
तदपि किये जीबी नहि अनल
भल धिक मरण बिचारू,
सखि हे, केकर शरण हम धाऊ!

मम मरणेव वरमिति वितथचेतना ।
किमिति विमृशामि विरहानलमचेतना॥
यामि हे कमिह शरणं... (६/५)

हमरा लेल मधुर मधुयामिनि
फुटल शेल सरिसहु विष वाहनि
सीतिनि जेनल दुलारू,
सखि हे, केकर शरण हम धाऊ

मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनि ।
कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी ।।
यामि हे कमिह शरणं (६/६)

मणिमय कङ्कन स्वर्णभूषण
व्याघ्रक पाहेरन सभ मे दूषण
टलहा जाने बेताऊ,
सखि हे केकर शरण हम धाऊ

अहह कलयामि वलयादिमणिभूषणम्
हारमिव दहनवदनेन बहुदूषणम् ।
यामि हे कमिह शरणं (६/७)

कुसुम माल्य पुनि हे मन धारल
कुसुमायुध बुझे मनमथ मारल
सुमन सुकोमल तन बिधबाऊ
सखि हे, केकर शरण हम धाऊ

कुसुमसुकुमारतनुमनुशरलीलया
कथमपि हृदि हन्ति मानसिजमशीलया
यामि हे कमिह शरणं (६/८)

हम बैतक वन पहुल एकाकी
हरि मन धन मन फुरयने आवी
की विधि विरह निवारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू।

अहमिह निवसामि नगणितवनवेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ।
यामि हे कामिह शरणं .. .. (८/९)

हरिक चरण रसक छनि जिनकर
श्रीजयदेव सरल गुण तिनकर
गीतक पद मन धारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू।

हरिचरणशरणजयदेवकविभारती
वसतु हृदि युवतिरिव कोमलकलावती ।
यामि हे कामिह शरणं सखीजनवचनवधिता ॥ (८/१०)

को कारण जे हरि लाहे भयला
को दोसर के रूप लोभयला ?
बन्धु सेव सह सबल भुलयला
भयका मिलनक ठौर भटकला ?

तत्किं कामपि कामिनीमभिमुखं किंवा कलाकेलिभि
र्बद्धो बन्धुभिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति ।
कान्तं केलिकलान्तमनसा मत्तापि पाणे प्रस्थातुमैच्छाम
सङ्केतकृतमधुरमुखलताकुञ्जौरे ... (८/११)

बैतक वन मे एसकरि राधा
विविध भाँति सोचइ छलि,
सखी गेल छलि हरिके आनय
छटपट दुनुक बाट तकइ छलि।
बड़ी काल पर दूती घुरली
हरिक सङ्ग नहि, एसकर अयली,
राधा देखि विषण्ण सखी-मुख
शंकित मन कें तकैं अकबकली।

अद्यागतो माधवमन्तरेण सखीमिमं त्रीष्म विषादमूकाम ।
विक्रङ्ग मानो राधेते कथाधि जनार्दन वृष्टवदेतदाह ।
(८/१२)

इतिकीडा - उपयुक्त वसन मे
मोदित पुष्प फैसल कुन्तल मे
कोनो सुकाले गुणमति रति निपुणा
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे ।

प्रबन्ध १४ : हरिमित्रचम्पककेशरः

स्मरसमरोचितवेषचिलक्षा
शस्त्रकुसुमशरासनमुक्तिकक्षा
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ।
(८/१३)

श्रीभगवानक आलिङ्गन मे
रोमाञ्चित कामिनि स्वयं रति मे
कुच-कलसी पर माला शति मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

हरिपरिरम्भणललितविकारा ।
कुचकलशोपरि तालितहारा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(६/१४)

हरि तन-आसन चढ़ि चन्द्रानन
अलस नयन चुमय हर आसन
चितरल कय भुतिकायम चन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

विचलदलकललितानन चन्द्रा ।
लवधरपानरभसकृततन्द्रा ।
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(६/१५)

हाले अलि कुण्डल दलित कपोलन
आतमय काटे घण्टो धुन घन-घन
सघन लहरे उन्माद जघन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

चलन कुण्डलदलितकपोला ।
मुखरितरसनकिङ्किणिरोला ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (६/१६)

नयन निमीलित हरि मुखकमलहि
हँसय सुधीरा हरि पुलकमलहि
रतिरस निपुणा सुरकय धुन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

दयितविलोकितलज्जितहसिता ।
बहुविधकूजितरतिरसहसिता ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (६/१७)

विपुल पुलक कम्पित रोमाञ्चित
दीर्घ सीस तन मन आनन्दित
शिथिल वदन निश्चेष्ट मगन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे ॥

विपुलपुलकपरुषतरपयोधरा
कम्पितनिमीलितविकसदनहा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(६/१८)

हरिश्रम सीकर लसपद्य तन मे
खेल समाधि सधीरज रण मे
हरिक वाह पर माथ खसीने
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे

श्रमजलकणभरसुभगशरीरा ।
परिपतितोरसि हरिणधीरा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (६/१९)

श्रीजयदेव भनित हरि रमिता
कलि कल्मष हरि करय पुनीता
सुख समृद्धि बढ़य ओगन मे
मधुरिपु सब रमय कानन मे ।

श्रीजयदेवभणितहरिरमितम् ।
कालिकलुषं जनयतु परिणामितम् ।
कार्ये मधुरिपुणा विलम्बिते सुखाकरोऽयं कृष्णः । (6/27)

हे सखि, चाहे मैं सूखकर दुबली जाऊँ
तो न मनाऊँ कोई उपाय
जाकर मैं प्राणों प्यारे [illegible] हरि से
मनाऊँगी मैं मन [illegible]
[illegible] उदास मे हमारा [illegible] होरे
[illegible] बिजली अनल [illegible],
[illegible] चन्द्र [illegible]
[illegible] मन [illegible]
नित्य सौम्य मे ध्यान [illegible] मैं
हरि मुख स्मृति [illegible]
सुमोक फूल अनल [illegible] माधव
है हिमकर हिम आश्रय

विरहपाण्डुमुखीमुखरं मुहुरतिरयं विलपन्तीं वेदनाम
विधुरसौ तनोति मनोभुवं सुहृदयं हृदयं मदनव्यथाम् ।
(6/29)

प्रबन्ध १५ · हरिरसमन्मथतिलकम्

इधर मुरारी यमुना तट पर
वन मे रमण करते हैं,
कोमल विलासवाले गोपवधुओं के
मुख पर तिलक करते हैं
चुम्बन [illegible] [illegible] मा
गालों पर चित्र लिखते हैं,
[illegible] वाण प्रवाह [illegible]
मन [illegible] भरते हैं
[illegible] शिखरों तन [illegible]
नहीं, नहीं [illegible] कुंजों,
[illegible] पर
[illegible]

समुदित मदने रमणीवदने चुम्बनजलितापे
[illegible] विजयी मुरारे रघुनाथ । (6/22)

[illegible] रमणी के [illegible] सघन [illegible]
[illegible] मन,
सुन्दर [illegible] मनोज्ञ [illegible]
मोहन युवकों के तन मन
[illegible] कुन्तल मे [illegible]
[illegible] हैं,
[illegible] तीखे [illegible]
[illegible] [illegible]

घनचरहारचोरे रचयति चिकुरे ललितवरुणानने
कुरबकसुमं चपलामुखमं रतिपतिमृगयानने । रमते
(6/23)

[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रीजयदेवहरिकृत पद सेवक
गुणगानोद्ध रास रसेश्वर,
कामकेलिपद गानकीर्त्तनकाले
कलिमल भय हरु परमेश्वर

इदं रहःभणने कुलकीरेगुणने मधुरिमपदसाके
कलियुगकेवल नवसमुद्रे कविनृप जयदेवके (६/२७)

"हे सखि, राधे"
"कह बाहिना की?"
"निठुर ने जमला"
"ते तोरा की?"
"दु हा किये तो?
ते बरोकल हो,
तोरे चाहल दुख
अपना घर जो"
"मधुर नागर ही की मेरवान हाथे
[illegible] करइ छाथे",
"एक कोरो मे तोहु मानुषो हे
बुतेक राहु [illegible] छाथे।"
"देखिअल आह [illegible] हमहु
[illegible] सखि,
हाति बनक बिच आगो [illegible]
देखो के भाकुठ करबइ आछे।"

नायक सखि विदेशी यदि भवत्यं इति किं वृथा ?
[illegible] किं तत्र ते दूषणम् ?
पश्याहं प्रियकुमाय दयितस्याकुर्वाणं गुणैः
रुत्कण्ठातिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति

(६/३०)

प्रबन्ध १६ : नारायणमदनायामः

कमलनयन वनमालिक सङ्ग
किसलय सेज सुतथ जे,
तेकरा नहि व्यापय कामनल
सखि, हरि सङ्ग रमथ जे।

[illegible]
तथा स न सा किसलयशयनेन,
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३१)

विकसित कमल मनोहर आनन
देखि [illegible] से सुखित मन,
[illegible]
मनोसिज [illegible] आकुल तन ?

[illegible]
स्फुटितं न सा मनसिजविशिखेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३२)

[illegible]
[illegible] मे [illegible]
जे नहि [illegible] हरक [illegible]
मलय पवन सँ [illegible] ?

अमृतमधुरमृदुलवचनेन ।
ज्वलति न सा मलयजपवनेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३३)

स्थलकमलकं कान्ति चरण कर
देखेत भुलायलि जे रम किंशुक,
मुतल ने शङ्क, चन्द्रकिरण में
से वानेता लोटता नहि भू पर ?

स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन
लुण्ठित न भा [illegible]
[illegible] (६/३१)

उद्धत सजल मेघ मन उमरल
रूप देखि वनिता जे भरल [illegible]
केल ने [illegible]
[illegible]

सजलजलदसमुदयरुचिरेण ।
दलयति न साङ्गे चिरतरविरहिणा ।
सखि या रमिता वनमालिना । ६/३४

[illegible]
तह [illegible] घटा
[illegible] मूलतल, [illegible] माहे [illegible]
से [illegible] पड़ल ने [illegible]

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन
[illegible] न सा [illegible]
सखि या रमिता वनमालिना । (६/३६)

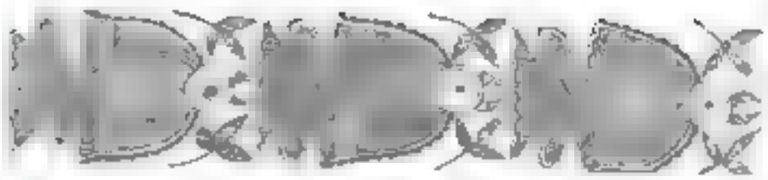

सकल भुवन मे श्रेष्ठ [illegible]
से नहि [illegible] जे बुझि बौरल,
[illegible] विरहिणी, करुणावश
[illegible] -नीर [illegible] नहि [illegible] ?

[illegible]
[illegible]
[illegible] । ६/३८

श्रीजयदेवक रससय भावक
ओल सुखर पिकबुद्धि [illegible],
राधा-कवि-प्रीता-पाठक कें
मन मुरसु नारायण नागर ।

श्रीजयदेवभणितवचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥
सखि ! या रमिता वनमालिना ॥ ६/३८

हे मलयाचल पवन सुगन्धित
दोषी अहैं कहहु,
रहौ सदा अनुकूल नाव पर
हमरे लिये सदा ?
क्षण भरि होउ सदय हमरे प्रति
हमरो प्राण बचाऊ,
कामदेव के सिंह गन्धवाह
सना ने ली के जाऊ
जेना शिखरों के लताओं के
अनुदिन ग्रीष्म के मारल
[illegible]
[illegible]

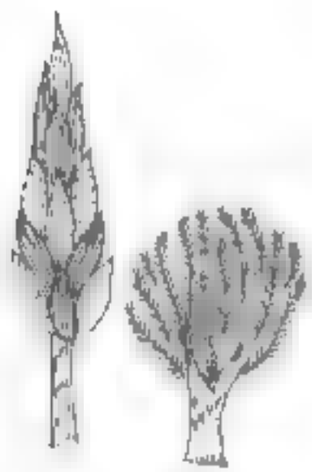

मनोभवानन्दन चन्दनानिल !
प्रसीद दे दक्षिण ! सुखं वामताम् ।
क्षणं जगत्प्राण ! विधाय माधवं
पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि ॥ (६।२५)

हे सखि, हमर मनोहर आहे दोषी
[illegible]
जेकरा कारण विरह सुहे जल
अरजल धन सन्तापक
[illegible] कृष्णा के कारण तेजल
सखी सुहृदय प्रति [illegible]
[illegible]
[illegible]
नीक ने लागय सखी [illegible]
[illegible]
मलयानिल [illegible]
[illegible] दुख कातर ।

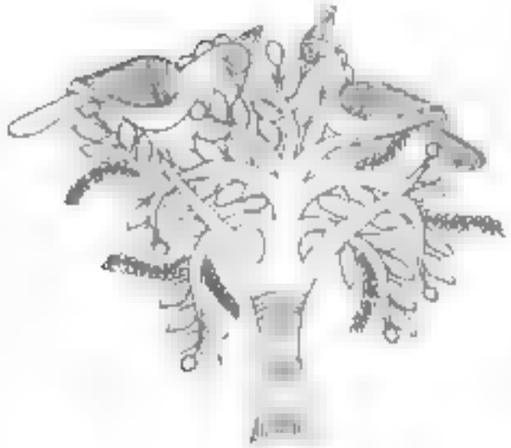

शिशिर सखी सेवासे अहे शर्वरि हिमानिलो
विलम्बिव सुधांशुरिन्दीवरमेन्दुनाथे मनोगते ।
कृशाम्बुदे तमसि [illegible] वर्ष्मवति [illegible]
कुचलकलुषं वामः कामी निकामनिगृह्णा ॥ (६।४०)

हे मलयानिल अनल ज्वालमयि
जार' भीतर-बाहर,
कामदेव, तोहू नहि चूक',
छोड़ह बाण तड़ाक
हे मधुने, तो मधुक कोकिल छ'
भल सै प्राण दुबाब',
विरह दग्ध तन शीतल होएत
सभ कयो कोनो पुराब'
केतबी दुःख सन्ताप कहै छह
दूरल छह नहि जा' छोड़ै,
जा' होइ सै पुनि मेलन होएतनहि
मोन मनहु कहैछ जा' छोड़ै।

बाधां विधेहि मलयानिल ! पञ्चबाण !
प्राणान्गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ।
किंते कृतान्तभगिनि ! क्षमया तयैव –
स्नानैः सिञ्च मम शाम्यतु देहदाहः ॥ (८/६१)

वन मे कहुना शशि विलोकने
नीन दुहुन अन्धकार,
मलय देखल कोन सुन्दर छथि
पोखर लोल कमलके
जानि केहन छल नीन स्वप्न मे
अनचोके सभ उजरा,
हरेक छह कमुकि सँ भोपल
राधा पोखर दोसरा
सखी बहिनपा ठाढि हुँमहु छलि
म राधे कोर ठमाजा,
अभहुन मन आनन्द करथु गोरे
फहरा गो पुण्य प्रताका।

卐 卐 卐 卐

प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरः संवीतपीतांशुकं
राधायाश्चलदङ्गदं विलीनमस्ति स्वैरं मणीमण्डले।
दीप्ताचञ्चलमञ्जुलं मणिमयीराधाया राधानने
स्वादुस्मेरमुखीं वमस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजे ॥
(८/४२)

अष्टम सर्ग

विलक्ष्यलक्ष्मीपति

कौनो प्रकारें राति बितौली
राधा जन-पौतर मे,
विरह उपेक्षा काम-वेदना
बान्हि अपन औंचर मे
प्रात अन्हारे अनायास हरि
राधा सम्मुख भयला,
प्रणत भाव सँ माथ झुकौने
ठाढ़ भेल बनि रहला
विकट विरह कि नीन्द मानिनी
होइ छै दोसे बगदलो,
प्रियतम देखले असूया उपजल
जे से कयल बरसलो

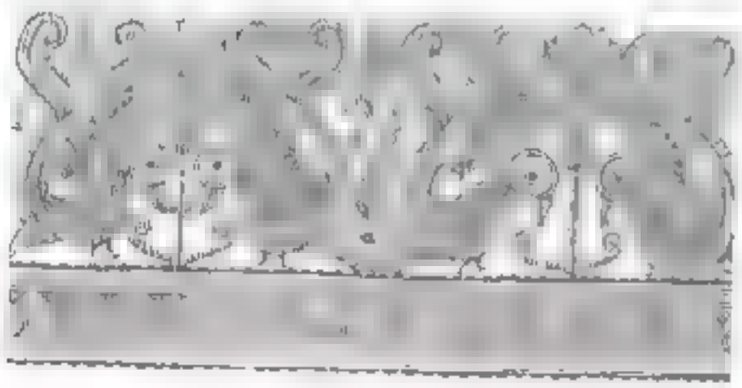

अथकथमपि यामिनीं विनीय स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभाते।
अनुनयवचनं वदन्तमग्रे प्रणतमपि प्रियमाह सम्भ्रमम ॥

(८/१)

प्रबन्ध १७ : लक्ष्मीपतिरत्नावली

जाउ जाउ हे माधव रहि हौ
ठहरक क ज उचित नहि,
जाउ अत' बैसी मुख भेटय
होइ छै फूसि चलत नहि।
कमलनयन आहे नाम अहाँके
नयन नुहाउ लोरे हौ,
हे सक हे जोछारिनि नारय
मटके मटके कर जाउ हौ।
परिनि घर मे जाकर भूतु
कोरले आतल अकहुल सन,
हमर गोते रम रहु क मातल
पर पु लाभ मुन्दरी सन

रजनिजनितगुरुजागरराजकषायितमलसनिमेषम
तव नयनमनुरागिणमेव मृषा मृदुरसयति केशम
कोप रोष रागे माधव राधे केशव माधव जिनवादम
ताम्रमुखं मम मोहनलोचन यातय प्रकटे विषादम

(८/२)

माम कृष्ण अहि वर्ण कृष्ण अहि
होर मतत करुणायल,
आह किये आहा कहि मधुमर
औ विवेक काजर लगाल।

केशजलभालतिलोचनचुम्बनविरचितनीलिमरूपम
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण ! तनोति तनोरनुरूपम ॥

(८/३)

काम केलि के भाव-कौहरि मे
उड़ु उड़ु नीलाचल,
मरकतमणि पर स्वर्ण लिखल सन
रतिजय लेख लिखायल

वदनुकृति तव कमलाकरकलनमनातेस्वम् ।
[illegible]

क्रीड़ाकानन रति-आसन मे जे
पद युग दी आगा के,
आह हृदय पर मैथुन भोगल
[illegible]

[illegible] तव हृदयमुद्राम् ।
[illegible]

[illegible]
दन्तक्षत [illegible],
[illegible] मर्मदक
[illegible]

दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव चतुरेतदभेदम् ।

(८ ६)

अहो प्रकृति हे परम शत्रु हो
प्रगत शील परमालक,
अधरनाहक सहति मे मभटा
बालि कुचालि बनायल ।

अहिरिव भवितमतं तव कृष्ण ! मनोऽपि भविष्यति नूनम् ।
[illegible]

नेत्रमलिक हे [illegible]
[illegible]
[illegible]
हमर दशा हे केलहुँ ।

भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम्
प्रथमति पूतनिकेव बधूवधनिर्दयबालचरित्रम् । (८, ८)

हे सुरगण विधुगण कवि कोविद
श्रीजयदेव हसाहसक,
रति-वञ्चित राधा-माधव के
सुनु विलाप सुखकारक ।

श्रीजयदेवभणितरतिवञ्चितखण्डितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा ! विबुधालयतोऽपि दुरापम् ॥

(८/5)

कतेक शब्द अछि रहु सिनेहक
ओहि राते लोचुम प्रतिहें,
भीतर स' से उमरे रहल अछि
पसरल विस्तृत ओहि।
ओहि बातक नहि दुःख अछि हमरा
लज्जा मात्र लगाइ छी,
दुनो आंख जे देल समर्पित
ओहो सङ्ग मूरछ छी
तेकरहि पसरक छाप हृदय पर
आहो सगर्व धरइ छी
कोरतुम मणि जइ छी सोभइ छल
धूतेक पसर छापइ छी।

तत्रेदं व्यायन्त्याः प्रसरदनुरागं बहितिव
प्रियापाङ्गालक्तच्छुरितमसकृद्गीतिहृदयम्।
समग्रं प्रत्यग्रप्रणयभरभङ्गीभिरुचितं
त्वदालोकः शोकादपि किमपि लज्जां जनयति॥ (८/१०)

हरि बनसी धुन महामन्त्र आहो
सुनहि में मन मोहन,
घुमा घुमा सिर नाचथि धुन पर
स्तम्भित - आकर्षित।
बनसी धुन मन्दार पुष्प के
दुनका में भहरायथ,
ठोनल दुष्टक कोंढ़ तोड़ि के
सुरगण सुखी बनायथ
महमी धुन बनि पाञ्चजन्य - रव
असुर प्रवृत्त पराजय,
हारे राते गान मुग्ध बोला के
बहुविधि सुख पहुँचायथ।

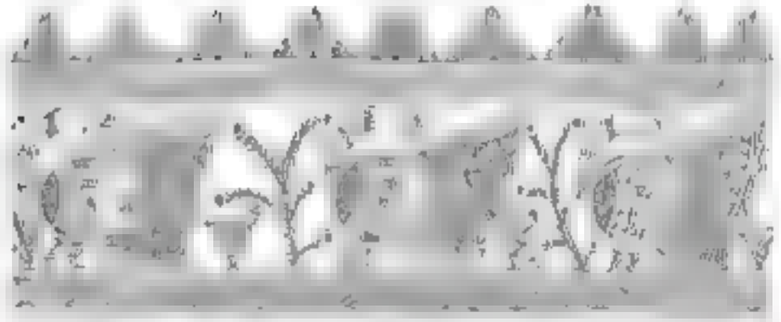

अन्तर्मोहनमीलितार्धनयनं मन्दारनिर्यातन
मन्दाकाशिणदुन्दुभिप्रणयमहामन्त्र कलङ्कावृतम
दुष्यद्दानवदुर्यमानदिनवेणुवीरदु स्वा वां
वंशः कंसरिपोर्विपीतरसतु व अस्मांसे तंशीरव।

नवम सर्ग

मुग्धमुकुन्द

[illegible] विकल खण्डिता राधा
जेह [illegible] के [illegible]
[illegible] मन [illegible] करोइ पुनि
खिन्न [illegible] कहा [illegible] ।
इति-चिर वञ्चित मन विषादमय
व्याकुल है [illegible] ,
हरि के [illegible] नहि [illegible]
[illegible] ,
सखि [illegible] मानाले
मनक [illegible] बुझलि,
[illegible] राधा [illegible]
आते [illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥
(5/१)

[illegible]
हरि [illegible]
[illegible]
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये

प्रबन्ध १८ : अमन्दमुकुन्द

हरिरभिसरति वहति मधुपवने ।
किमपरमधिकसुखं सखि भवने ॥
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ॥ (5/2)

ताडक फल हैं बाढ़ि सरस मधु
ललित कलित आकारकलस कुच
व्यर्थ करू नाहि हरि समरपू
देरि करू नहि हरि-प्रिये भामिनि,
माधव हैं एत मान उचित नहि मानिनि ।

तालफलादपि गुरुमतिसरसम् ।
किं विफलीकुरुषे कुचकलशम् ?
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये । (5/3)

त्रैलोक्यक सभ हैं सुन्दर वर
[illegible]
हरि हैं बाँटे मनोज पूरब के ?
[illegible]
माधव हैं एत मान उचित नहि मानिनि ।

कति न कथितमिदमनुपदमचिरम् ।
मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ॥ (5/4)

[illegible] विषाद किये [illegible],
[illegible] दिनक हैं [illegible] किये [illegible] ?
[illegible]
देखि हँसय सभ सखी-सङ्गिनि,
माधव हैं एत मान उचित नहि मानिनि ।

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ?
विहसति युवतिसभा तव सकला ॥
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ॥ (5/5)

[illegible] कुञ्ज में नियत ठौर पर
सजल पुरोनिक नवल सेज पर
मुखल प्रतीक्षाहत मास्त्र के
दाख जुड़ाउ पियासल नैननि
माधव हैं इत मान उचित नाहिं मानिनि।

मजलनलिनीदलशीतलशयने ।
हरिमवलोक्य सफलय नयने ॥
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ (6/88)

मन में अगाधे खेद भरल [illegible]
मुख [illegible] कहल पहाल [illegible]
हमरो बात सहो कहू मानी
होइ तन में नाहिं भेद सुहाओ
माधव हैं इत मान उचित नहिं मानिनि।

जल्पसि मनसि किमिति सुरुवेदम् ?
शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ॥
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ (6/8[illegible])

श्रीभगवान कहाँ लगा [illegible]
मधुर वचन हैं मन हरखावये
मन में रोख करू [illegible]
होएक प्रिया [illegible]
माधव में इत मान उचित नहिं मानिनि।

हरिरुपयातु वदतु वहुमधुरम ।
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये । (6/8[illegible])

श्रीजयदेवक हरिभण वंशेन
हृदयकलेम मुखद मन रचन
भक्तजनक हित पुण्य प्रसाद
रसिक लेल अनुपम मधुरासिनि,
माधव हैं इत मान उचित नाहिं मानिनि।

श्रीजयदेवभणितमतिललितम ।
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ॥
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ (6/6)

जे व्यवहार [illegible] नाहिं [illegible]
[illegible]
[illegible]
हमरो [illegible]
कतेक राग अनुराग अहाँ के
माधव मने रखह [illegible]
[illegible]
नाम [illegible] जपह [illegible]
जे व्यवहार [illegible] आहे हे ने
चानन जहर लगइ अे,
चन्द्रकिरण हैं [illegible] लगइ आहे
दग्ध तुहार कहइ अे ।

स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्भाषिणी
क्रुद्धस्यासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये ।
सद्वृत्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखण्डचर्चा विषं
प्रीतिष्वस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीडामृदो यातनाः । (6/90)

हमहूँ अपन अशुभ नाशइ लेॅ'
हरिगुण कथा लिखइ छी,
श्रीभगवानक चरण कमल पर
वन्दन करयि रहल छी।
जीह एकक परिमल बाँटि गुप्त
चित् स्वच्छन्द बहइ बाटे,
सुरगण मीलि झुकल माधव केँ
सादर नमन करइ छाथे।
झुकल मौलि मे सचेत इन्द्रभाँति
नील छत्र छिटकाबय
कमलक आशु-माहु शोभयैत
हुनि निकर मन लागय।

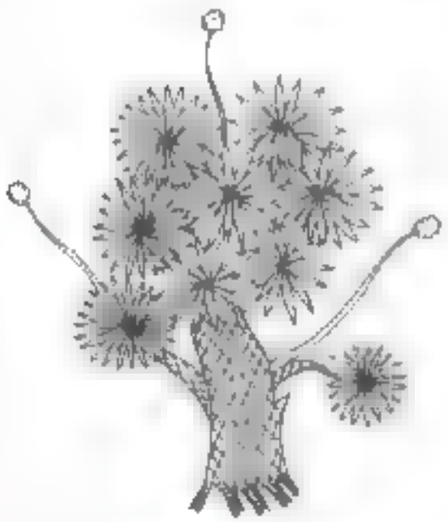

सान्द्रानन्दपुरन्दरादिदिविषद्वृन्दैरमन्दादरा
दानम्रीभूतकुटेन्द्रनीलमणिभिः मन्दारिताङ्घ्रिद्वयम्।
भक्तेन्द्र मकरन्दसुन्दर गलन्मन्दाकिनीमेदुर
श्रीमद्गोकुलचन्द्रमन्दहसितं वन्दामहे ६/११।

दसम सर्ग

चतुरचतुर्भुज

दिन भरि सखी मनावैत रहली
विविध वचन बुधिआरे सुनौली,
मनक हेरब बुझा नहि छोड़ल
राधा हृदय उछीत ने भेलो।
दिन बीतल संध्या सुरि आयल
राधा आह विकल भे उठलो,
कोमल तामस पसरल आनन
साँस निसासक बीमे दबलो।
हुनका मन मे खेद एकर ने
[illegible]
[illegible] मे [illegible]
[illegible] मे [illegible]।

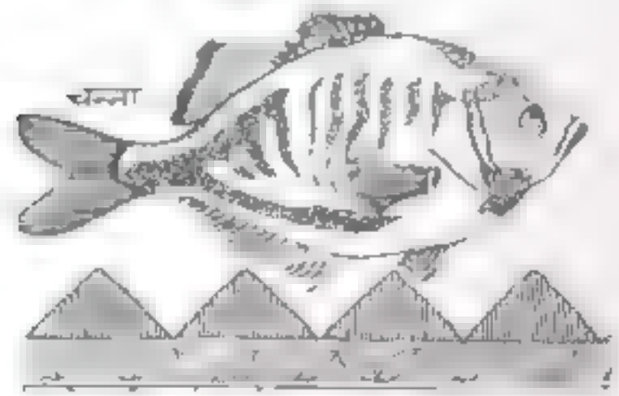

अत्रान्तरे मसृणकोमलशम्पपाणिः प्रस्वापनि सहसखी सखीभिरेव
सञ्चारमाणि सखेदधदनां दिनान्ते मानन्दगद्गदपदे हरिरेह युवाच।
(१०/१)

हे प्रियतमे ! सुधामयि, शीले !
हाममुखी किछु बाजु,
बजैत काल दन्तक द्युति छिटकत
घोर मनक तम काटु ।
तमस-हरण सँ हिअ पट फूजत
वैकल्यक हम फाटत,
नयन चकोर निराश चन्द्रानन
अधर-सुधारस चाखत ।
अहीं हमर सुखधाम, अहीं छी
तन मन नित अनुरंजोने,
सुधा मान के त्यागी मानेनी
तोय हरु अनुरागने ।

प्रबन्ध १६ :
चतुरचतुर्भुजरागराजिचन्द्रोद्योतः

वदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरम
स्फुरदधरशीधुना तव वदनचन्द्रमा
रोचयतु लोचनचकोरम ।
प्रिये चारुशीले मुञ्च मयि मानमनिदानम् ।
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं
देहि मुखकमलमधुपानम् ॥ (१०/२)

हे सुषमामयि शोभनदन्ते !
जँ तमसायल अहाँ छी,
बान्हू, काटू, देह नछोड़ू
दण्ड जे किछु जानह छी ।
भुज-बन्धन मे बान्हू हमरा
नख सँ देह भन्होरू,
दन्तावलिसँ अधर चाँपिकेँ
जे मन हो सुख-पूरू ।

मत्यसेवसि यदि सुदति ! मयि कोपिनी
देहि खरनखरशरघातम् ।
घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं
येन वा भवति सुखजातम् । (१०/३)

अहीं हमर सभ अलङ्कार छी
अहीं हमर जीवन छी,
अहीं हमर छाँहि भव-सागर के
सभ अनमोल रतन छी ।
कोना हम अनुकूल अहाँ से
सब भाँति जतन करइ छी,
मन मे कर्मेश रहैं नाहि कखनो
से अभिलाख करइ छी ।

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं
त्वमसि मम भवजलाधेरुडुपम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी
तन्न मम हृदयमतियत्नम् ॥ (१०/४)

नील नलिन सम नयन तुहाँ के
कीधें लाल लगइ छी,
तहुकायल पोखरि मे दू टा
लाल कमल होइ छी ।
जे आछे करी दुख सौं झमार
तेकरा लाल करइ छी,
हमरो कामक बाण बेधि कां
लाल किये ने करइ छी ?

नीलनलिनमिव तन्वि तव लोचनं
धारयति कैरवदलम् ।
कुसुमशरबाणभावेन यदि रञ्जयसि
कृष्णमिदमेतदनुरूपम् ॥ १०/५

कलसाकार पयोधर नख पर
मणि मञ्जरि छाले पाबाकी,
निर्मल मेल रश्मि निकरक छाती पर
स्थापित भाल लबलबी ।
मदन जहन में पाने के कार
शैलकम हुलक लाइल
घन घन भून भून गीत सुनाबइ छी
कामदेव जनु ठाढ़ल ।

स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी
रञ्जयतु तव हृदयदेशम् ।
रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले
घोषयतु मन्मथनिदेशम् । (१०/७)

हे मधुभाषिनि, ताप विनाशिनि
कर आदिश छाननिके,
कमलेतर कोमल पद-युग मे
हाथ लगाबी कानिके ।
लाठ-चरण हम आलक रङ्ग सँ
मधु मे हाथ सजाबी,
कतेक अवधि सँ उजड़ल मन मे
कामोद्रेक जगाबी

सरलकमलगलनं मम हृदयदलनं
जनितमतिलोलमुदारम् ।
भण मम कथं किं करवाणि चातुर्यं
सरसमदं नवकदम्बम् (१०/६)

हमर हृदय मे जरय पञ्चशिखि
विरह - विलेपक ज्वाला
रोम रोम फाड़ल तह लागैं
लहलह क लवा होला
हमर माथ पर राखु मानिनी
हाथल कमल कमल पद,
मनक ताप सन्ताप शमन हो
जीवन होय निरापद

मम शिरसि मण्डनं मम हृदयखण्डनं
देहि पदपल्लवमुदारम्
ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनारुणो
हरतु तदुपाहितो विकारम् ॥ (१०/८)

चतुर चतुर्भुज चालि चहटगर
बोल तेमा ने राखल,
श्रीजयदेवक कविगुण पढ़ता
जय-जय सभ जग मानल ।

इति चटुलचाटुपटुचाटु मुखैरिणो
राधिकामधि वचनजालम् ।
जयति जयदेवकविभारतीभूषित
मानिनीजनजनितप्रणयम् ॥ (१०/८)

मन मे जे शङ्का जहि आबल
तइ सँ अहूँ निकल छी,
महिने से शङ्का परिहरू
हमहूँ जरल-मरल छी ।
कहाँ सुनी हमरा मन मे छहि
परवनिता के छाया,
मुदा मे रहि मे सखा अनेको
हुँ सभदा आँखि माया ।
हमरा मन मे टीसय हरदम
अधिक वश के नीकी,
सुचिर जघन के मादक सुषमा
कामदेव के कुलकी
हमर हृदय मे आसन सदिखन
अधिक लेल राखल आहि,
बोध ताहि पर आन्हु भूलन मे
दायक मन व्याकुल आहि ।

परिहर कृतसङ्के / शङ्कां त्वया सखे मम-
मलिनमनसामान्ते स्वान्ते परानवकाशिनि
विशति कितवोऽन्यो धन्यो न कोऽपि ममान्तरं
प्रणयिनि परीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् ॥ (१०/१०)

अभिनव दण्डक अभियान करू
सुग्धे ! हम अवनत छी,
करू अधर पर दन्त प्रहारे
समुपस्थित अविरत छी।
बान्हू भुज वल्लरि मे हमरा
स्तन सँ करू निपीड़न,
कामदेव चण्डाल बनल छथि
चाण्डि करू उत्पीड़न।

मुग्धे ! विधेहि मयि निर्दयदन्तदंश-
दौर्वल्लिकन्धनिबिडस्तनपीडनानि।
चण्डे ! त्वमेव सुदमुद्धत पञ्चबाण
चाण्डालकाण्डदलनादसखः प्रयान्ति॥ (१०/११)

शशिमुखि ! बड़ विचित्र बात अछि
आनन आह्लादक अछि,
किन्तु भौंह कारी नागिन सन
युवकक हृदय डँसइ अछि
तह लिख सँ बाँचइ लेँ केवल
सिद्धमन्त्र उपकारक,
अधरक सुधा आहेनरे पीबी
सुन्दर विधेय अपचारक

शशिमुखि ! तव भाति मधुरभ्रूर्युवजनमोहकरालकालसर्पी।
तर्पुदेतभयभञ्जनाय मूर्ना त्वधरसंधुसुधैव सिद्धमन्त्रः।
(१०/१२)

हे तन्वी अछि वृथा मौन हँ
मन परितापे भरइ छी,
काँल पड़ै नहि चित मे कीहन
रहि रहि जेना मथइ छी।
तरुणी अहाँ कनिञे मन खोलू
पञ्चम सुर आलापू,
राग वसन्ती मन मधुमातल
विरह-व्यथा सभ बिसरू।
हे सुमुखी ! मन्त्रापकरू नहि
रूठ विमुखता छोड़ू,
हमरा नहि छोड़ू रहि तरोँ
भावक जड़ता तोड़ू।
हे सुग्धे ! हम हाजिर छी भल
प्रियतम विकल अहाँके,
एक बेर ताकू भरि नयने
हँटत सकल दुख तापे।

व्यञ्जयन्ति वृथा मौन तन्वि ! प्रमुञ्च पञ्चमं
तरुणि ! मधुरालापैस्तावं विनोदय दृष्टिभिः।
सुमुखि ! विमुखीभावं तावद्विमुञ्च न मुञ्च मां
स्वयमतिशयाह्लादो मुग्धे ! प्रियो ममुपस्थितः। (१०/१३)

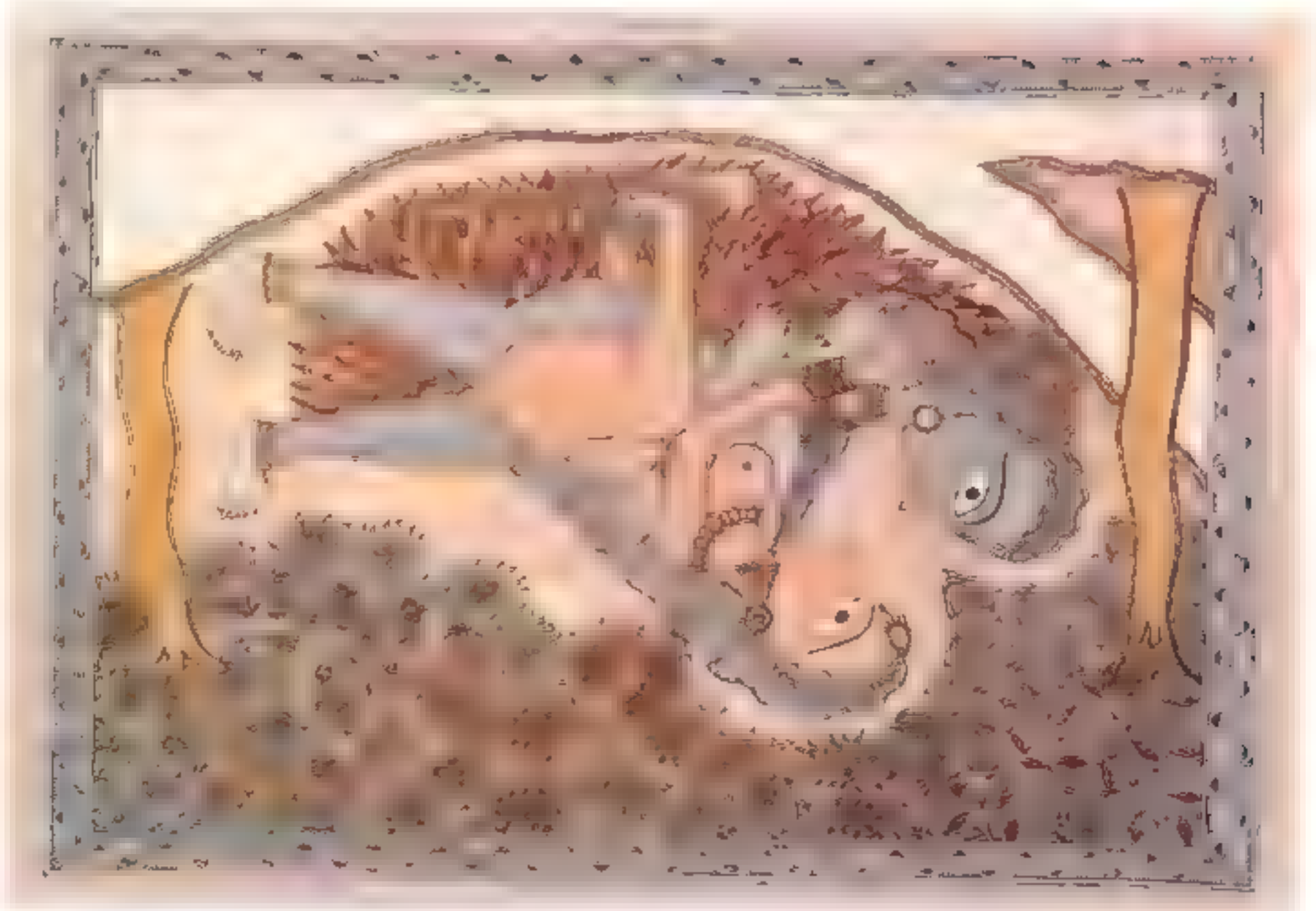

प्रिये केहन संयोग विलक्षण
एकहि ठाम सभ सुषमा,
सुखमण्डल मे बसय कहाँ के
दैं छी कहाँ अनुपमा ।
अधर लाल बन्धूक पुष्प सन
गाल गोर मह्कुआ सन,
नीलकमल सँ बेसी सुन्दर
नयन अमिय-बदुआ सन
तेहने नासिक कहि तिल फूलक
सौहक नाह विलक्षण,
कुन्द पुष्प सन दन्तावलि कहि
उज्ज्वल हुनि मुसका सन
अनेक मुखक सुषमा सँ सेहोत
पोचहु शर छनि कामक,
आकर्षण बजाकर उन्मादन
द्रवण शोषणकारक

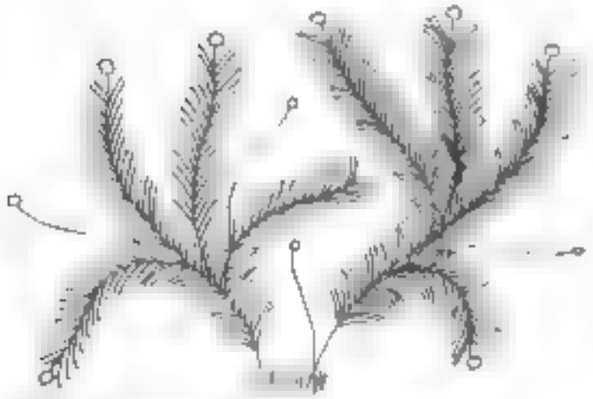

बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधर: किञ्चिद्धो मधूकच्छवि-
र्दिव्यस्यन्दि चकास्ति नीलनलिनद्वन्द्वोचनं लोचनम्
नासाऽसौ तिलप्रसूनपदवीं कुन्दाभदन्तिः प्रिये!
प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ।

(१०/१४)

हे तन्वङ्गी की रूप-युक्ती
बूझल रहस अमोघक,
अहिंक देह मे बास करइ छथि
अप्सरि सभ सुर लोकक ।
अलस नयन अप्सरि मदालसा
इन्दुमती मुख आगे,
मादक गति मे मनोरमा आ
जघने रम्भा भागे ।
हाव भाव हित हास कलामृत
तह मे बसथि कलावति,
चित्र लिखन सन भौंह मनोहर
चितलेखा सुख माबथि ।

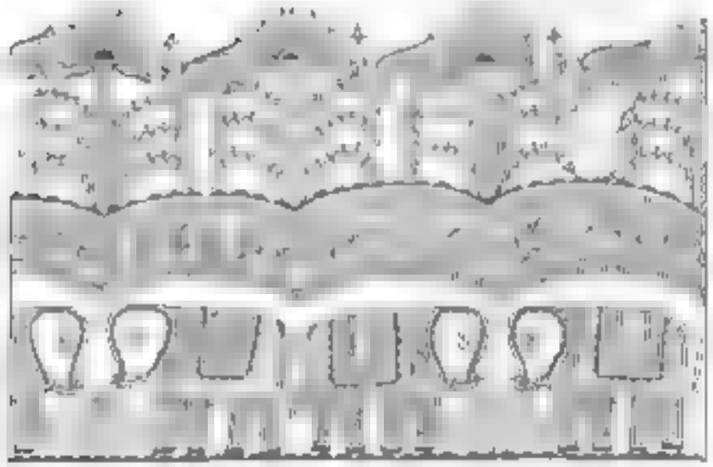

दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दु सन्दीपनं
गतिस्तेनमनोरमा विजितरम्भमूरुद्वयम्
इति त्वं कलभाषिणी रुचिरचित्रलेखे सुता
यदो विधुरयोवनं वहसि तन्वि पृथ्वीगता ।

(१०/१५)

श्रीराधा के स्तन-कुम्भक
दृश्य देखल हाथी मे,
कुवलयपीडक कुसुम कली जीं
विशद वह छाती मे।
पहिने देखि अचम्भित माधव
रुद्धारक रस उपमान,
नहुँ-नहुँ सुनगल रुधिर, देह पर
मर्दक बूनकी उमगल।
देखे पसेना हरिक देह पर
केसक जी हरहामल,
जी बुन्दलक हाथी के डर सँ
मालक जाहि मनहामल।
जोम्हर हरि रति-स्मृति-रस मे
बूडि औंसि के मूनल,
केसक बजारी हाथ मह मे
[illegible] बूनल।
[illegible]
देखल हाथी [illegible],
[illegible] मूर्छा [illegible] मतवा कोरल
[illegible] उन्मुख
लटपटाय कुवलय भू-लुण्ठित
"जितला हरि" स्वर गूँजल,
दुष्टक दलन केलनि मधुसूदन
केसक मटका फूटल।
से राधा के प्रियतम माधव
जगतक हर्ता नटानयु,
धर्म काम आ अर्थक वैभव
प्रभुक लेल लुटानयु।

सखीभिः तनुतां हरिः कुवलयापीडेन मार्गे रुषे
रुद्धाऽनेनपथि स्मरणकृत्कुसुमेन मन्मोदयन्।
अत्र स्थिरति मीलति क्षणमथ क्षिप्रं तदालोकन-
व्यामोहेन जिते जितमभूत्कंसस्य कोलाहलः॥
(१०/१६)

ग्यारहम सर्ग

सानन्ददामोदर

भीभगवान कैल बड़ अनुनय
आखिर राधा मानलि,
मनक मान्य सभ भेल तिरोहित
जैना नीन सँ जागलि,
रूखा ओठ पर स्मिति पसरल
मृग दृग लीजैं चमकल,
उठल रोम मे लहरे प्रणय के
अनघट भोकल खनकल।
माधव धीरोस निकेत शोधारल
राधा अलस मातल,
चाटी पाटी कैल सूतल मे
निकलल मन हरखायल
मुदा लाज नाहि आँचर ओढ़य
छिल अवगुंठन तानलि,
सकुचल सुमन मराहि शिरोमणि
माथे अनुरागे बाजलि।

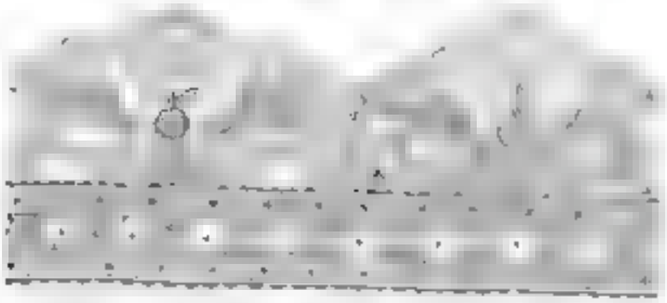

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुञ्जगेहम्।
रचितरुचिरभूषा दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुटति निरवसादो काचिदेवं जगाद॥ (११/१)

प्रबन्ध २० :

श्रीहरिलीलराजिजलधरविलसितम्

रचि रचि वचन मधुर रस-सीनल
चरण पकड़ि अनुनय मृदु शीतल
बाट तकइ छाँहे लागू,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारू

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातम्।
सम्प्रति मञ्जुलकुञ्जगतं केशवमनुगन्तुमभूयसम्॥ (११/२)

रुणुझुणु नूपुर पगोधार उमतल
मेघर गति हमक मातल मानल
नूपुर धुनि झमकारू,
मुग्धे, माधव पथ अभिसारू

कनकनिकषरुचिरे वरमुन्मादचरणविहारम्।
मुखरतमाकलयन्मणिमञ्जीरमुपैहि घेरोहि मरालनिकारम्॥ (११/३)

कृष्ण भमर गुञ्जय मनमोहक
कोकिल काम निदेशक घोषक
नाहे कमरोध विचारू,
मुग्धे, माधव पथ अभिसारू

शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरवम्।
कुसुमशरासनशासनवन्दिनि पिक निकरे भज भावम्॥ (११/४)

पवन प्रकम्पित किसलय शीतल
लता निकर हेरत करुणय
वेतस वन झटकारु,
मुग्धे, माधव पथ अभिसारु ।

अनिलतरलकिसलयनिकरेण लतानिकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् ॥
(११/५)

हर मनोहर विमल धारयुत
अमियोपेत रतनमाजय निकर
लाजक घोर पसारु,
मुग्धे, माधव पथ अभिसारु

मुहुरतिमनमुतमुखमाहित सूचितरीतिरम्यम्
मुञ्च मनोहरहारविमल जलधरमनुकूचकुम्भम् (११/६)

देह पहाँके रति कलजाल
साहे सभ जानथि सपने बुझल
मन्मथ विजय पसारु,
मुग्धे, माधव पथ अभिसारु

अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरति रतिरणसज्जम् ।
चण्डि रसेतरणनाहवाहिनि समभिसर साहसमलज्जम् ।
(११/७)

अनमिल बाण सरिसरुह-पङ्कज
मानिक हाथ धें चलु मनरञ्जन
कङ्कन धुनि पसारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु ।

स्मरशरसुभगनखेन सखीमनसम्प्रेक्ष्य कोपं मलीमसम्
चल वलयक्वणनैर्वलीमय प्रेमणे निर्भर्त्सयन्तम् ।
(११/८)

मुक्तरा हार, रमणि मैं कुसम
अवहेलक पद कोपहु सासम
प्रीतमाकेलि पसारु,
मुग्धे माधव पथ अभिसारु

श्रीजयदेवभणितमधुरीपुरहरमुदारसेतवाससम् ।
प्रमुदितमनसामधीतेऽसौ कथयति कविमाधवीरासम् ॥ (११/९)

ए सखि, एहन कतए बनु तोरे
हरि खटथे भल निराश,
निसुन निकुञ्ज निबेड़ तम बिसल
तहु ठाँ अहमल एकसर
कतेक काल सँ बाट निहारथि
किसलय सेज डसाने,
कत एकर कत ओकर ताकथि
चिन्ता माथ नवाने
कतो सँचारथि आओतो रस-नागरि
बजती किछु रस बोलेगा,
अङ्ग अङ्ग के सूनि सेटीसो
बिहु - बियोगक घोलेगा ।
सोचि सनेह रोमाञ्चक मेलाह
हारो देह पोलजल खाने
मोतीक तोड़ि चलथि न पाओ
मुरछा कुलि गेरु हराने

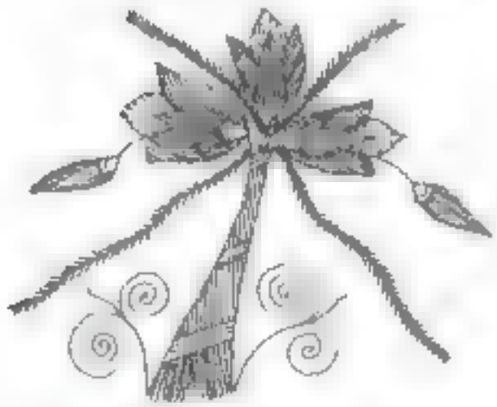

सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मरकथां प्रत्यङ्गमालिङ्गनै
र्गीतिं वास्यति हंस्यते सखि समागत्येति चिन्ताकुल
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति ध्यायति
प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रिय ।(१०/१०)

सभ सँ पैघ छिनार रसिकवा
के कहु बूझ, अन्हारे
जँ बुझिय आहे भोपल गोपल
लेकबहु करेय उघारे
जकेने अन्हार वहाँ पसरय
बाट अनकें हुअय,
रसलेलनी [illegible] पथ पर
झटपट कय बड़ाअय
जाहो [illegible] रस [illegible] तम
पाओरे [illegible],
[illegible] पाछा मे [illegible]
[illegible] अङ्ग [illegible]
[illegible] मे
[illegible]
[illegible] मे
[illegible]
[illegible] रहा [illegible]
भय सकोच [illegible] मन मे
[illegible]

अङ्गेर्निर्दयमानं मतवयोस्तापिच्छकाञ्चच्छवली
मूर्ध्नि श्यामसरोजदामकुचयो कस्तूरिकापत्रकम ।
धूर्तानामभिसारसम्भ्रमनुषां विस्रब्ध निकुञ्जे सखि
ध्वान्तं नीलनिचोलचारु मुमुषे प्रत्यङ्गमालिङ्गति ।।
(११/११)

केसर पीत-अरुण आभा सन
गौरवर्ण युवती सम,
अभिसारक पथ अगमग भुकभुक
तारावलि टँकित नभ।
अथवा नील वसन में मोहन
अभिसारिका रूपक पर
स्वर्ण रेख से कालोपेत जैं
नील कसौटी पाषा

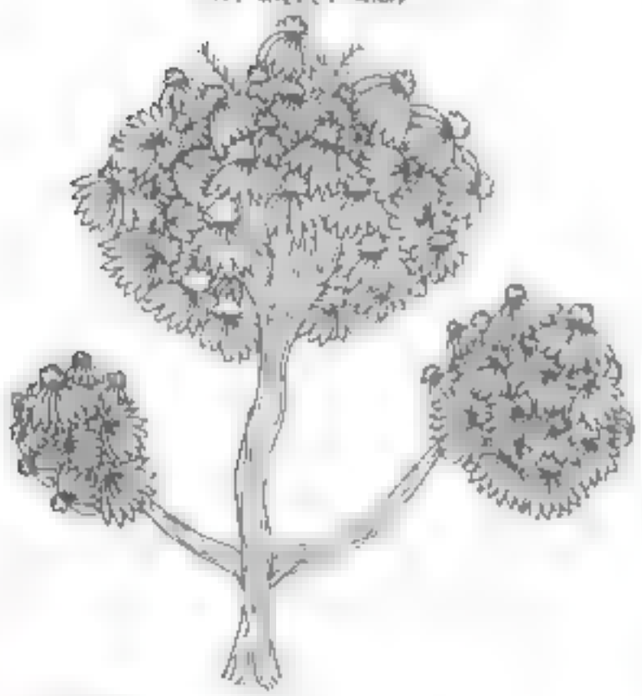

काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणां
सान्द्रोरुसान्द्रमणिनूपुरसंरवाणाम्।
श्यामालतातलनीलतमं तमस्तं
तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति। (५५/१२)

सस्मित वचन के माने प्रफुल्लित
राधा ढंग अड़ीली,
मन्द मन्द चलि किंचित रुण से
मुसुकैन हरि के कीनी
बैठक वन में लता पास सौं
कोमल नेहल मंदिर,
तह पर पाटल पुष्प सुगंधित
शुक पिक रव छन मंजिर।
द्वार आगि भगवान अग्र पर
मुसुकी किंचित्कर्ण सेहल,
मालिक माल कुण्डल कङ्कन सौं
आलोकित पथ शेहक
मिलत नयन सौं नयन नरासक
आयत पालिक फूटल
लाजे मोसि कपोल मालिनी
शेहक तेजी छूटल

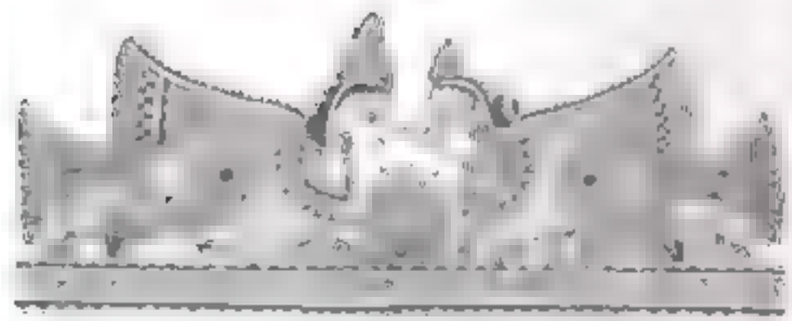

द्वारावलीतालकङ्कणकाञ्चिदाम
केयूरकङ्कणमणिनूपुरदीपितस्य
द्वारे निकुञ्जनिलयस्य हरे निरीक्ष्य
व्रीडाकलोमस महोमिवभेत्युताच्य। (५५/१३)

प्रबन्ध २१ :

तमकलि देखि सखी हि बाजलि
उमतल मन झोलल रस-बोकहि
सुख पूर्वक निशि काटू ।
पड़सू माधव सह सांटे भड़सू

मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने ।
विलस रतिरभसहसितवदने ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१४)

नव अशोकदल सेज सुसज्जित
सहिज लेल कोमलि हरि अपनि
स्तन-हार सम्हारू ।
पड़सू ! माधव सह सटि भड़सू !

नवभवदशोकदलकल्पितशयनमारे ।
विलस कुचकलशतरलहारे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१५)

कमल कुसुम कमनीय देह के
कुसुम सेज पर राखि नेह के
मन भरि निशि भरि विलसू ।
पड़सू ! माधव सह सटि भड़सू

कुसुमचयरचितशुचिसुखेहे ।
विलस कुसुमसुकुमारदेहे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह (११/१६)

काम बाण सँ हहरल राधे !
सुरभित मलय समीरक साधे
निधुवन के रस भरसू ।
पड़सू ! माधव सह सटि भड़सू

मृदुचलमलयजपवनसुरभिशीते ।
विलस मदनशरनिकरभीते ।
प्रविश राधे माधवसमीपमिह ।। (११/१७)

रसक थस्ह सन जघन अलस काछे
नखल पात सँ भवन बनल आछे
शोभे वसन धारे रंगेलसू ।
पड़सू माधव सह सटि भड़सू

विलसदङ्गुलिनखपल्लवचने ।
विलस विलासमनसीनयने
प्रविश राधे माधवसमीपमिह (११/१८)

कामकेलि के परम प्रतीके
मत भ्रमरा गुञ्जार मोरके
कोहर मेरसलसलसू
पड़सू माधव सह सटि भड़सू

मधुमुदितमधुकुलकलितरावे ।
विलस कुसुमशरसमभावे ।
प्रविश राधे माधवसमीपमिह । (११/१९)

दुरन्त कान्ति मन माणे हुले शोभित
केलि भवन कोकिल कल कूजित
तव हौं मदन ज्वाधू,
पड़सू माधव सह साटे बड़सू

मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे ।
विलस दशनरुचिरुचिरपटीरे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपम् ॥ (११/२०)

पद्मावति हित स्थल प्रसादक
भोग लगावति हँसि हँसि माधव,
कृपा- जलद बोले बरसू,
पड़सू माधव सह साटे बड़सू ।

विहितपद्मावतीसुखसमाजे
कुरु सुरारे ! मङ्गलशतानि ।
भणति जयदेवकविराजराजे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपम् ॥ (११/२१)

कतेक बुझाओ हे मन मे पेशल
बाध अशोक हरे मन मे टीकल,
विरह निदाघ पसारिक बाहल
श्रीभगवान भेला सुखकायल ।

कामक चाप मन्तपत करइ छानि
राहु रोक मदनक बाण कुबइ छानि,
कोना शान्त भरथा तन मनके
लेकर मे कलिओ बाट भेल छानि

की चाहथि अधरक रस पीबी
कुहेकि किसलय धारण बीन जोड़ी,
चरण अशोक मांगे आनेओ
नख सट भमरा भूख पाबी

ताही हुनक बुझ मेरि मनइ छो
विरह मे जमरित फेरि मनइ छो,
हेरेक सह भुलेल कथी के ?
अंधासन पर बैसे सकइ छी ।

त्वां चिरेन चिरं वहन्नमतिमान्तो भृशं तापितो
कन्दर्पेण च पातुमिच्छति सुधासम्बाधबिम्बाधरम्
मुग्धाक्षि तदलं कुरु प्रणमतः प्रौढ़ीपलक्ष्मीलव
क्रीते दास इवोपसेवितपदाम्भोजे कुतः सम्भ्रमः ? (११/२२)

अद्भुत कुसुमवन सुखदायक
ऋतु वसन्त तह पर अति भावक,
विरह दशा कैं निहु छि विरा दै
पैसालि राधा गेह सुठामक ।
नयन पक्ल नवनक मृदु भावा
हुह आवि पनगल आमेलाख,
मन मयूर वनप्रधाम निरेखल
नूपुर कंकल प्रेम - परिभाषा ।

सा वसाद्यवसमानन्दं गोविन्दे लोलयोचना ।
स्विन्नानमालुमखीरं प्रावेशाभिवेशानम् । (११/२३)

राधा वदन विलोकि फुलायल
मन उपवन मधुप कै,
विविध भाव तरङ्गल मानस मे
सिन्धु निरेखल शशिके।
निकटक कुसुम निपट प्रकटक
हरि हृदया रोतमा
बीगुथ दोखे परम कलकेला
मन मे उछलल मधु

प्रबन्ध २२ :
सानन्दगोविन्दरागश्रेणिकुसुमाभरणम्

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलितुङ्गतरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम्
सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनङ्गनिवासम् ॥ (११/२४)

हरिक वक्ष पर सुज्जल माला
पुनि-पुनि हृदि कालिङ्गय,
नील नीर यमुना मे फेनक
माला अन्त-लत भासय ।

कामममलतरलायमुरसि वधतं परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदम्बकरम्बितमिव यमुनाजलपूरम् ॥
(११/२५)

नील कमल मे जैसन सनावल
भमरो पीत पलाशे,
तहिना धोती पीत पटम्बर
श्याम देह शुभिलाशे ।
श्याम शान्त पद्मासन भूमि कै
चांदनमू रमिरहे,
श्याम-गोह अद्भुत छवि पाओल
अमरू परम उमड़े ।

श्यामलमृदुलकलेवरमण्डलमधिगतगौरदुकूलम्
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलवलयितमूलम् (११/२६)

नयन सुचञ्चल हरि मुख पेखल
बाढ़ जैना होने रागक,
सघन नयन रूप रस मातल
कमल फुलायल शरदक

तरलदृगञ्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् । (११/२७)

श्रीभगवानक कानक कुण्डल
रहि-रहि गाल छुबइ छनि,
कमल नयन परिशीलन भाबें
हू टा सूर्य घुमइ छनि ।
कुण्डल सँ चिटकय सतरङ्गी
द्युति सँ तोर रुकल छनि,
हँसि भेली राधा हाथ रञ्जित
मन उद्वेग बढ़ल छनि ।

नयनकमलपरिशीलनमिलितमिव हसमनुकृतवतोऽभ्यम् ।
स्मितकचिरुचिरमुज्ज्वलितमधरपल्लवकृतपल्लवम् ।
(११/२८)

श्रीभगवानक कच कुन्तल मे
फूल तेना शोभइ छनि
लगय जेना दुगमल बादल मे
चान नुकाय ईसइ छनि ।
तीन्ना श्याम बदन पर चानन
तिलक तेना शोभइ छनि,
तिमिरावृत नभ मे जे छिकसिक
पूर्णचन्द्र जिहुँसइ छनि

शिखिकिरणचन्द्रचन्द्रिकाजलधरसुन्दरसकुसुमकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ।
(११/२९)

श्रीमाधव के गात प्रफल्लित
रोमाञ्चित रति मन्दित,
तइ पर मणि-आभा पसरल अछि
सुषमा वैभव- मण्डित ।

विपुलपुलकभरवन्तुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ।
(११/३०)

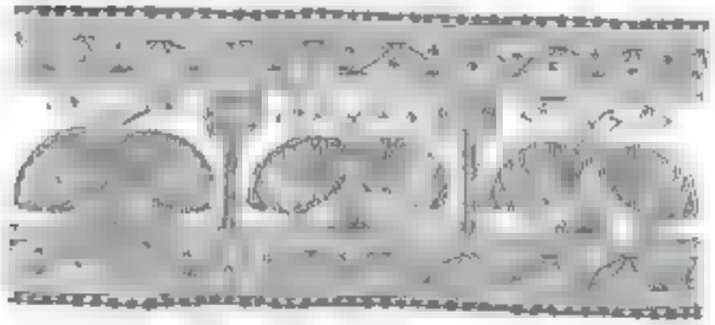

श्रीजयदेवक गीतक युग्मे
सुखमा दुगुन बढ़ल छनि,
तइ माधव के प्रणमधु पाठक
महिमा जिनक जगत छनि

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतीवरसारम् ॥
(११/३१)

हरिक नयन कटाक्षपात कै,
राइक कठिन विचारल ,
कैह सोचि राधा दृग-अंचल
श्रवण क्षेत्र धरि नमरल ,
लाम बाट पर चलिते-चलिते
जहिना पथिक थकइ छथि,
तहिना नयन पसेना बोरल
आनन्दाश्रु सुबइ छथि ।

अतिक्रम्यापाङ्गं श्रवणपथपर्यन्तगमन -
प्रयासेनेवाक्षोभ-तरलतरलाः शमितयो ।
इदानीं राधाया प्रियतमसमायातसमये
पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रु नयनैः ॥ (१५/३२)

मैत्र मासोक पुनरपि मीरधा
लाजलगा माधव अगाल
कयो कुरुकेशपात कान निकालली
नयो जनि मुखको पखाले ।
पोछे एकान्त तकान मीरधा
माधव- मुख पर नाकलि ,
नयान नयान सँ गरल घोर हहि
सुधे बुधे जेना हरपाल
लज्जुक हालने देखि लाजहुक
भरेमा लाज पड़ायल ,
फूल पात सभ लाजें मिझुयल
विरह-व्यथा अनु हारल ।

भजन्त्याकृतलपान्त कृतकपटकण्डूतिविहित
स्मिते याते गेहादबहिरवहितालीपरिजने
प्रियास्यं पश्यन्त्या स्मरपरवशाकूतमुभगं
सलज्जा लज्जायि व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ॥ (१५/३३)

शिरिष कुसुम सन कोमल राधा
माधव नेहुँ अँकवारल ,
सटल बाह सँ वह पिआसल
राधा- माधव मातल ।
पीन पयोधर तिरख नीक भल
माधव मने विचारल ,
पीठ देदि बाहर निकलत की ?
माथ घुमा कै ताकल ।

सानन्दं नन्दसूनुर्विगलदमितरसं सम्मदं मन्दमन्दं ।
राधामाधाय बाहुद्वयविरमनु दृढं पीडयन्प्रीतिभागात
तस्थौ तस्या ओजावतनु वसनेनार्द्रगात्रौ मा स्म भूतां
पूर्वं निर्भिद्य तस्माद्बहिरति ललितग्रीवमालोकयन्त्र ॥
(१५/३४)

भारि दैत्य मुरजित जनि माधव
प्रबल भुजा कै बल सँ
केसक कुवलय हाथी मरल
खेल- खेल मे झट सँ ।
हाथिक माथा फूटल भहाभह सौ
रुधिरक उठल फोहारा ,
हरिक भुजा पर छिटका पसरल
सिन्दूरक सनहारा ।
विजयलक्ष्मी दौरि डोलमाँझे
फुलाय पुष्प सन्हारे ,
ताहि भुजाके जय हो जय हो
भक्तक बल आधारे ।

जयश्रीविन्यस्तैर्मुहित इव मन्दारकुसुमैः
स्वयं सिन्दूरेण द्विपघटमुरा मुद्रित इव ।
भुजापीडक्रीडाकृतकुवलयापीडकरिणः
प्रकोष्ठो मुरारेर्विजयति भुजदण्डो मुरजित ॥ (१५/३५)

श्रीराधा सुषमा निधान
रति समान सुन्दरि छाति,
कामदेव के क्रीड़ा स्थल
आनन्दक दाता छाथि।
वक्षस्थल छनि दिव्य सरोवर
स्तन दुनू कमल छनि,
राजहंस जनि नत माधव के
चुम्बक नीक लगइ छनि,
राधा माधव के छथि रूपक
जेकरो ध्यान कइ छथि
तिनकर मङ्गल करथि मुरारि
हुम-हुम सतत करइ छथि।

सौन्दर्यैकनिधेरनङ्गरमणालावण्यलीलाजुषो
राधाया हृदि पल्लवे मनोरञ्जनक्रीडैकमुद्रस्थले।
रम्यारोजसरोजखेलनहंसिच्छायात्मनः कायपथ
न्यस्तामीनसराजहंसमिथुनं देयान्मुकुन्दो मुदम् ।(११/३६)

बारहम सर्ग

सुप्रीतपीताम्बर

सहचरि चलल सखि-वृन्द
जोह दुहु कुञ्ज-भवन मे,
जुहचयु विकल परान
मगन मन रङ्ग-रमण मे।
राधा छाथि मलज्ज
नयन अनुरागे रञ्जित,
नीह नहि मुख पर भाव
हृदय आनन्द पुलकायित।
मोन कुधर पर हास
मेल दिस आलक लाकाथि,
बूझ नयनक रति भाव
लखन होय सादर अजलाथि।

गतवति सखीवृन्दे मन्दत्रपाभरनिर्भरं
स्मरपरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपितोधरम्।
सरभसमसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव
प्रसवशयने निःसीप्तोमुवाच हरिः प्रियाम्।
(१२/१)

प्रबन्ध २३ : मधुरिपुमोदविद्याधरलीला

किसलय-सेज धरू पद कामिनि
चरण-नलिन सुकुमारे,
मर्दन करू पद पल्लव ऐसेक
उपजेओ राग मुख सारे,
कुसुम वन मधुमय क्षण ऐसन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण।

किसलयशयने धृते कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम्।
तव पदपल्लवरेणुसखीमदमनुभवतु सुखेशम्।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधके
(१२/२)

राधक धाकल चरण अहाँके
लाय करने हम दासी,
नूपुर बन मेही बनि हमहूँ
लागलि प्रिय के पासी,
विरह विषाद दहक नहि जानल,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण

कारकमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरम्।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम्।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधके
(१२/३)

शशिमुख सँ अमृतमय बोलक
निर्झर अहाँ बहाबी,
मिलन-विरोधी वसन वक्ष सँ
हमहूँ टारि हँसावी।
विरह निदाघक हेतु समापन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण।

वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम्।
विरहमिवापनयामि पयोधरयोरधिकमूलम् कुरु केलिम्।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधके
(१२/४)

अवतरित कलस पयोधर पुरहर
रोमाञ्चित उल्लसित,
परिरम्भन आसे समतायल
कलाके उहल अँ हलैत।
कृपामयि करू सुधा निधि अर्पण,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण

प्रियपरिरम्भणरभसजितमेव पुलकितमतिदुरापम्।
मदुरसि कुचकलशं वैनिवेशय शोषय मनसिजतापम्।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधके
(१२/५)

हे भामिनि की कहू दशा हम
विरहानल के मारल,
अधरसुत के पान कराबी
एखनहिं ले जी टारल ।
मेरल दासक मृत्यु हुताशन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण

अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम ।
त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/६)

हे शशिमुखि वचन भेल लगकू
ईककम हो मनछाले
धनबान भुलि सन कयक स्व हो
भ्रांते तिरपेत हो बोले
शमन हो विरह दुक अवसादन,
मानिनि अनुसर तुअ नारायण ।

शशिमुखि मुखरय मणिरशनागुणमनुगुणकणनिनादम ।
श्रुतियुगले पिकरुतविकले मम शमय चिरादवसादम ।।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/७)

व्यर्थहि कैलहुँ मान अनेरो
बाजय नयनक भाषा,
दारुण विरह बेसाहि रमाकोल
प्रेमक हम अभिलाषा ।
आकुल कुल रतिक प्रतिपादन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण

मानिनि विफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
लज्जितमिव नयनं तव विरमति सुजसंवृत्या रतिखेदम् ।।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/८)

श्रीजयदेव भनथि भगवानक
प्रणय विनोदक लीला,
भक्त जनक जीवन मुखरित हो
रसमय काव्यक क्रीड़ा ।

श्रीजयदेवभणितमिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम
जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम ।
(१२/९)

ओ हम आजि तुलायल नहुँ - नहुँ
राधा शय्या चढ़ली,
कोल पड़ै नहि उच्छ्वास सँ
श्यामे सगर नहयली।
तहिना माधव अस्त-व्यस्त मन
अपनहि मे कोमरायल,
जेना चन्द्रिका मूतल भू पर
चान कतहु भुतिआयल।
तन वा मन किछु थीर नै कनिओ
चञ्चल दृग अनायल,
देखी प्रिय के मन भरि छौंक
पल पल पलक झँपायल
अति पुलकित गातक पोरमनन
आन्हर कोठन लगै छल,
अधराधर के पान काज त'
माजल कोठन लगै छल
की छौंडल को करब काठन छल
काम - होते अनुसार,
सहज भेल किछु तेहने कौंचक
बुझू होते व्यवहारे।

प्रव्यूढ पुलकाङ्कुरेण निविडप्रलेषे प्रियेणेव च
क्रीडाकूतविलोकितेन धरसुधायाने कटाक्षेमिः।
आनन्दाधिगमेन मन्मथकलायुद्धे यि यस्मिन्नभू-
दुद्भूत स तथाभिभूय सुरतारम्भः प्रियं भावुकः॥
(१२/१०)

विरह वीरे के होय पराभव
राधा मने सैपरली,
वीर वेश रति-रण करबा लेँ
मधुसूदन पर चढ़ली।
पोहनि हरि के बान्हे भुजा मे
बोहे आ रतिक बेनाजी,
अधर अधर पर रति-चषक सँ
भरि - भरि समदा हुलली।
तमन दशन आघात नखक्षत
पृथुल नितम्बे मर्दन,
कुन्तल पकडि समारल गति के
डँडकस दुन्दुभि गुञ्जन।
अनन अनन झम-झम सम्बरसै
हारे आनन्दे भोजाथ,
कामक गति-रथ टेढ़ चढ़ल काछे
माधव मन मे बुझाय।

दोर्भ्यां संयमित पयोधरभरेणापीडिते पाणिजै-
रालग्ने दशने क्षताधरपुटे श्रोणीतटेनाहते।
हस्तेनानमित कचे धरमधुस्यन्देन संमोहिते
कान्ते कामयि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामा गतिः।
(१२/११)

सहसा चालक वेग मन्द भेल
नूपुर के धुनि ठमकल,
ध्वंसक-सम टूटल विजयानके,
देह दण्ड सन पसरल ।
अंचा शिथिल वाह अवनत सन
बाँहेक बन्धन छूटल,
मौलिक माल दहादिस छिटकल
डोलक डुंडकस टूटल ।
असीमकित भै पनटलि राधा
सह नाहे बाँहे मुनयल,
रति-विपरीतक समर शिथिल
माधव के मन हरखल ।

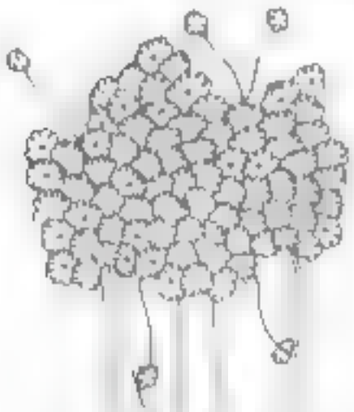

मारुते रतिकेलिसङ्कुलरणारम्भे तथा साक्रमं
प्रार्थ्य कान्तकरायाय किञ्चिदुपरि प्रासङ्गि यत्सम्भ्रमात् ।
निष्पन्दा जघनस्थली शिथिलता बंधेक्षिरुत्कम्पितं
वक्षो मीलितमक्षि पीडरसस्य स्त्रीणां कुतः सिध्यति ॥
(१२/१२)

अति घनघोर समर रति द्वन्द्वक
विरमि शयन सुख निद्रा,
राधा वसुधि पहन अनाकुल
नयन निमीलित तन्द्रा
देखल शेष प्रातहि हरि-हृदयक
राधा सेन पर मोजहल
भङ्ग अङ्ग में पसीनाक के
सोत जेना हो रोपल ।
नख-क्षत के लाली अनुरञ्जित
स्तन पलास पयोधर,
जनु फुलायल कमल सरोरुह में
बन्धु जीव मधुमाधर,
देखी पुष्प माल्यो पहिरल
मनमथ के मधुके मादक,
गोर गात रत रस चम्पा सन
सभ मिलि भेल उन्मादक ।
किन्तु क्षण हर देखते रहि गेला
रूप अनूप अपारक,
उठल हृदय में लहरि अगाधे
अद्भुत काम विकारक ।

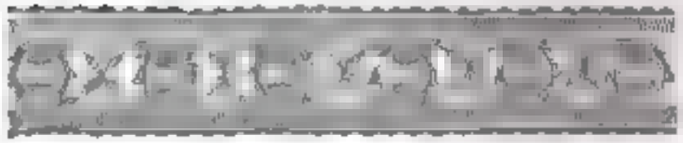

तस्या माटलपाणिजाङ्घितमुरौ निद्राकषाये दृशौ
निर्धौताधरशोणिमा विलुलितस्रग्दाम जो मूर्धजा
काञ्चीदाम दरस्खलद्वलयिते प्रातर्निखातैर्दृशा-
रेभि कामशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्मनः कीलितम् ।
(१२/१३)

प्रातक प्रणय अनङ्गक मोचल
अमोघाकृत भै राधा,
बिथरि सेज पर एकर अम्बर
नयन भेपायल आधा
उजरल-पुजरल केसक सज्जा
गालक बाम सुखायल,
अधरक लाली भेल तिरोहित
वक्षक कान्ति नुकायल ।
माधव कखनो रूप निहारथि
कखनो देह हेरैतथि,
कखनो उकठकाठि नहँस सँ
कोमल भिड़ुआ काटथि ।
गुदगुदीक सिहरन सँ राधा
लोटपोट भै पसरथि,
कखनो भँभसिकाक हाथ सँ
कखनो जघन नुकाबथि

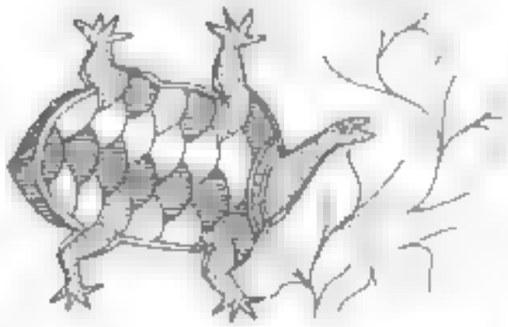

व्याकोषः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदमोषी कपोलौ
क्लिष्टा प्रेम्णाधरश्री कुचकलशरुचा हारिणा हारयष्टिः ।
काञ्चीकान्तिर्हृताशा स्रगजघनपदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यन्ती सव्रपा सा तदपि विलुलिता मुग्धकान्तार्धनोति ॥
(१२/१४)

सुरति क्रिया सँ श्रान्त राधिके
आनन्दे अलसैली,
मृगनयनी के पाल फुजै नहि
निष्पन्देत भै पड़ली ।
रतिकालक आकुल सित्कारे
अधर प्रवेत पणाहो,
एहन दृश्य देखाथे अङ्गभाबी
हरि सेवक रसरङ्गे ।

कृष्णमीलितदृष्टिं मुग्धविलसत्प्रोत्फुल्लराधामुखं
दत्तस्वस्तनकुड्मलं कनकपुष्पेकमङ्गुलीशुभ्रीताधरम् ।
शान्तस्वेदपयोधरं भगपीठस्थूलकर्णेमुखं
हर्षोत्कर्षरसमुक्तनीव्रमहं नाथेन्द्रयो ध्यायत्यानन्दम् ।
१८/५

किछु कालक पश्चात स्वस्थ-मन राधा भेली
देखि मुदित सानन्द तखन हँसि हरि सँ कहलनि ।

अथ सहसा सुप्ते मुग्धान्ते सा निशान्तशिथिलाङ्गी ।
राधा भगवद सादरमिदमानन्देन गोविन्दम् ॥
(१२/१६)

प्रबन्ध २४ : सुप्रीतपीताम्बरस्तालश्रेणिः

कह यदुनन्दन ! चलन सँ बढ़ि
शीतल कोमल कर सँ,
काम-कलश वक्षस्थल ऊपरि
नव पल्लव मृगमद सँ।
सेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन !

कह यदुनन्दन ! चन्दनशिशिरतरुणकिरणपयोधरे।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमङ्गलकलशसहोदरे॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने।
(१३/१६)

ए प्रिय ! चुम्बन सँ भेभरीलहुँ
औखिक काजर ऐसनँ,
काढ़ फेर काम-शर तिक्खर
गाढ़ कालिमा जैसन।
अलिकुल लाजे भरे आवासन,
सेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन !

अलिकुलगञ्जनके इतिनायकसायकमोचने।
त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जल तुज्जवलय प्रिय लोचने॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने।
(१२/१२)

नयन-कुरङ्गक भौरो जैसन
कुण्डल कान सजाओ,
ए शुभवेश अनङ्ग सहायक
पाश मोहनक पाओ
जन जन देखे हेय सम्मोहन,
खेलू, हरखि पुलकि यदुनन्दन

नयनकुरङ्गतारुणिकामनिशाकरे मुखिमण्डले
मनसिजपाशविलासकरौ शुभवेश निवेशय कुण्डले॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने
(१२/१६)

कमलहुँ सँ बढ़ि उज्जवल मोदक
मुख पर काम समाङ
लगै जेना भौंरा बुझल हो
ताहूना लटर मकराक
मुख मे लाभ करी जँ सहजन,
खेलू, हरखि पुलकि यदुनन्दन

भ्रमरचय इवायतमुष्टि रुचिरे मुखिरे मम सम्मुखे,
जितकमले विमले पीवरकठिन नर्मनमकमलके मुखे
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने
(१२/२०)

ए कमलानन ! आम सुखायल
हमर लिलाटक ऊपर,
कस्तूरी सँ तिलक लगै जौ
मृगलाञ्छन शशि ऊपर !
भालक छवि लागय से मनमन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन !

मृगमदरसवलिते अलिते कुरु तिलकमालेकलङ्कनीयके
शिशुकलङ्ककले कमलानने विशमेतदमशशिके
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने,
(१२/२१)

कामक कवच मे चमोरक दुहि सन
मोर पीअर मे सुन्दर,
रतिक्रीड़ा मे जेम सजाओ जेना
फूल सजाउ मनोहर।
मानव ! झारि-झकरि जुड़ी सन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन !

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद ! मनसि नद्यकजचामरे
रतिजलिते ललिते कुसुमाने शेखरकेशेखरकदामरे
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने ।
(१२/२२)

हे हरि ! सघन जघन करि - कामक
वास - गुफा कें कर सौं,
साजु रुचिर मने कर - कमलें
मणि - माणिक्य वसन सौं ।
कटि मे बान्ह रत्नाभूषण,
खेलू, हरखि - पुलकि यदुनन्दन !

सरसघने जघने मम शम्बरदारणवारणकन्दरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि गुणाशय !वासय सुन्दरे ।।
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने !
(१२/२३)

श्रीजयदेव कैल पद - रचना
कलि - ज्वर ताप जिनाशय,
श्रीहरि - चरण पियूष - प्रसादें
जगत परम सुख पावय ।
सदय मण्डन - पद सुनु मधुसूदन,
खेलू, हरखि - पुलकि यदुनन्दन !

श्रीजयदेवकवेरिह रुचिरे सदयं हृदयं कुरु मण्डने ।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ।।
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने !
(१२/२४)

ए हरि! घोरि सरस कस्तूरी
चटकदार मसि लबितहुँ,
आङुर के पिहुला सँ नहुँ-नहुँ
चित्र अङ्ग पर रचितहुँ।
छोट पुरैनिक पात भाल पर
प्रियवर रुचिर बनबितहुँ,
जघन सँ ऊपरि मणिमय नाछी
रेसम ताग लगबितहुँ।
पुष्प-माल सँ वेणी सजितहुँ
कङ्कन हाथ पहिरितहुँ,
मणिनूपुर कें पाँहरि पएर में
भमकि बाट पर चलितहुँ।
राधा के अभिलाषा-वचन सुनि
माधव हरखि पुरौलनि,
निरखि परस्पर मुदित युगल-छवि
प्रेमक धार बहौलनि।

रचय कुचयोश्चित्रं पत्रं कुरुष्व कपोलयो-
र्घटय जघने काञ्चीं मुग्धप्रजां कबरीभरम्।
कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे मणिनूपुरा
विति निगदितः प्रीतः पीताम्बरोऽपि तथाकरोत्॥

(१२/२४)

गीतगोविन्दक काव्य कलायुत
विधुजन परखि बताबथि,
विविध विधा के सङ्गम एहि मे
श्रीहरि स्वयं सुनाबथि।
सङ्गीतक गन्धर्व-कला एहि
काव्यक चरण-चरण मे,
श्रीभगवानक वैष्णव-चिन्तन
दिव्य प्रेम-दर्शन मे।
शृङ्गारक तात्विक अनुशीलन
पुरुष-प्रकृति के लीला,
पण्डित कवि जयदेव सुनीलनि
कृष्ण-चरित गुण-शीला।

वाक्सन्धर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च सद्वर्णने
वाच्यश्रृङ्गारविवेकतत्त्वरचनाकाव्येषु लीलायितम्।
तत्सर्वं जयदेवपण्डितकवेः कृष्णैकतानात्मनः
सानन्दाः परिशोधयन्तु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः॥

(१२/२५)

भोजदेव-रमा देवी सुत
श्रीजयदेवक रचना,
अमर सखी आ बनल रही नित
भगवद्भक्तक गहना।

श्रीभोजदेवप्रभवस्य रमादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य।
पराशरादिप्रियवर्गकण्ठे श्रीगीतगोविन्दकवित्वमस्तु॥

(१२/२६)

राधिकाला
9-12-2009

[illegible]
[illegible] अगस्त, २००[illegible]

रचनाकारद्वयक प्रकाशित पुस्तक

1. माछ-भात
2. मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-1
3. मिथिला चित्र प्रवेशिका, भाग 1-2
4. मिथिला चित्र-कोर, भाग-3
5. मेघदूत
6. मैथिली गीतगोविन्द।

पुस्तक प्राप्तिक स्थान

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय,
दरभंगा, मिथिला-846001
सम्पर्क: (मो.) 9931665939
ईमेल: kashyapkk2000@yahoo.co.in
mithilauniversity@gmail.com

प्रकाशक

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय,
दरभंगा, मिथिला-846001

[illegible]

राजकृष्णन साज बाबा
सम्पादक, कलांगुरु, कोलकाता।